हिन्दी दैनिक

# प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची • मंगलवार • 14.10.2025 • वर्ष : 16 • अंक : 80 • पृष्ठ : 12 • आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

## एक नजर

### कैबिनेट की बैठक आज

**रांची :** सीएम हेमन्त सोरेन की अध्यक्षता में अब 14 अक्टूबर को कैबिनेट की बैठक होगी। बैठक अपराह्न तीन बजे से प्रोजेक्ट भवन में शुरू होगी। यह जानकारी मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (समन्वय) ने दी है। पहले यह बैठक 16 अक्तूबर को होने वाली थी। जानकारी के अनुसार, कैबिनेट की बैठक में कई अहम निर्णय लिए जाने की संभावना है। नगर निकाय चुनाव, राज्यकर्मियों के महंगाई भत्ता सहित अन्य विभाग के कई प्रस्तावों पर मंजूरी मिल सकती है।

### भारत में रिटेल महंगाई घटी, जून 2017 के बाद सबसे कम

**नयी दिल्ली :** भारत में रिटेल महंगाई सितंबर 2025 में 1.54 प्रतिशत पर आ गई है, जो जून 2017 के बाद सबसे कम स्तर है। अगस्त में यह 2.07 प्रतिशत थी। यह आंकड़ा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी किया गया है। महंगाई में यह गिरावट मुख्य रूप से विभिन्न खाद्य वस्तुओं की कीमतों में कमी के कारण आई है, जिससे उपभोक्ताओं पर कीमतों का दबाव कम हुआ है। खाद्य महंगाई, जिसे कंज्यूमर फूड प्राइस इंडेक्सके माध्यम से मापा जाता है, सितंबर में 2.28 प्रतिशत दर्ज की गई। इसका मतलब है कि पिछले साल की तुलना में खाद्य वस्तुओं की कीमतें गिर गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य महंगाई 2.17 प्रतिशत रही, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह थोड़ी और कम होकर 2.47 प्रतिशत रही।

### ईडी ने कफ सिरप मौत मामले में श्रीसन फार्मा के सात ठिकानों पर की छापेमारी

**चेन्नई :** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कफ सिरप से हुईं मौतों से जुड़े मामले में सोमवार को श्रीसन फार्मा के चेन्नई स्थित ठिकानों और तमिलनाडु ड्रग कंट्रोल विभाग के अधिकारियों के ठिकानों पर छापेमारी की है। केंद्रीय जांच एजेंसी ने यह छापेमारी धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (पीएमएलए) के तहत की है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि ईडी ने जिन ठिकानों पर छापेमारी की है, उनमें तमिलनाडु औषधि नियंत्रण कार्यालय (ड्रग कंट्रोल विभाग) के शीर्ष अधिकारियों के आवास भी शामिल हैं।

# आईआरसीटीसी घोटाले में लालू, राबड़ी व तेजस्वी यादव के खिलाफ आरोप तय

एजेंसी

**नयी दिल्ली :** दिल्ली की एक अदालत ने सोमवार को कथित आईआरसीटीसी घोटाला मामले में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद, बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और उनके बेटे व राज्य में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव के खिलाफ आरोप तय किए। इसके साथ ही बिहार में चुनाव से पहले उनके खिलाफ मुकदमे की तैयारी शुरू हो गई है। बता दें कि विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने इस मामले में राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव के खिलाफ आपराधिक साजिश और धोखाधड़ी के साझा आरोप तय किए। यह मामला भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) के दो होटलों के संचालन के ठेके एक निजी कंपनी को देने में कथित अनियमितताओं से जुड़ा है। अदालत ने लालू प्रसाद के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत आरोप तय किए।

लालू ने आरोपों से इनकार किया है। मामले में विस्तृत आदेश का इंतजार है। इससे पहले गत 24 सितंबर को अदालत ने आरोप तय करने के अपने आदेश के लिए सभी आरोपियों को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया था। सीबीआई के आरोपपत्र के अनुसार, 2004 और 2014 के बीच कथित तौर पर एक साजिश रची गई थी जिसके तहत पुरी और रांची स्थित भारतीय रेलवे के बीएनआर होटलों को पहले आईआरसीटीसी को हस्तांतरित किया गया और बाद में, इनके संचालन, रखरखाव और देखभाल के लिए, बिहार के पटना स्थित सुजाता होटल्स प्राइवेट लिमिटेड को पट्टे पर दे दिया गया। एजेंसी ने आरोप लगाया कि निविदा प्रक्रिया में धांधली और हेराफेरी की गई और निजी संस्था सुजाता होटल्स की मदद के लिए शर्तों में फेरबदल किया गया। आरोपपत्र में आईआरसीटीसी के समूह महाप्रबंधक रहे वी के अस्थाना और आर के गोयल, और सुजाता होटल्स के निदेशक और चाणक्य होटल के मालिक विजय कोचर तथा विनय कोचर के भी नाम हैं। डिलाइट मार्केटिंग कंपनी, जिसे अब लारा प्रोजेक्ट्स के नाम से जाना जाता है, और सुजाता होटल्स प्राइवेट लिमिटेड को भी आरोपपत्र में आरोपी कंपनियों के रूप में नामित किया गया है।

## कोर्ट के फैसले पर तेजस्वी बोले- हम भाजपा से लड़ेंगे

**नयी दिल्ली :** बिहार चुनाव के बीच आईआरसीटीसी घोटाले में दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट के आदेश को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेता तेजस्वी यादव ने बिहार चुनाव से पहले पार्टी पर हमला बताया है। इस पर पूर्व केंद्रीय विधि मंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने तेजस्वी से पूछा कि वह बिहार बदलने का वादा करते हैं, लेकिन आईपीसी की धारा 420 उन पर लगी है। उसके साथ वह कैसे बिहार बदलेंगे। तेजस्वी ने यहां पत्रकारों से कहा कि हम तो पहले ही कई दिनों से कह रहे थे कि अब चुनाव आया है तो इस तरह की चीजें होंगी। हम मुकदमे का सामना करेंगे। तूफानों से लड़ने में मजा ही कुछ और है। हमने हमेशा संघर्ष के पथ को चुना है। हम अच्छे मुसाफिर भी बनेंगे और मंजिल पर भी पहुंचेंगे। बिहार की जनता समझदार है। वह सब जानती है कि क्या हो रहा है। जिस व्यक्ति (लालू यादव) ने 90 हजार करोड़ रुपये का मुनाफा रेलवे को दिया, हर बजट में किराया कम किया, ऐतिहासिक रेल मंत्री के रूप में जाने गए, तो बिहार के लोग जानते हैं, देश के लोग जानते हैं कि सच्चाई क्या है। जब तक भाजपा रहेगी और मेरी उम्र रहेगी, हम भाजपा से लड़ते रहेंगे।

## हेमन्त एवं कल्पना ने विनोद पाण्डेय की माता के निधन पर किया शोक व्यक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं विधायक कल्पना सोरेन ने सोमवार को राज्य समन्वय समिति के सदस्य-सह-झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के केंद्रीय महासचिव विनोद कुमार पाण्डेय के हरमू हाउसिंग कॉलोनी, रांची स्थित आवास पहुंचकर उनकी माता जलेश्वरी देवी जी के निधन पर गहरी शोक संवेदना प्रकट की। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिजनों को इस कठिन घड़ी में संबल प्रदान करने की कामना की। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने विनोद कुमार पाण्डेय एवं उनके परिजनों से मुलाकात की तथा उनका ढांढ़स बंधाया।

मालूम हो कि विगत 12 अक्टूबर 2025 को राज्य समन्वय समिति के सदस्य-सह-झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव विनोद कुमार पाण्डेय की माता जलेश्वरी देवी जी का निधन हो गया था। जलेश्वरी देवी जी अपने पीछे चार पुत्र एक पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

## सुजीत सिन्हा गिरोह के साथ पुलिस मुठभेड़, एक अपराधी को लगी गोली

**रांची :** तुपुदाना ओपी स्थित बालसिरिंग के पास कुख्यात अपराधी सुजीत सिन्हा गैंग के अपराधियो के साथ पुलिस की सोमवार की सुबह मुठभेड़ हुई। इसमें एक अपराधी घायल हुआ है, जबकि मौके से दो अपराधियो को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस नें मुठभेड़ वाले स्थान से तीन हथियार बरामद किए हैं। बताया जा रहा है कि रांची के डोरंडा थाना क्षेत्र में रहने वाले अपराधी मोनू राय के घर पर फायरिंग करने वाले अपराधियों के साथ रांची पुलिस की मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में रांची पुलिस की गोली से आफताब नाम का अपराधी घायल हुआ है, वहीं सोनू सहित एक अन्य अपराधी पकड़ा गया है। गिरफ्तार तीनों अपराधियों ने ही सुजीत सिन्हा के इशारे पर डोरंडा में मोनू राय के घर के बाहर फायरिंग की थी। इस संबंध में रांची के ग्रामीण एसपी प्रवीन पुष्कर ने बताया कि सुजीत सिन्हा गिरोह के अपराधियों के साथ मुठभेड़ हुई है, जिसमें एक अपराधी को गोली लगी है जबकि दो अन्य पकड़े गए हैं।

# उत्तर बंगाल में बाढ़ के लिए ममता बनर्जी ने भूटान से मांगा मुआवजा

एजेंसी

**कोलकाता :** पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को उत्तर बंगाल में आई बाढ़ के लिए पड़ोसी देश भूटान को जिम्मेदार ठहराते हुए मुआवजे की मांग की है। उन्होंने दावा किया कि भूटान से आने वाली पानी के कारण उत्तर बंगाल के कई जिलों में बाढ़ आई और व्यापक नुकसान हुआ है।

मुख्यमंत्री बनर्जी उत्तर बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले के नागराकाटा क्षेत्र में राहत एवं पुनर्वास कार्यों की समीक्षा के लिए पहुंची थीं। इस दौरान उन्होंने कहा, भूटान से पानी आने के कारण हमें भारी नुकसान उठाना पड़ा है। हम चाहते हैं कि वे इसका मुआवजा दें। उन्होंने यह भी कहा कि वह लंबे समय से भारत-भूटान संयुक्त नदी आयोग के गठन की मांग कर रही हैं। ममता ने कहा कि हमारे दबाव के कारण इस माह की 16 तारीख को एक बैठक तय की गई है और हमारे अधिकारी उसमें भाग लेंगे। मैं यह भी मांग करती हूं कि इस आयोग में पश्चिम बंगाल को भी शामिल किया जाए। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार पर आपदा प्रबंधन में राज्य को आर्थिक सहायता से वंचित रखने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि केंद्र ने अब तक राज्य को आपदा राहत के लिए आवश्यक धनराशि नहीं दी है। ममता बनर्जी ने नागराकाटा के बामनडांगा क्षेत्र के राहत शिविरों का दौरा कर पीड़ितों से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि जिन घरों को बाढ़ ने पूरी तरह बहा दिया है, उनका सर्वेक्षण जलस्तर घटने के बाद कराया जाएगा और सरकार उन्हें पुनर्निर्मित कराएगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि गाठिया और डायना नदियों पर अस्थायी पुल बनाए गए हैं क्योंकि बाढ़ के दौरान पुराने पुल बह गए थे। उन्होंने शिविरों में मौजूद बाढ़ पीड़ितों से कहा कि जिनके महत्वपूर्ण दस्तावेज जैसे आधार कार्ड, पैन कार्ड, भूमि-पत्र आदि बाढ़ में नष्ट हो गए हैं, वे राहत शिविरों में अपना विवरण दर्ज कराएं ताकि सरकार जल्द से जल्द उनकी प्रतिलिपियां जारी कर सके।

गौरतलब है कि, 4 अक्टूबर को हुई भीषण वर्षा के बाद उत्तर बंगाल के दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी जिलों में बाढ़ और भूस्खलन से अब तक कम से कम 32 लोगों की मौत हो चुकी है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मुख्यमंत्री प्राकृतिक आपदा के बाद उत्तर बंगाल की दूसरी यात्रा पर हैं। इससे पहले वह 5 अक्टूबर से चार दिनों तक राहत कार्यों की निगरानी के लिए वहीं पर थीं।

# जोएल मोकिर, फिलिप अघियन और पीटर हॉविट को मिला अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार

एजेंसी

**स्वीडन :** स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में सोमवार को अर्थशास्त्र के नोबेल प्राइज का एलान हुआ है। आर्थिक विज्ञान में स्वेरिग्स रिक्सबैंक नोबेल पुरस्कार 2025 का ऐलान रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज में दोपहर 3:15 बजे हुआ। तीनों को आर्थिक विकास में इनोवेशन की स्टडी के लिए मिला है। इस साल नोबेल पुरस्कार तीन अर्थशास्त्रियों जोएल मोकीर (अमेरिका), पीटर हॉविट (अमेरिका), और फिलिप एघियन (यूके) को मिला है।

नोबेल समिति ने बताया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रास्ता खुलता है। तकनीक तेजी से बदलती है और हम सभी पर असर डालती है। 'नोबेल प्राइज ऑर्गेनाइजेशन' के मुताबिक इस पुरस्कार का आधा हिस्सा जोएल मोकिर को 'तकनीकी प्रगति के माध्यम से सतत विकास के लिए आवश्यक शर्तों की पहचान करने के लिए' और दूसरा हिस्सा संयुक्त रूप से फिलिप एघियन और पीटर हॉविट को 'रचनात्मक विनाश के माध्यम से सतत विकास के सिद्धांत के लिए' प्रदान किया जाएगा।

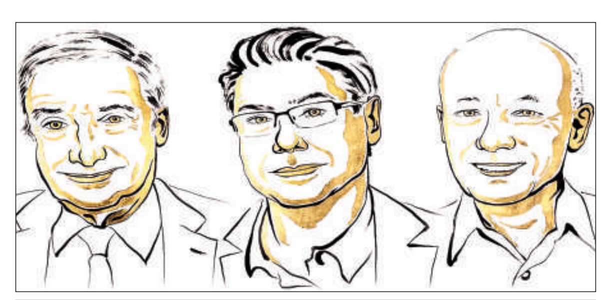

- अर्थशास्त्र में नोबेल अब तक 99 व्यक्तियों को दिया गया है।
- अर्थशास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार 1968 में शुरू किया गया।
- आर्थिक विज्ञान में यह पुरस्कार 1969 से अब तक 56 बार प्रदान किया जा चुका है।
- आर्थिक विज्ञान में पुरस्कार पाने वाली सबसे कम उम्र की व्यक्ति एस्तेर डुफ्लो थीं, जिनकी आयु 46 वर्ष थी।
- आर्थिक विज्ञान में पुरस्कार पाने वाले सबसे बुजुर्ग व्यक्ति 90 वर्ष की आयु में लियोनिद हर्विक्ज थे।

मोकिर ने निरंतर विकास के नए सामान्य बनने के कारणों को उजागर करने के लिए ऐतिहासिक स्त्रोतों का उपयोग एक साधन के रूप में किया। एघियन और हॉविट ने निरंतर विकास के पीछे के तंत्रों का भी अध्ययन किया। 1992 के एक लेख में, उन्होंने रचनात्मक विनाश नामक एक गणितीय मॉडल का निर्माण किया और बताया कि जब कोई नया और बेहतर उत्पाद बाजार में प्रवेश करता है, तो पुराने उत्पाद बेचने वाली कंपनियां नुकसान में आ जाती हैं।

नए उत्पाद और उत्पादन के तरीके पुराने तरीकों को बदलते रहते हैं, और यह प्रक्रिया कभी खत्म नहीं होती। यही लगातार आर्थिक विकास का आधार है, जिससे दुनिया भर के लोगों की जीवन गुणवत्ता, स्वास्थ्य और जीवन स्तर बेहतर होते हैं। यह पुरस्कार उन अर्थशास्त्रियों को दिया जाता है, जिनके रिसर्च ने अर्थव्यवस्था को समझने और उसकी समस्याओं को हल करने में बड़ा योगदान दिया हो।

# नए आपराधिक कानून बनाएंगे भारत में दुनिया की सबसे आधुनिक न्याय प्रणाली : अमित शाह

एजेंसी

**जयपुर :** केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि 21वीं सदी का सबसे बड़ा सुधार (रिफॉर्म) देश के तीन नए आपराधिक न्याय कानूनों का क्रियान्वयन है। इनके पूर्ण रूप से लागू होने के बाद भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली दुनिया की सबसे आधुनिक प्रणाली बन जाएगी। शाह ने विश्वास जताया कि इन कानूनों के जरिये लंबित मामलों में तेजी आएगी और न्याय अब वर्षों नहीं, समयबद्ध रूप से मिलेगा। उन्होंने कहा कि 2027 से नई आपराधिक संहिताओं के तहत किसी भी एफआईआर के तीन वर्ष के भीतर सुप्रीम कोर्ट तक न्याय सुनिश्चित करने का लक्ष्य है।

शाह सोमवार को सीतापुरा स्थित जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (जेईसीसी) में आयोजित नवीन आपराधिक कानूनों पर राज्य स्तरीय प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के अंतर्गत प्राप्त निवेश प्रस्तावों में से 4 लाख करोड़ रुपये के एमओयू की ग्राउंड ब्रेकिंग तथा लगभग 9,315 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण किया। इसके साथ ही शाह ने विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म के लिए 260 करोड़ रुपये और दुग्ध उत्पादकों को दूध सब्सिडी के 364 करोड़ रुपये की राशि का हस्तांतरण भी किया। उन्होंने 150 यूनिट मुफ्त बिजली योजना के तहत पंजीकरण की शुरूआत की और महिला सुरक्षा व एफएसएल (फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी) से जुड़े वाहनों का फ्लैग ऑफ भी किया। अमित शाह ने कहा कि नए कानून लागू होने के बाद केवल एक वर्ष में ही देशभर में 50 प्रतिशत से अधिक मामलों में चार्जशीट समय पर दाखिल होने लगी है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले वर्ष में यह अनुपात 90 प्रतिशत तक पहुंच जाएगा। उन्होंने बताया कि लाखों पुलिसकर्मियों, न्यायिक अधिकारियों, जेल कर्मचारियों और एफएसएल स्टाफ को प्रशिक्षण दिया गया है। अब आरोपी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ही अदालत में पेश होंगे। इससे समय और धन दोनों की बचत होगी तथा पुलिस कस्टडी से फरार होने की घटनाओं पर लगभग पूरी तरह रोक लगेगी।

शाह ने कहा कि नई वैज्ञानिक जांच प्रणाली के लिए विशेषज्ञ तैयार करने के लिए 2020 में नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई है, इसका विस्तार देशभर हो रहा है। नई संहिताओं में आतंकवाद, मॉब लिंचिंग, संगठित अपराध और डिजिटल अपराध की स्पष्ट परिभाषा दी गई है। उन्होंने बताया कि अब कानून में 29 स्थानों पर समय-सीमा तय की गई है-जैसे 90 दिन में पीड़ित को अपडेट देना और 60-90 दिन में चार्जशीट दाखिल करना अनिवार्य है। अनुपस्थिति में भी ट्रायल चलाकर सजा देने का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि पहले राजस्थान में अपराधियों को सजा होने की दर 42 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 60 प्रतिशत हो गई है। पूर्ण रूप से लागू होने पर यह दर 90 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है।

# नक्सल अभियान में मिली बड़ी सफलता, भारी मात्रा में हथियार सहित अन्य सामान बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**हजारीबाग :** हजारीबाग पुलिस को नक्सल अभियान में बड़ी सफलता मिली है। पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की संयुक्त टीम ने बोकारो-हजारीबाग सीमावर्ती क्षेत्र में चलाए गए विशेष सर्च अभियान के दौरान नक्सलियों के एक ठिकाने से भारी मात्रा में हथियार और नक्सली सामग्री बरामद की है।

बरामद सामग्री में दो एसएलआर राइफलें, मैगजीन, बड़ी संख्या में कारतूस, पिट्ठू बैग, कपड़े और दैनिक उपयोग की कई सामान शामिल हैं। यह बरामदगी नक्सलियों की किसी बड़ी साजिश को नाकाम करने में महत्वपूर्ण मानी जा रही है। हजारीबाग एसपी अंजनी अंजन ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि यह अभियान गुप्त सूचना के आधार पर चलाया गया था। सूचना मिली थी कि नक्सली संगठन के कुछ सदस्य बोकारो और हजारीबाग की सीमा के जंगल क्षेत्र में सक्रिय हैं। तलाशी के दौरान जंगल में स्थित एक ठिकाने से यह हथियार और अन्य सामान बरामद किया गया।

एसपी ने इस अभियान में सीआरपीएफ की भूमिका को बेहद महत्वपूर्ण बताया। एसपी अंजनी अंजन के अनुसार, बरामद हथियारों से यह स्पष्ट होता है कि नक्सली किसी बड़ी वारदात की योजना बना रहे थे। पुलिस की तत्परता और संयुक्त कार्रवाई से उनकी यह साजिश नाकाम हो गई। बरामदगी के बाद, पुलिस ने पूरे क्षेत्र में कॉम्बिंग ऑपरेशन तेज कर दिया है। नक्सलियों की संभावित गतिविधियों पर नजर रखने के लिए जंगल क्षेत्रों में अतिरिक्त बल तैनात किए गए हैं और सीमावर्ती इलाकों में लगातार गश्त की जा रही है।

## एक नजर

### तालाब में डूबने से 13 वर्षीय खुशी की मौत

**बरही** : बरही थाना क्षेत्र अंतर्गत बरसोत स्थित पृथ्वी सागर तालाब (छठ तालाब) में डूबने से 13 वर्षीय खुशी कुमारी पिता धर्मेंद्र राजवार की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार खुशी अपने तीन बहन और एक छोटा भाई के साथ कपड़ा धोने और नहाने के लिए तालाब गई हुई थी। इसी क्रम में खुशी का पैर फिसल गया, जिससे वह डूबने लगी। खुशी को डूबते देख उसकी बहनों ने मदद के लिए हल्ला करने लगी। बच्चियों की हो - हल्ला सुनकर गांव के मंटू राजवार तालाब पहुंचे, जहां पहुंचकर उन्होंने बेहोशी के हालत में खुशी को तालाब से बाहर निकाला। जिसके बाद आनन - फानन में खुशी को बरही अनुमंडलीय अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं खुशी के आकस्मिक निधन पर गांव में शोक की लहर दौड़ गई है और परिजनों का रो - रो कर बुरा हाल है।

### बरही विस में बिजली समस्या का निदान करना हमारा लक्ष्य : कृष्णा यादव

**बरही** : बरही विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विजैया पंचायत के ग्राम बैजलाडीह में 100 केवी ट्रांसफार्मर जे एल के एम के नेता कृष्ण यादव के पहल पर उपलब्ध कराया गया। जिसका उद्घाटन ग्रामीणों की उपस्थिति में को जे एल के एम नेता पूर्व विधायक प्रत्याशी कृष्णा यादव जी के द्वारा फीता काट कर किया गया। इस अवसर पर यादव ने कहा कि की बरही विस में बिजली की समस्या गंभीर बनती जा रही है। बैजलाडीह के लोग ट्रांसफार्मर जल जाने से अंधेरे में रहने को मजबूर थे। ग्रामीणों की मांग पर प्रयास कर जल्द ट्रांसफार्मर उपलब्ध कराया है। बरही विस में बिजली समस्या का निदान करना हमारी प्राथमिकता है। मौके पर जहांगीर मियां, मजुंर अंसारी, समसुदिन अंसारी, शराज अंसारी, रियाज अंसारी, गुलजार अंसारी, तबारक अंसारी, मुशलीम मियां, कलाम अंसारी, खुरबान अंसारी, महफूज अंसारी, इस्लाम अंसारी सहित कई लोगों ने कृष्णा यादव को माला पहनाकर स्वागत किया। साथ ही ट्रांसफार्मर लगने पर खुशी जताया है।

### फुटबॉल टूर्नामेट में धवारी बरकट्ठा की टीम विजेता बनी

**बरही** : बरही प्रखंड के बेलहारा फुटबॉल मैदान में स्टार क्लब की ओर आयोजित फुटबॉल टूर्नामेंट का फाइनल मैच धवारी बरकट्ठा की टीम और स्टार क्लब बेलहारा की टीम के बीच खेला गया। मैच अवधि तक दोनों टीमों ने शानदार खेल का प्रदर्शन किया। निर्धारित समय पर कोई टीम एक दूसरे के खिलाफ गोल नहीं कर सकी। रेफरी ने दोनों टीमों के बीच पेनाल्टी शूटआउट कराया। पेनाल्टी शूटआउट में धवारी बरकट्ठा की टीम जीत गई और फुटबॉल टूर्नामेंट की विजेता बनी। विजेता और उपविजेता टीम को नगद राशि और ट्राफी देकर पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि अल्पसंख्यक कल्याण महा समिति के अध्यक्ष सह पूर्व जिप प्रतिनिधि मो कैयूम, पूर्व मुखिया बिजैया दशरथ यादव, पंचायत समिति सदस्य रोहित यादव,भाजपा ओबीसी के युवा नेता मुन्ना यादव के द्वारा संयुक्त रूप से धवारी बरकट्ठा की विजेता टीम को 70 हजार रुपये का चेक और ट्राफी दिया गया, वहीं उपविजेता टीम को 40 हजार रुपये का चेक और ट्राफी देकर पुरस्कृत किया गया। मौके पर केदार यादव, रीझू महतो, संजय पांडे, विकास यादव, डॉ दिनेश यादव, टोकन यादव, लालजीत सिंह, कन्हैया कुमार और स्टार क्लब के सदस्य मौजूद रहे।

## वनाधिकार अधिनियम के लंबित प्रकरणों के शीघ्र निष्पादन को लेकर डीसी ने की समीक्षा बैठक

# लंबित वन पट्टा और दावों से संबंधित वादों का निष्पादन तीन दिनों में करें : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**हजारीबाग** : उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने सोमवार को समाहरणालय सभागार में वनाधिकार अधिनियम से संबंधित वन भूमि पर पट्टा/अधिकार प्रदान करने के मुद्दे पर अंचलाधिकारियों एवं रेंजरों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में उपायुक्त ने सभी अंचलाधिकारियों एवं रेंजरों को निर्देश दिया कि वनाधिकार अधिनियम के अंतर्गत लंबित वन पट्टा, व्यक्तिगत एवं सामुदायिक दावों से संबंधित वादों का निष्पादन आगामी तीन दिनों के भीतर अनिवार्य रूप से किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पदाधिकारी जिम्मेदारीपूर्वक कार्य करें। सभी रजिस्टरों को अद्यतन रखें एवं अभिलेखों का उचित संधारण सुनिश्चित करें। उपायुक्त ने यह भी निर्देश दिया कि लंबित वादों का निपटारा संयुक्त सत्यापन के माध्यम से ग्रामसभा स्तर से किया जाए, ताकि प्रक्रिया पारदर्शी एवं विधिसम्मत हो। बैठक में उपस्थित अधिकारियों को वनाधिकार अधिनियम से संबंधित सभी नियमों एवं विनियमों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उपायुक्त ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्येक वाद के निष्पादन में स्वीकृति या अस्वीकृति के कारणों का स्पष्ट उल्लेख किया जाना आवश्यक है। उन्होंने सभी पदाधिकारियों से अपेक्षा की कि प्रत्येक प्रकरण को गंभीरता से लेकर नियमानुसार शीघ्र निष्पादन सुनिश्चित करें। बैठक में उपायुक्त के अलावा पूर्वी, पश्चिमी वन प्रमंडल एवं वन्यजीव अभयारण्य प्रभाग के डीएफओ, सदर एसडीओ, जिला कल्याण पदाधिकारी, संबंधित अंचलाधिकारी, रेंजर सहित अन्य कर्मी उपस्थित रहे।

## सरकारी योजनाओं के लाभ के नाम पर मोबाइल ओटीपी साझा न करें : बीडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बरही** : बरही बीडीओ जयपाल महतो ने प्रखंड क्षेत्र के सभी पंचायतों के ग्रामीणों, किसी भी तरह के सरकारी योजना से लाभ पाने वाले लाभुकों एवं आमजनों से पत्र के माध्यम से सूचित करते हुए कहा कि विभिन्न पंचायतों से मंईया सम्मान, पेंशन, मातृत्व योजना एवं अन्य योजनाओं के तहत मोबाइल पर ओटीपी मांग कर साइबर ठगी का मामला प्रकाश में आया है। उन्होंने कहा कि प्रखण्ड स्तर से किसी भी प्रकार की योजनाओं यथा मईयाँ सम्मान योजना , पेंशन योजना ,मातृत्व योजना एवं अन्य योजना की स्वीकृति अथवा अन्य किसी कार्यो के लिए किसी भी प्रखण्ड कर्मी द्वारा मोबाईल ओ०टी०पी० की मांग नहीं की जाती है तथा किसी नये अप्लिकेशन को गुगल प्ले स्टोर के माध्यम से इंस्टाल करने के लिए नहीं कहा जाता है। यदि इस प्रकार की कोई सूचना अथवा अप्लिकेशन इंस्टॉल करने के संबंध में बोला जा रहा है तो ये पूर्ण रूप से ठगी का मामला है। किसी भी हाल उनके झांसा में न आकर इंस्टॉल करें न ओटीपी शेयर करें अन्यथा आप ठगी का शिकार हो सकते हैं जिसकी पूरी जिम्मेदारी आप खुद होगें।

## पदमा में वोट चोर, गद्दी छोड़ कार्यक्रम का आयोजन, जिला अध्यक्ष का हुआ स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**हजारीबाग** : कांग्रेस पार्टी की ओर से पदमा प्रखंड के अध्यक्ष गौतम मेहता की अध्यक्षता में रोमी पंचायत भवन में वोट चोर, गद्दी छोड़ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कांग्रेस जिला अध्यक्ष पूर्व मंत्री जय प्रकाश भाई पटेल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में बरही विधानसभा के कांग्रेस के पूर्व प्रत्यासी अरुण साहू मुख्य रूप से मौजूद रहे। उपस्थित कांग्रेस पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ताओं ने जिला अध्यक्ष जय प्रकाश भाई पटेल और अरुण साहू का भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जयप्रकाश भाई पटेल ने कहा कि चुनाव आयोग और बीजेपी मिलकर वोट चोरी कर बीजेपी की सरकार बनवा रहे हैं। महाराष्ट्र हरियाणा, राजस्थान मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में वोट चोरी से बीजेपी की सरकार बनवाया गया। अरुण साहू ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेता राहुल गांधी जी ने पूरे देश के सामने वोट चोरी का प्रमाण दिखा दिया है। बिहार में रक्फ़ के नाम पर चुनाव आयोग द्वारा 65 लाख मतदाताओं का नाम काट कर बीजेपी की सरकार बिहार में रक्फ़ के नाम पर कोशिश कर रहा है। बिहार की जनता चुनाव आयोग की इस साजिश को समझ रही है और इसका जवाब चुनाव में इंडिया गठबंधन को जीता कर जनता बिहार में मन बना चुकी है। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि वोट चोर गद्दी छोड़ कार्यक्रम के तहत पदमा प्रखंड से 15000 आम मतदाता से हस्ताक्षर करवा कर जिला को जमा करने का निर्देश कांग्रेस के जिला अध्यक्ष हजारीबाग जय प्रकाश भाई पटेल ने प्रखंड अध्यक्ष को दिया है, कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष डॉ निजामुद्दीन अंसारी, ओबीसी जिला अध्यक्ष दीपक गुप्ता, प्रखंड उपाध्यक्ष बरही प्रखंड, प्रकाश विश्वकर्मा, गोविंद मेहता, मोहम्मद अनवर, अरुण जय मेहता सहित काफी संख्या में कांग्रेस के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## चौपारण की बेटी पलक ने रचा इतिहास, गटका खेल में झारखंड को दिलाया पहला स्वर्ण पदक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**चौपारण** : प्रखंड की बेटी पलक कुमारी ने झारखंड को गटका खेल में पहला स्वर्ण पदक दिलाकर इतिहास रच दिया है। मानगढ़ पंचायत अंतर्गत ग्राम ठुठी निवासी पलक ने राष्ट्रीय गटका चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए यह उपलब्धि हासिल की। पलक कुमारी, जो संतोष सिंह की सुपुत्री एवं अयोध्या सिंह की पौत्री हैं, ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से न सिर्फ अपने गांव और जिले का, बल्कि पूरे झारखंड राज्य का नाम रोशन किया है। गटका एक पारंपरिक सिख युद्ध कला है, जो अब खेल के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो रही है। उनकी इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर पूरे क्षेत्र में हर्ष का माहौल है। ग्रामीणों, जनप्रतिनिधियों, शिक्षकों और समाज के विभिन्न वर्गों ने पलक को बधाई दी है और उनके उज्वल भविष्य की कामना की है। पलक की सफलता से प्रेरित होकर गांव के अन्य युवा भी गटका सहित विभिन्न खेलों में रुचि दिखा रहे हैं। परिजनों ने बताया कि पलक बचपन से ही खेलों के प्रति समर्पित रही हैं और निरंतर अभ्यास से उन्होंने यह मुकाम हासिल किया है। गांव में अब उनके सम्मान में एक स्वागत समारोह आयोजित किया जाएगा। स्थानीय प्रशासन और खेल विभाग द्वारा भी उन्हें सम्मानित किए जाने की संभावना है। पलक की यह उपलब्धि झारखंड में गटका जैसे पारंपरिक खेलों के लिए एक नई दिशा का संकेत देती है।

## युवाओं के बीच पूर्व मुखिया ने बॉलीबॉल किट का किया वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बरही** : बरही प्रखंड अंतर्गत विजैया पंचायत के पूर्व मुखिया दशरथ यादव की ओर से नवयुवक क्लब के युवाओं के बीच बॉलीबॉल किट का वितरण किया गया। वितरण कार्य का उद्घाटन पूर्व जिप प्रतिनिधि मो कयूम एवं पूर्व मुखिया दशरथ यादव ने संयुक्त रूप से किया। इस दौरान मो कयूम एवं पूर्व मुखिया दशरथ यादव ने संयुक्त रूप से कहा कि बॉलीबॉल किट वितरण करने का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को खेल के प्रति बढ़ावा मिल सके और खिलाड़ियों के अभ्यास के लिए बेहतर सामग्री मिल सके। इस वितरण से खिलाड़ियों को खेलने में आसानी होगी। साथ ही खिलाड़ियों को खेल के प्रति प्रोत्साहित करेगा। मौके पर पूर्व उपमुखिया सहदेव शर्मा, समाजसेवी रघु मोदी, अर्जुन मोदी, सहदेव राणा, विनोद राणा, मदन कुमार यादव, अजय यादव, सुनील यादव, नीतीश यादव, कुलदीप यादव, मुकेश कुमार, मंटू यादव एवं इंद्रदेव ठाकुर समेत नवयुवक क्लब के दर्जनों खिलाड़ी मौजूद थे।

## प्राचीन छठ घाट बरहीडीह में बरही विधायक ने पूजा समिति और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बरही** : आगामी छठ महापर्व को लेकर सोमवार की सुबह बरही प्रखंड स्थित प्राचीन छठ घाट बरहीडीह में सूर्य मंदिर परिसर में बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने की। संचालन सामाजिक कार्यकर्ता राजसिंह चौहान ने किया। बैठक में छठ पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा के मद्देनजर घाट और नदी की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और यातायात सुगमता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। साथ ही बरहीडीह मोड़ से लेकर छठ घाट तक लाइट लगाने और सुरक्षा प्रबंधन को लेकर चर्चा की गई। बैठक के उपरांत विधायक मनोज यादव ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों और समाजसेवियों के साथ छठ घाट का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने घाट परिसर में स्वच्छता व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कई दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि छठ महापर्व लोक आस्था का सबसे बड़ा पर्व है, जिसमें स्वच्छता और सुरक्षा सर्वोपरि है। उन्होंने प्रशासनिक पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो इसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां समय पर पूरी की जाए। मौके पर विधायक प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, सामाजिक कार्यकर्ता राजसिंह चौहान, जीप प्रतिनिधि गुरुदेव गुप्ता, मुखिया समशेर आलम, पुलिस अवर निरीक्षक संतोष कुमार, एसआई रूपलाल यादव, कैलाशपति सिंह, पंसस जीतू ठाकुर, अशोक सिंह, पूर्व मुखिया प्रतिनिधि रमेश ठाकुर, भाजपा ओबीसी मंडल अध्यक्ष मनोज साव, आकाश जायसवाल, नागेश्वर प्रसाद केशरी, कृपाल राणा, भोली पासवान, छोटी ठाकुर, विजय सिंह, राजकुमार केशरी, राजकुमार यादव, अमित गौरव (पमपम), विकास सिंह, संजय साव, टिंकू आलम, मुकेश सिंह, सुरेश चंद्रवंशी, विक्की सिंह, अमित सिंह, कौशिक कुमार, बिनोद साव, महेंद्र प्रसाद उर्फ बाली, पिंटू ठाकुर, पिंटू सिंह, संजय कुमार, सुरेश राम समेत अनेक सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## संक्षिप्त खबरें

### एलएनजेपी ने विनोबा भावे यूनिवर्सिटी में लगाया नेत्र जांच शिविर

**हजारीबाग** : सोमवार को नव भारत जागृति केंद्र द्वारा संचालित लोक नायक जय प्रकाश आंख अस्पताल बहेरा आश्रम चौपारण हजारीबाग की ओर से विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के स्वामी विवेकानन्द सभागार में विस्तृत नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 530 लोगों का नेत्र जांच किया गया। जांच में 4 लोगों में मोतियाबिंद पाया गया एवं 2 रेटीना का मरीज पाया गया। संस्था की तरफ से नि:शुल्क चश्मा (नजदीक एवं दूर) तथा ड्रॉप उपलब्ध करवाया गया, जिसके लिए कोई शुल्क नहीं लिया गया। सभी कर्मचारियों एवं उनके परिजनों का एवं संस्थान के छात्रों की नेत्र जांच/परीक्षण आधुनिक मशीनों के द्वारा किया गया जिसमें संस्थान के संतोष कुमार पुरी अस्पताल प्रबंधक, कीर्ति रावत कार्यक्रम प्रबन्धक, व्यक्त कुमार सिंह वरीय ऑप्टोमेट्रिस्ट, अम्बर निधि श्रॉफ ऑप्टोमेट्रिस्ट, दीपक कुमार ऑप्टोमेट्रिस्ट, वीरेंद्र दांगी ड्राइवर सह बहुकार्य कर्मचारी, बबलू कुमार, धीरेन्द्र कुमार, संदीप कुमार, सनी कुमार, सत्यम कुमार, प्रत्याशा प्रभा, यशिका सिंह, सोनाली कुमारी, अमर कुमार, ऋषि कुमार, प्रिन्स कुमार एवं कृष्णा कुमार सभी ऑप्थॉल्मिक अस्सिटेंट उपस्थित थे। संतोष कुमार पूरी अस्पताल प्रबंधक एवं कीर्ति रावत, जिला कार्यक्रम समन्वयक, नव भारत जागृति केंद्र की देख रेख में इस कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें मोतियाबिंद पाए गए मरीजों का ऑपरेशन राज्य स्वास्थ्य कर्मी बीमा योजना अंतर्गत लोक नायक जय प्रकाश आंख अस्पताल, बहेरा आश्रम, चौपारण, हजारीबाग में मुफ्त किया जाएगा।

### चेपाखुर्द में अर्धनिर्मित जलमीनार पड़ा अधूरा, ग्रामीण पेयजल के लिए तरस रहे

**बडकागांव** : बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत पंचायत डांडीकला के ग्राम - चेपाखुर्द में विगत एक वर्ष से चार जलमीनार अधूरा पड़ा है। एक जलमीनार चेपाखुर्द के खौरा टोला में , दूसरा जलमीनार मंदिर मोहल्ला में तीसरा जलमीनार तेली टोला में चौथा जलमीनार मुस्लिम मोहल्ला में अधूरा पड़ा है। ग्रामीणों द्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार संवेदक चारो जलमीनार में सोलर पैनल एवं मोटर सेट किया जा चुका है, लेकिन जलमीनार से ग्रामीणों के घर तक कनेक्शन अधूरा छोड़ दिया गया। वहीं ग्रामीणों का कहना है कि जलमीनार बनने से हम लोगों में आशा जगी थी कि हमें शुद्ध पेयजल मिलेगा लेकिन यह जलमीनार सिर्फ सपना बन कर रह गया है। जिसे ग्रामीणों ने पंचायत प्रतिनिधियों एवं संबंधित विभाग के कर्मचारियों से जल्द से जल्द अधूरे कार्य को पूरा करने का मांग किया है। मांग करने वालों में मुख्य रूप से तारकेश्वर महतो, राजा करमाली, राजू साव, अरुण महतो, भास्कर महतो, कलप्पू विश्वकर्मा, मनोज विश्वकर्मा, गोपाल विश्वकर्मा, रंजीत यादव, प्रभात यादव, कुलदीप साव, जगलाल साव, राजकुमार साव, गणेश यादव आदि शामिल हैं।

### वकील चतुर्भुज प्रसाद नहीं रहे प्रबुद्ध लोगों ने किया शोक व्यक्त

**बड़कागांव** : बड़कागांव गुरु चट्टी निवासी 81वर्षीय चतुर्भुज प्रसाद का सोमवार सुबह 4:00 हजारीबाग आवास में निधन हो गया। आज मंगलवार सुबह 9:00 बजे हजारीबाग मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया जाएगा। चतुर्भुज प्रसाद 1970 से हजारीबाग में वकालत शुरू की थी, लगभग 50 वर्षो तक उन्होंने वकालत की तथा जरूरतमंद लोगों की सेवा भी की। वहीं 1987 से मधेशिया वैश्य समाज के जिला अध्यक्ष थे। चतुर्भुज प्रसाद अपने पीछे तीन पुत्र समेत भरापूरा परिवार छोड़ गए। प्रबुद्ध लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया। समाजसेवी सिविल सोसाइटी बड़कागांव प्रखंड अध्यक्ष मनोज गुप्ता ने कहा कि उनके निधन से मधेशिया वैश्य समाज को भारी क्षति हुई है, इनकी भरपाई कर पाना मुश्किल है। शोक व्यक्त करने वालों में मुख्य रूप से पूर्व विधायक लोकनाथ महतो, योगेंद्र साहू, डॉक्टर बालेश्वर महतो, मनोज गुप्ता, गोविंद नारायण महतो, धनेश्वर महतो, राजेश गुप्ता, रवि भूषण, दिनकर भूषण, भास्कर भूषण, संजय गुप्ता, महेंद्र गुप्ता ,दीपक गुप्ता, प्रदीप गुप्ता, पप्पू गुप्ता, पंकज गुप्ता, बिंदु गुप्ता, उमेश गुप्ता के अलावा अन्य दर्जनों लोग शामिल।

### नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का रोमांच चरम पर, 48 टीमों ने लिया हिस्सा, ग्रामीण प्रतिभाओं को मिला मंच

**चौपारण** : सांसद खेल महामहोत्सव के तहत बिरसा मैदान डुमरी में आयोजित नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का रोमांच बढ़ता ही जा रहा है। इस आयोजन ने ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक उचित मंच प्रदान किया है। खिलाड़ियों ने इस सफल आयोजन के लिए हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल और सहयोग के लिए बरही विधायक मनोज यादव के प्रति आभार प्रकट किया है ।आयोजक समिति के अध्यक्ष सह मुखिया बिरेन्द्र रजक ने बताया कि टूनार्मेंट में चौपारण प्रखण्ड की कुल 48 टीमों ने हिस्सा लिया है और सभी टीमों का प्रदर्शन लाजवाब रहा है। समिति के सचिव विजय यादव ने बताया कि अब तक खेले गए मुकाबलों में गंगाआहार, टोईया, अमझर, गोविंदपुर, भटबिगहा, कोरियाडीह, डेबो, चौपारण, चक, डेबो, परतापुर, कान्हाचक, सेलहारा और सेलहारा खुर्द की टीमों ने अपने-अपने मुकाबले जीतकर अगले दौर में प्रवेश कर लिया है। आयोजन को सफल बनाने में समिति के कोषाध्यक्ष सहदेव प्रसाद यादव, उपाध्यक्ष अशोक यादव और विजय मद्देशिया, उप सचिव बिनोद सिंह और मंटू सिंह, संयोजक बालेश्वर राणा और विकास रजक, नारायम साव, बसंत साव, देवल यादव, भोला राणा, तथा रेफरी सुनील यादव और उमेश पासवान सहित समिति के कई सदस्य महती भूमिका निभा रहे हैं।

# लालू पर लैंड फॉर जॉब स्कैम में सीबीआई की कार्रवाई चिंताजनक : झामुमो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की ओर से जमीन के बदले रेलवे में नौकरी दिलाने संबंधित घोटाले में सीबीआई की चार्जशीट पर, झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के केन्द्रीय महासचिव सुप्रियो भटटाचार्य ने सवाल उठाया है। उन्होंने सोमवार को पार्टी के कैंप कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्त्ता में मोर्चा के कार्यालय में कहा है कि आगामी 11 अक्टूबर से बिहार विधानसभा चुनाव शुरू होनेवाला है और चुनाव शुरू होने से महज एक दिन पूर्व की गई यह कार्रवाई राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को जानबूझकर परेशान करने की है।

उन्होंने कहा कि सीबीआई ने बिहार में सबसे पहले वर्ष 2017 को एक घोटाला ट्रेस किया और बिहार की प्रमुख राजनीतिक राजद दल को घेरा गया। इसमें राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के परिवार को मुख्य रूप से आरोपित बनाया गया। इस घोटाले में रेलवे के भी कुछ पदाधिकारियों के नाम को जोडा गया और फिर इसपर भाजपा की ओर से एक नैरेटिव चलाते हुए घोटाले को लैंड फॉर जॉब स्कैम का नाम दे दिया गया। उन्होंने कहा कि सोचने वाली बात है कि राष्ट्रीय एवं अंतर्रराष्ट्रीय स्तर पर बतौर रेलवे मंत्री रहते लालू यादव ने कई बेहतर कार्य किया। इसे देखते हुए लालू यादव के किए कार्यों की राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हुई और कई लोगों ने उनके किए गए कार्यों पर शोध भी किया। बावजूद इसके जानबूझकर लालू यादव के परिवार को परेशानी में डाला जा रहा है। रेलवे में हुई नियुक्तियों को लेकर राजद के खिलाफ केस बना दिया जा रहा है जो गलत है।

सुप्रियो ने कहा कि मुकदमे महागंठबंधन (झामुमो, राजद, कांग्रेस) का ममेरा, चचेरा, फूफेरा भाई हैं। भटटाचार्य ने कहा कि 2025 मई को आईआरसीटीसी केस में जो फाइनल आग्युमेंट को सीबीआई ने स्पेशल कोर्ट में समाप्त कर दी और सोमवार को चार्जशीट प्वॉइंट किया गया। उन्होंने कहा कि बिहार चुनाव में कार्यक्रम घोषित होने और आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद इस मामले में कार्रवाई यह दशार्ती है कि सीबीआई की कार्रवाई सही नहीं है। उन्होंने कहा कि देश के मुख्य चुनाव आयुक्त बहुत ज्ञानी हैं। चुनाव आयुक्त को समझना चाहिए कि चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है जिसके अपने कार्य क्षेत्र और अधिकार हैं। ऐसे में चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद इस तरह की कार्रवाई फैसला आना चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि यह बिहार महागंठबंधन और इसके राजद के साथ अन्याय है।

## राशन कार्ड में जिलावार जुड़ेंगे 100 जरूरतमंद मरीजों के नाम : इरफान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड के प्रत्येक जिले में विशेष रूप से 100-100 गरीब और गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों के नाम उनके राशन कार्ड में जोड़े जाएंगे। ताकि संबंधित गरीब व्यक्ति आयुष्मान भारत योजना और अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठा सकें। खाद्य, सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले के मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने यह जानकारी दी। अंसारी ने राज्य के सभी सांसदों और विधायकों से अपील किया है कि वे अपने क्षेत्र में ऐसे जरूरतमंदों की सूची शीघ्र उपायुक्त और जिला आपूर्ति पदाधिकारी (डीएसओ) को उपलब्ध कराएं। अंसारी ने बताया कि विभाग में कई दौर की गंभीर विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया है। अब यह योजना धरातल पर उतारी

जा रही है, जिससे गरीबों के बीच राहत और सरकार के प्रति भरोसा और मजबूत होगा। मंत्री ने बताया कि वर्तमान गाइडलाइन के अनुसार केंद्र सरकार की नीति में नाम काटे बिना नया नाम नहीं जोड़ा जा सकता है। ऐसे में बड़ी संख्या में जरूरतमंद लोग सरकारी योजनाओं से वंचित थे। राज्य सरकार ने मानवीय दृष्टिकोण से विशेष परिस्थिति में यह छूट देने का फैसला किया है।

## केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्री से आंगनबाड़ी कर्मियों की सुरक्षा और वेतनमान लागू करने की मांग : जेपी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** भाजपा झारखंड किसान मोर्चा के प्रदेश पदाधिकारी और झारखंड राज्य आंगनबाड़ी कर्मचारी संघ के संयोजक जय प्रकाश पांडेय ने रामगढ़ जिले में पतरातु प्रखंड के घघरा की आंगनवाड़ी सेविका अंजलि गाड़ा का दुष्कर्म करने के बाद की गई निर्मम हत्या पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए भारत के केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी को पत्र भेज कर और मोबाइल पर वार्ता कर झारखंड में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार और शोषण के विषय में अवगत कराया मंत्री महोदया ने तुरंत ही झारखंड सरकार के सेक्रेटरी और महिला बाल विकास निदेशक को अविलंब कराई हेतु निर्देश भेज दिया है, जिसे तत्काल ओर प्रभाव से सुविधाओं लागू करने के लिए भी बोल दिया है, मांग किया है कि,राज्य की वर्तमान सरकार लूट खसोट में लगी हुई है और प्रशासन इस प्रकार के गतिविधियों का बढ़ावा दे रहा है, जिसके कारण पूरे राज्य की आदिवासी, ST और SC की महिलाए आज राज्य के मुखिया आदिवासी हेमंत सोरेन के रहते हुए भी महिलाएं सुरक्षित तथा महफूज नहीं है। आए दिन इस तरह की घटनाएं झारखंड में देखी जा रही है और प्रशासन मूकदर्शक बना हुआ हैं, महिलाओं और बच्चों द्वारा रामगढ़,-भुरकुंडा मुख्य सड़क को लगभग 12 घंटों तक जाम किया गया फिर भी अभी तक हत्यारा पुलिस के गिरफ्त से बाहर हैं,जो प्रशासन के उदासीनता का पोल खोलने के लिए काफी है, दाह संस्कार के बाद रामगढ़ की सेविका और सहायिका आंदोलन की रूप रेखा तैयार कर रही है ताकि मृतक के आश्रित को नौकरी, आर्थिक सहायता के रूप में 10 लाख रु, उनके बच्चों की शिक्षा, ग्रेच्युटी और पेंशन की सामाजिक सुरक्षा योजना से उनके आत्मा परिवार को भरण पोषण के लिए लागू किया जा सके, इस संबंध में रामगढ़ की सेविकाएं आंगनवाड़ी केंद्रों की बंद कर 14 अक्टूबर 2025 को रामगढ़ उ‌ छ कार्यालय के समक्ष धरना और उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। इसकी घोषणा आंगनबाड़ी संगठनों द्वारा की जा चुकी है, मंत्री महोदया से आग्रह किया गया है कि तत्काल प्रभाव से मृतक आंगनवाड़ी सेविका अंजली गाड़ी के आश्रित को कम से कम सामाजिक सुरक्षा के तहत 10 लाख रु, गेंचुटी, आश्रित को नौकरी, पेंशन की सुविधा और महिलाओं की सुरक्षा की व्यवस्था किया जाए।

## मैथिली की महिला लेखिकाओं में लेखन की चेतना बढ़ी है : नचिकेता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड की राजधानी रांची में सोमवार को साहित्य अकादमी की ओर से वेबलाइन साहित्य शृंखला के तहत मैथिली की महिला रचनाकारों का एक आभासी सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें मैथिली की समकालीन महिला रचनाकारों ने आलेख, कविताओं एवं कहानियों का पाठ किया। सम्मेलन की शुरूआत में साहित्य अकादमी के उप-सचिव एन. सुरेश बाबु ने सभी रचनाकारों एवं आभासी लिंक से जुड़े साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया, जबकि मैथिली के कवि-नाटककार, भाषा वैज्ञानिक एवं मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक उदय नारायण सिंह नचिकेता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अध्यक्षीय भाषण में उदय नारायण सिंह नचिकेता ने कहा कि

भले ही हिंदी एवं बांग्ला के मुकाबले हमारी मैथिली में महिला रचनाकारों की संख्या कम है, लेकिन मैथिली लेखिकाएं एवं कवयित्रियां विभिन्न विधाओं में समकालीन लेखन की विविधताओं को कुशलता पूर्वक दर्ज कर रही हैं। मैथिली की महिला लेखिकाओं में लेखन की चेतना बढ़ी है, जो खुशी की बात है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं में लेखन के क्षेत्र में विषय वस्तु एवं शिल्प को लेकर हो रहे बदलावों की चर्चा करते हुए मैथिली रचनाकारों से भावी लेखन में विषय-वस्तु के संदर्भ में बदलाव का आह्वान किया। इसके अलावा अन्य भाषाओं के मुकाबले मैथिली साहित्य की कमियों का भी उल्लेख किया।उन्होंने कहा कि हमारी मैथिली की महिला लेखिकाएं वैश्विक तथा भारतीय चिंता एवं चिंतन के साथ-साथ स्त्रीवाद की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला है। सम्मेलन में शामिल डॉ. आभा झा ने मैथिली साहित्य में महिला लेखिकाओं के योगदान पर आलेख का पाठ किया।

## पायलट ट्रेनिंग के दौरान जोहानसबर्ग में रांची के युवक की दर्दनाक मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** दक्षिण अफ्रीका के जोहानसबर्ग से एक दुखद खबर सामने आई है। पायलट ट्रेनिंग के दौरान विमान क्रैश हो जाने से झारखंड की राजधानी रांची के रहने वाले 20 वर्षीय युवक पीयूष पुष्प की दर्दनाक मौत हो गई। पीयूष पेशे से पायलट बनना चाहता था और वालकैन एविएशन इंस्टीट्यूट, जोहानसबर्ग में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। जानकारी के अनुसार, विमान उड़ान के दौरान अचानक तकनीकी खराबी आ जाने के कारण हादसा हुआ। दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल पीयूष को तत्काल जोहानसबर्ग के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। पीयूष रांची के अरगोड़ा कटहल मोड़, लाजपत नगर का निवासी था और जवाहर विद्या मंदिर, श्यामली का

पूर्व छात्र था। वह पूर्व शिक्षक टीएन साहू का पुत्र था। दुर्घटना की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है। रांची में शोक की लहर है। परिजनों के अनुसार, पीयूष बचपन से ही एविएशन क्षेत्र में करियर बनाना चाहता था और अपने सपनों को साकार करने के लिए वह दक्षिण अफ्रीका गया था। भारतीय दूतावास ने पीयूष का पार्थिव शरीर भारत लाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। संभावना है कि कुछ ही दिनों में अंतिम संस्कार के लिए उसका शव रांची लाया जाएगा।

## नशा मुक्ति पर डालसा ने किया टॉरियन वर्ल्ड स्कूल के बच्चों को जागरूक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रांची :** झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार(झालसा) के निर्देश पर न्यायायुक्त के मार्गदर्शन में टॉरियन वर्ल्ड स्कूल, तुपुदाना, में छात्र-छात्राओं के लिए डॉन अभियान के तहत नशा मुक्ति पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को किया गया। लाइफ सेवर्स के अतुल गेरा, एलएडीसीएस डिपूटी चीफ राजेश कुमार सिन्हा और एनसीबी के आनंद, मनोहर मंजूल, सीआईडी के एसआई रिजवान अंसारी, ड्रग्स कन्ट्रोल विभाग के स्वपनिल निखिल, रोटरी क्लब से, रथिन भद्र, पीएलवी पीके उपाध्याय, भारती शाहदेव, पिंकू कुमारी, टॉरियन वर्ल्ड स्कूल की शिक्षक-शिक्षिकाएं, सहित अन्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में

एलएडीसीएस अधिवक्ता राजेश कुमार सिन्हा ने कहा कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 47 राज्य को निर्देशित करता है कि वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मादक पेय और नशीली दवाओं के सेवन को औषधीय उद्देश्यों को छोड़कर, समाप्त करने का प्रयास करेगा। अफीम या पोस्ता के उत्पादन या कब्जे पर एनडीपीएस अधिनियम 1985 के तहत मात्रा के आधार पर 20 साल तक के कठोर कारावास और दो लाख रुपए के जुमार्ने की सजा हो सकती है। उन्होंने कहा कि बार-बार अपराध करने पर मृत्युदंड तक दिया जा सकता है। कांके के पुनर्वास केंद्रों के साथ-साथ एनजीओ भी नशा करने वालों को ठीक करने में मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि सीआईपी और रिनपास में जिला विधिक सेवा प्राधिकार का लिगल एड क्लिनिक है, जहां वैसे नशा करनेवाले व्यक्तियों को ईलाज किया जाता है। इसमें जिला विधिक सेवा प्राधिकार सहायता देती है। सिन्हा ने नालसा टॉल फ्री नम्बर के बारे में भी जानकारी दी।

**छात्र-छात्राओं को जागरूक करना बेहद जरूरी : गेरा**

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतुल गेरा ने बताया कि नशा हमारे देश को कैसे खोखला कर रहा है और नशा से बचने के लिए छात्र-छात्राओं को जागरूक करना बेहद जरूरी है। नशा के पेडलर युवक और छात्रों को इस व्यवसाय में आसानी से उपयोग करते हैं, जिससे हमलोगों को सचेत रहना होगा। एनसीबी के मनोहर मंजूल ने कहा कि झारखंड में इस नशे की समस्या को रोकने के लिए नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्?होंने कहा कि हगृह मंत्रालय ने पिछले महीने मादक द्रव्यों के सेवन से संबंधित किसी भी संदेह की जानकारी देने के लिए आम जनता के लिए मानस हेल्पलाइन (टोल फ्री नं. 1933) स्थापित की है। वहीं सीआईडी के रिजवान अंसारी ने मादक पदार्थों की तस्करी से संबंधित जानकारी दी और मादक पदार्थों की तस्करी में बच्चों और युवकों को कैसे उपयोग में लिया जा रहा है। इससे बचने के लिए उन्होंने छात्रों को बताया।

## एक नजर

### जनता दरबार में डीसी ने लोगों की समस्या का त्वरित किया समाधान

**रांची :** समाहरणालय में आयोजित जनता दरबार में उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री ने बड़ी संख्या में लोगों की शिकायतें सुनी और तुरंत कार्रवाई की। चार दिन से बीमार अपनी बेटी के इलाज के लिए आई महिला वीणा देवी की फरियाद पर उपायुक्त ने सिविल सर्जन से बात कर बच्ची का आयुष्मान कार्ड बनवाया और उपचार शुरू करवाया। मांडर प्रखंड की महिलाओं ने सेविका पर गड़बड़ी और रिश्वत का आरोप लगाया। उपायुक्त ने सेविका को शोकॉज करने और मामले की पूरी जांच करवाने का निर्देश दिया। अनगड़ा प्रखंड में खाते में सुधार न करने पर सीओ और कर्मचारियों को शोकॉज करने के आदेश भी दिए गए। पिठोरिया से घरेलू हिंसा का मामला आने पर चौकीदार का वेतन रोका गया। बुंडू के छात्र की जन्मतिथि में गलती के कारण परीक्षा फॉर्म नहीं बन पा रहा था, उसे विशेष अनुमति से हल किया जाएगा। मृत्यु प्रमाण पत्र न बन पाने की शिकायत पर उपायुक्त ने संबंधित पदाधिकारी को दिशा-निर्देश दिए भूमि विवाद, नामांतरण और सीमांकन से जुड़ी शिकायतों का समाधान कराने के लिए उपायुक्त ने अंचल अधिकारियों को तुरंत कार्रवाई का निर्देश दिया और लापरवाही पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

### अबुआ आजीविका संवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन

**रांची :** राज्य में महिलाओं की आत्मनिर्भरता को नई दिशा देने के लिए स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल डेवलपमेंट, रांची में जेएसएलपीएस और नाबार्ड के संयुक्त तत्वावधान में अबुआ आजीविका संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह ने की। इस अवसर पर ग्रामीण विकास विभाग के सचिव के. श्रीनिवासन, जेएसएलपीएस के सीईओ अनन्य मित्तल और नाबार्ड की सीजीएम दीपमाला घोष भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न जिलों से आई ग्रामीण महिला उद्यमियों से संवाद स्थापित कर उनकी उपलब्धियों, चुनौतियों और अपेक्षाओं को समझना था। मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह ने कहा कि ग्रामीण महिलाएं आज आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश कर रही हैं। उन्होंने कहा, पलाश मार्ट की सफलता के बाद अब सरकार ह्यपलाश हाट की अवधारणा पर काम कर रही है, ताकि महिला उद्यमियों को बड़े बाजार तक पहुंच मिल सके। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि सरकार अवसंरचना, विपणन और बैंकिंग सुविधाओं में सुधार के लिए ठोस कदम उठाएगी। ग्रामीण विकास सचिव के. श्रीनिवासन ने बताया कि स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं संगठित होकर वित्तीय अनुशासन और उद्यमिता दोनों को मजबूत कर रही हैं।

### असहाय मंदबुद्धि व्यक्ति को लाया गया सद्गुरु कृपा आश्रम

**रांची :** सद्गुरु कृपा अपना घर आश्रम पुंदाग में सोमवार को फुटपाथ में भटक रहे एक मंदबुद्धि मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति को आश्रम में लाया गया। यह जानकारी संस्था के प्रवक्ता संजय सर्राफ ने सोमवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए दी। उन्होंने बताया कि आश्रम की टीम को सूचना मिली कि हेहल बुकरू में एक लावारिस अवस्था में मंदबुद्धि व्यक्ति घूम रहा है। आश्रम की टीम ने उसे बुकरू में जाकर वहां से रेस्क्यू करके आश्रम लाया। उन्होंने बताया कि मानव सेवा से बढ़कर कोई कार्य नहीं है। इसलिए इस तरह के कार्य किए जाते हैं। अब सद्गुरु कृपा अपना घर आश्रम में 40 दिव्यांग निराश्रितों की समुचित देखभाल और सेवा की जा रही है। आश्रम में नए मेहमान के आने के बाद निराश्रितों की संख्या 41 हो गई।

## संक्षिप्त खबरें

### बीआईटी मेसरा का 35वां दीक्षांत समारोह में इसरो अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन होगे मुख्य अतिथि

**रांची :** बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान (बीआईटी), मेसरा अपने 35वें दीक्षांत समारोह का आयोजन 15 अक्टूबर को करने जा रहा है, जिसमें विभिन्न विषयों के स्नातकों को उनके पेशेवर सफर की शुरूआत के लिए सम्मानित किया जाएगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष डॉ वी. नारायणन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। डॉ वी. नारायणन का संबोधन नवोदित पेशेवरों को अपने करियर के दौरान उत्कृष्टता, निष्ठा और उद्देश्यपूर्ण नेतृत्व के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगा, जिससे विकसित भारत के महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण में योगदान मिलेगा। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम परिसर में पूरी भव्यता के साथ आयोजित किया जाएगा, जिसमें स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट और डिप्लोमा कार्यक्रमों में 1,600 से अधिक छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की जाएगी। इसके अलावा, संस्थान के कुलाधिपति और सीके बिरला समूह के अध्यक्ष श्री सीके बिरला भी सभा को संबोधित करेंगे। उनके ज्ञानवर्धक शब्द छात्रों को नए मानक स्थापित करने और संस्थान में अर्जित मूल्यों का उपयोग करके समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करेंगे। संस्थान के कुलपति, प्रोफेसर इंद्रनील मन्ना, वार्षिक रिपोर्ट भी प्रस्तुत करेंगे, जिसमें अनुसंधान, उद्योग सहयोग और वैश्विक शैक्षणिक साझेदारियों में बीआईटी मेसरा की हालिया उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जाएगा। संस्थान का 35वां दीक्षांत समारोह एक उल्लेखनीय आयोजन होने का वादा करता है, जो न केवल छात्रों के असाधारण शैक्षणिक प्रदर्शन का जश्न मनाएगा, बल्कि वैज्ञानिक नवाचार, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व से परिभाषित भविष्य की नींव भी रखेगा।

### एसबीयू में फ्रेशर्स डे की धूम, विद्यार्थियों ने जमकर की मस्ती

**अनगड़ा :** सरला बिरला विश्वविद्यालय में नवागत विद्यार्थियों के लिए विभिन्न विभागों द्वारा फ्रेशर्स डे का आयोजन किया गया। आयोजन तीन दिनों तक चला। इस अवसर पर हर्षोल्लास और मस्ती के बीच सीनियर विद्यार्थियों ने अपने जूनियर्स का स्वागत किया। रंग-बिरंगे परिधानों में छात्र-छात्राओं ने मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस दौरान ऊर्जावान पारंपरिक और आधुनिक संगीत के संग नृत्य और फैशन शो की भी धूम रही और विद्यार्थियों ने जमकर मस्ती की। इस मौके पर विभिन्न विभागों के मिस्टर और मिस फ्रेशर भी चुने गये। विवि के माननीय महानिदेशक प्रो गोपाल पाठक ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन में कहा कि अनुशासन ही जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी होती है। अतएव विद्यार्थी अनुशासन को आत्मसात करते हुए लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें। माननीय कुलपति प्रो सी जगनाथन ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण एवं सहायक होते हैं तथा इससे आत्मविश्वास, टीम भावना और नेतृत्व कौशल का समग्र विकास होता है। इस आयोजन के अवसर पर एसबीयू के विभिन्न विभागों के शिक्षकगण उपस्थित रहे। विवि के माननीय प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान एवं राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप कुमार वर्मा ने फ्रेशर्स डे के आयोजन पर हर्ष व्यक्त करते हुए नवागत विद्यार्थियों को शुभकामना संदेश प्रेषित किया है।

### दशम फॉल में मधुबनी का युवक बहा, दोस्तों के साथ गया था घूमने

**रांची :** दशम फॉल में बीते शाम एक बड़ा हादसा हो गया। मिली जानकारी के अनुसार दशम फॉल में युवक की डूबने से जान चली गयी। मृतक की पहचान 37 वर्षीय रोशन कुमार पिता दिनेश ठाकुर के रूप में हुई है। मृतक मूल रूप से बिहार के मधुबनी के कालिका रामनगर का रहने वाला था। और फिलहाल पिस्का मोड़ के पंडरा स्थित रवि स्टील में काम करता था। घटना उस वक्त हुयी जब युवक बीते रविवार की शाम 3 :30 बजे अपने पांच दोस्तों के साथ स्कॉर्पियो से दशम फॉल घुमने गया था। और नहाने के दौरान रोशन चट्टान फांदकर फॉल से लगभग एक किलोमीटर ऊपर निर्जन इलाके की ओर चला गया। जब काफी देर तक वह नहीं लौटा तो दोस्तों ने वहां तैनात पर्यटक मित्रों को सूचना दी। खोजबीन में सहनीय लोगों ने बताया कि युवक चट्टान पार कर लौटते समय पैर फिसलने से पानी के तेज बहाव में बह गया। सूचना मिलते ही दशम फॉल के थाना प्रभारी प्रशांत गौरव अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी। जिसमें बीती रात तक भी युवक का कुछ पता नहीं चल सका था। रात हो जाने के कारण पुसली ने जांच रोक दी और कहा कि अगली सुबह खोजबीन दोबारा कि जाएगी।

### कुड़मियों को एसटी का दर्जा मिला तो होगा उग्र आंदोलन : अजय तिर्की

**रांची :** आदिवासी अस्तित्व बचाओ मोर्चा के संयोजक अजय तिर्की ने सिरमटोली सरना स्थल में कहा कि जब-जब कुड़मी एसटी का स्टेटस मांगेगा, तब-तब आदिवासी विद्रोह करने के लिए सड़क पर उतरेंगे। आदिवासी समाज अपने अस्तित्व से समझौता नहीं करता है। आदिवासी समुदाय शुरू से आंदोलनकारी है। आदिवासी समाज 2018 से ही कुड़मी को एसटी सूची में शामिल करने का विरोध करता आ रहा है। कुड़मी आदिवासी बनने के लिए कोई भी मापदंड पूरा नहीं करता है। अगर केंद्र सरकार ने कुड़मी को एसटी दर्जा दिया, तो यह आंदोलन शांतिपूर्ण स्थान पर उग्र रूप ले लेगा। सामाजिक कार्यकर्ता ग्लैडसन डुंगडुंग ने कहा कि प्रसिद्ध एथ्रोलॉजिस्ट एसी रॉय और ईटी डॉल्टन ने अपने शोध में स्पष्ट रूप से लिखा है कि कुड़मी समुदाय मूल रूप से प्रवासी है। वे महाराष्ट्र से आए है। इन लोगों ने मुंडाओं के गांवों पर कब्जा किया। वे मुंडाओ के गांव में हातु मुंडा बन गए। ग्लैडसन ने बताया कि डिस्ट्रिक्ट ऑफ बंगाल नामक पुस्तक में सोनाहातु स्थित चोकाहातु का उल्लेख झारखंड के सबसे बड़े ससन दीरी (मुंडाओं का पारंपरिक समाधि स्थल) के रूप में किया गया है। जब सोनाहातु क्षेत्र में मुंडाओं की संख्या कम है, तो यहां सबसे बड़ा ससन दीरी क्यों है? उन्होंने कहा कि दरअसल, यह इस बात का प्रमाण है कि अतीत में यह इलाका मुंडाओं का प्रमुख निवास क्षेत्र रहा होगा। बाद में प्रवासी समुदायों ने मुंडाओ को भगाकर अपना गांव बना लिए ग्लैडसन के अनुसार, एसी रॉय और ईटी डॉल्टन दोनों ने अपने अध्ययन में लिखा है कि मानभूम क्षेत्र में जहां-जहां कुड़मी बसते गए, वहां संथाल, मुंडा, उरांव और खड़िया को भगाते गए। जहां पत्थलगड़ी है वहां की पहचान और संस्कृति का प्रतीक है। कुड़मी समुदाय ने मुंडाओं के गांवों में बसकर इस परंपरा को अपनाया, लेकिन इसका मूल स्वामित्व मुंडाओं का ही है।

## एक नजर

### चंदनकियारी में शराबबंदी की मांग को लेकर महिलाओं ने निकाला जुलूस

**बोकारो** : झारखंड में बोकारो जिले के चंदनक्यारी प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में यहां के सैकड़ो महिलाओं ने आज शराब बंदी की मांग को लेकर जुलूस निकाला। पुलिस सूत्रों ने बताया कि इस इलाके में अवैध शराब की बिक्री और अवैध शराब बनाई जा रही है । इसके खिलाफ महिलाओं ने जुलूस निकालकर नाराजगी व्यक्त की। महिलाओं का कहना है कि इस इलाके में अवैध शराब बनाने का कई मिनी फैक्ट्री चलाया जा रहा है और इसकी बिक्री प्रत्येक गली मोहल्ले में की जा रही है, इसके बावजूद आबकारी विभाग और पुलिस के लोग इसके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करते। अवैध शराब बिक्री के कारण लोग काफी परेशान है। चास मुफस्सिल थाना क्षेत्र के निश्चितपुर और इस इलाके में भी अवैध शराब की बिक्री की जा रही है। स्थानीय लोगों ने चास मुफस्सिल थाना को कई बार शिकायत की इसके बावजूद यहां अवैध शराब की बिक्री की जा रही है। जुलूस में शामिल महिलाओं ने अवैध शराब बिक्री के कई केंद्रों पर धावा बोला और शराब को नष्ट कर दिया । महिलाओं ने अवैध शराब निर्माण के कई भट्ठियों पर भी धावा बोलकर अवैध शराब निर्माण से संबंधित सामग्रियों को नष्ट किया। पुलिस ने बताया कि इस इलाके में अवैध शराब बिक्री और बनाने जाने के खिलाफ कई कार्रवाई की गई है, इसके बावजूद लोग शराब बनाकर बिक्री कर रहे हैं । पुलिस इसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगी।

### उत्कृष्ट कार्य के लिए रेलवे के 30 कर्मियों को मिला संरक्षा पुरस्कार

धनबाद: धनबाद मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में सोमवार को धनबाद में संरक्षा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर धनबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक अखिलेश मिश्र ने मंडल के 30 कर्मचारियों को अगस्त 2025 माह में उनकी ओर से किये गए उत्कृष्ट कार्य के लिए संरक्षा पुरस्कार दिया गया। इन कर्मचारियों ने धनबाद मंडल के विभिन्न खण्डों में रेल फ्रैक्चर, हॉट एक्सल और अन्य संरक्षा संबंधी कार्यों का पता लगाया जिससे रेल परिचालन में आने वाली समस्या और दुर्घटनाओं को टला गया। इस अवसर पर मंडल के अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

# राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत एएनएम के प्रथम बैच का प्रशिक्षण प्रारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**कोडरमा** : राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत एएनएम के प्रथम बैच का प्रशिक्षण जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी, कोडरमा डॉ. रमण कुमार द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण की शुरूआत करते हुए डॉ. रमण कुमार ने कहा कि सामान्यतः बीमारियों को दो वर्गों में बांटा जाता है संक्रामक और गैर-संक्रामक, जिसमें कुष्ठ रोग एक संक्रामक बीमारी है। यह बीमारी धीरे-धीरे विकसित होती है और अक्सर अपने अंतिम चरण में पहचान में आती है, इसलिए जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि कुष्ठ रोग का संक्रमण खांसने या छींकने से फैलता है, इसलिए सभी एएनएम अपने क्षेत्र में इलाजरत

कुष्ठ रोगियों के संपर्क में आए व्यक्तियों की पहचान करें, उनकी जांच करें, और उन्हें सिंगल डोज रिफैम्पिसिन की दवा दें, ताकि संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। डॉ. रमण ने संक्रमण और रोग के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया कि जब जीवाणु शरीर में प्रवेश करता है, तो वह संक्रमण कहलाता है, और जब उसके लक्षण प्रकट होते हैं, तब वह रोग बन जाता है। उन्होंने कहा कि कुष्ठ रोग को प्रारंभिक चरण में पहचानकर विकलांगता से बचा जा सकता है।

**राज्य स्तरीय प्रशिक्षक काशीनाथ चक्रवर्ती, उइफ समन्वयक, ठछफ ने कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य बताए:**

कुष्ठ रोग के आरंभिक लक्षणों और चिन्हों के प्रति जागरूकता बढ़ाना रोग के बारे में फैले भ्रम को दूर करना सभी स्वास्थ्य केंद्रों में मुफ्त उपचार की सुविधा सुनिश्चित करना

रोगियों को इलाज हेतु प्रेरित करना प्रत्येक स्वास्थ्यकर्मी को कुष्ठ रोग की संपूर्ण जानकारी देना रोगियों का पूरा इलाज सुनिश्चित करना श्री चक्रवर्ती ने कुष्ठ रोग के लक्षण, उपचार और विकलांगता से बचाव के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। फिजियोथैरेपिस्ट राजीव रंजन ने बताया कि एएनएम का प्रशिक्षण 13 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2025 तक चलेगा। इसके पश्चात 16 और 17 अक्टूबर को कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर का प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा। आज कोडरमा प्रखंड की कुल 47 एएनएम ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

डॉ. रमण कुमार ने यह भी जानकारी दी कि लेप्रोसी केस डिटेक्शन कैंपेन का आयोजन 10 नवंबर से 26 नवंबर 2025 तक किया जाएगा, जिसमें एएनएम को सहिया टीम का सुपरविजन करना है। इस अवसर पर राज्य स्तरीय कुष्ठ प्रशिक्षक काशीनाथ चक्रवर्ती, डॉ. मनोज कुमार, फिजियोथैरेपिस्ट राजीव रंजन, चिकित्सा सहायक श्यामाकांत, अजीत कुमार, कुणाल, अरुण सिंह समेत कई अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित थे।

## डीवीसी केटीपीएस अस्पताल में व्यावसायिक स्वास्थ्य केंद्र का हुआ उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**कोडरमा** : डीवीसी केटीपीएस हॉस्पिटल/डिस्पेंसरी में व्यावसायिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन मनोज कुमार ठाकुर, मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रमुख, डीवीसी केटीपीएस द्वारा किया गया। इस अवसर पर मानस कुमार मोंडल, वरिष्ठ महाप्रबंधक , मानस नस्कर, महाप्रबंधक, केटीपीएस फेज-क्क तथा बीएचईएल एवं डीवीसी के अधिकारीगण उपस्थित थे। नव उद्घाटित व्यावसायिक स्वास्थ्य केंद्र का संचालन बीएचईएल द्वारा किया जाएगा, तथा डॉक्टर की परामर्श सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। इस कार्यक्रम का सफल समन्वय डॉ. ए. एम. मिश्रा, उप महाप्रबंधक द्वारा किया गया। यह पहल डीवीसी केटीपीएस में स्वास्थ्य सेवा एवं कार्यस्थल सुरक्षा को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

## केंद्रीय अध्यक्ष गुलाम मुस्तफा ने जिला के पंचायत छतरबर स्थित केंद्रीय कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**कोडरमा** : आपकी विकास पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष गुलाम मुस्तफा ने कोडरमा जिला के पंचायत छतरबर स्थित केंद्रीय कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर जानकारी देते हुए बताया की आपकी विकास पार्टी लगातार जिस तरह से क्षेत्र और राज्य में अपनी बेबाक अंदाज में गरीबों के हितों की आवाज को उठाए जाने को लेकर जानी जाती रही है। इस कारण लगातार लोग प्रभावित होकर आपकी विकास पार्टी से जुड़ते चले जा रहे हैं। वही इसी कडी में आपकी विकास पार्टी का काफी संख्या में लोगों ने दामन थामा है। उनमें से आजसू छोड़ रामलाल सोरेन, अनिल कसेरा, मोहम्मद यूसुफ, जबकि जेएमएम से मोहम्मद शमीम, कॉंग्रेस पार्टी से अनिल कसेरा ने आपकी

विकास पार्टी का दामन थामा हैं। साथ ही उन्होंने झारखंड की घाटशिला विधानसभा सीट पर उपचुनाव में अपनी आपकी विकास पार्टी से अपने उम्मीदवार के तौर पर दुखी राम मांडी जो झारखंड आंदोलनकारी भी हैं उनके नाम की घोषणा किये हैं। बताते चले की दुखी राम मांडी पूर्व में भी अपने घाटशिला सीट से विधानसभा चुनाव निर्दलीय तौर पर लड चुके हैं। वही इस दौरान दुखी राम मांडी ने बताया की आपकी विकास पार्टी के द्वारा और उनके केन्द्रीय अध्यक्ष गुलाम मुस्तफा के द्वारा जो विश्वास भरोसा जतायी गई हैं। उसपर खरा उतरने का कार्य करेंगे। जनता के हक अधिकार को जीतकर दिलाना सुनिश्चत करेंगे। साथ ही केंद्रीय अध्यक्ष गुलाम मुस्तफा ने झारखंड सरकार को चेताते हुए कहा की बिहार मदरसा बोर्ड अधिनियम 1981 के तर्ज. पर उस्तानियां, फुरकानियां आलिम ओर फाजिल जैसे परीक्षायों को झारखंड में खअउ बोर्ड के द्वारा संचालित किया जाता आ रहा है।

इसकी मान्यता झारखंड कर्मचारी चयन आयोग वर्षों से दिए हैं तो आखिर अब क्यों नहीं। जवाब दे झारखंड सरकार अन्यथा आपकी विकास पार्टी सड़क से लेकर सदन तक आंदोलन करेगी।

# रेलवे स्टेशन पर बाल मजदूरी के लिए ले जाए जा रहे 6 बच्चों का रेस्क्यू, दो तस्कर पकड़े गये

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो** : रेलवे स्टेशन पर बाल मजदूरी के खिलाफ चलाए गए एक संयुक्त रेस्क्यू अभियान में 6 नाबालिग बच्चों को तस्करों के चंगुल से बचाया गया। ये सभी बच्चे वास्को डी गामा साप्ताहिक एक्सप्रेस (ट्रेन नंबर 17322) से सिकंदराबाद ले जाए जा रहे थे। जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन और सहयोगिनी संस्थाओं ने रेलवे सुरक्षा बल , राजकीय रेलवे पुलिस और चाइल्ड लाइन के सहयोग से यह अभियान चलाया। सूचना के अनुसार, ट्रेन जसीडीह से चली थी और इसमें कुल 16 बच्चों के साथ 2 तस्कर सवार थे, जिन्हें बाल मजदूरी कराने के लिए सिकंदराबाद ले जाया जा रहा था। बोकारो स्टेशन पर चलाए गए इस अभियान में 6 बच्चों को सफलतापूर्वक रेस्क्यू कर लिया गया। रेस्क्यू के दौरान बच्चों के साथ सफर कर रहे दो तस्करों को भी गिरफ्तार किया गया। इनमें से एक तस्कर की पहचान धर्मेंद्र मांझी के रूप में हुई है। सभी बच्चों को तस्कर द्वारा बहला-फुसलाकर बाल मजदूरी के लिए ट्रैफिक किया गया था। इस सफल रेस्क्यू अभियान में जीआरपी के अंजनी कुमार स्टेशन प्रबंधक, बोकारो रेलवे स्टेशन अजय नाथ हालदार, आरपीएफ के अरुणा उरांव, धर्मेंद्र कुमार, दिनेश कुमार साव, चाइल्ड लाइन के विष्णु कुमार, राहुल कुमार महतो, जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन तथा सहयोगिनी के रवि कुमार, अनिल कुमार हेंब्रम शामिल थे। रेस्क्यू किए गए बच्चों को आगे की कानूनी प्रक्रिया और पुनर्वास के लिए चाइल्ड वेलफेयर कमेटी बोकारो के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

## स्वयंसेवकों द्वारा पथ संचलन एवं विजयादशमी उत्सव कार्यक्रम खंड के परसाबाद मंडल में हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जयनगर : प्रखंड में संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा पथ संचलन एवं विजयादशमी उत्सव कार्यक्रम जयनगर खंड के परसाबाद मंडल में आयोजन किया गया। पथ संचलन का आयोजन दुर्गा मंदिर के प्रांगण से होते हुए स्टेशन रोड़ और पुनः परसाबाद बाजार होते हुए कटिया श्रीराम जानकी मन्दिर में संपन्न हुआ। सैकड़ों की संख्या में गणवेशधारी स्वयंसेवक घोष वादकों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे, घोष नाद से पूरा आसमान गुन्जायमान था। पूरे रास्ते में जगह-जगह मातृशक्ति, दुगार्वाहिनी एवं नागरिक बंधुओं ने पुष्प वर्षा कर स्वयंसेवकों का स्वागत किया।समापन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विभाग के विभाग संघचालक सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि संघ की स्थापना 1925 में आद्य सरसंघचालक डॉ. केशव

बलिराम हेडगेवार ने हिन्दू समाज के संगठन के कार्य को लेकर स्थापना किया। स्वयंसेवक नित्य प्रतिदिन एक घन्टे की शाखा में आकर व्यक्ति निर्माण और राष्ट्र निर्माण का कार्य करते हैं। संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है। शताब्दी वर्ष में संघ एक वर्ष तक समाज के बीच विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन करने वाला है। संघ ने पंच परिवर्तन के माध्यम से समाज में बदलाव की बात किया है, जिसमें सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्व का बोध और नागरिक कर्तव्यों का पालन के भाव को आत्मसात करना आदि के विचार समाज को सुसंगठित करना है।

## दलित उत्पीड़न और न्याय की मांग को लेकर विशाल प्रतिवाद मार्च

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**झुमरीतिलैया** : झुमरीतिलैया में उत्पीड़न संघर्ष समिति के बैनर तले एक विशाल प्रतिवाद मार्च निकाला गया। यह मार्च सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई पर जूता फेंकने की घटना और सतगावा में दलितों पर हुए पुलिसिया हमले के विरोध में आयोजित किया गया। समिति ने इस घटना को लोकतंत्र और सामाजिक न्याय पर हमला बताते हुए न्याय की मांग की। मार्च की शुरूआत सुभाष चौक से हुई, जो अंबेडकर चौक होते हुए शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरता हुआ श्रम कल्याण मैदान तक पहुंचा। इस दौरान सैकड़ों लोगों ने नारे लगाते हुए पुलिस प्रशासन और केंद्र सरकार के रवैये पर तीखा विरोध जताया। दलितों पर अत्याचार बंद करो, न्याय दो, अन्याय रोको जैसे नारों से पूरा शहर गूंज उठा। मार्च के दौरान सामाजिक

संगठनों, छात्र समूहों और आम नागरिकों ने भी अपनी भागीदारी निभाई। मार्च में शामिल लोगों ने कहा कि देश में न्याय की आवाज उठाने वालों को दबाने की कोशिश हो रही है, जिसे अब जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। मौके पर जिला अध्यक्ष इंद्रदेव राम की अध्यक्षता में एक सभा की गई जहां वक्ताओं ने सरकार से मांग की सतगावां कांड के दोषी पुलिसकर्मियों पर तुरंत कार्रवाई की जाए और पीड़ित परिवारों को सुरक्षा दिया जाए। सभा में संविधान की मयार्दा और सामाजिक समानता की रक्षा करने का संकल्प लिया गया।

# जल जीवन मिशन के तहत जल गुणवत्ता और अनुश्रवण पर प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**जयनगर/कोडरमा** : जयनगर प्रखंड सभागार मेंसोमवार को जल जीवन मिशन के अंतर्गत जल गुणवत्ता एवं अनुश्रवण से संबंधित प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी गौतम कुमार ने की। इस अवसर पर पशुपालन पदाधिकारी डॉ. शोएब खान, बीपीआरओ प्रेम कुमार, Aspirational Block Fellowअशोक कुमार, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से कनीय अभियंता ओम प्रकाश, केमिस्ट रामपुकार प्रसाद, वाटर क्वालिटी मैनेजर पंकज कुमार एवं प्रखंड वाश समन्वयक रोहित दास उपस्थित थे। कार्यशाला के दौरान प्रखंड विकास

पदाधिकारी गौतम कुमार ने उपस्थित जलसहिया दीदियों को संबोधित करते हुए कहा कि जल हमारे जीवन का आधार है, इसके संरक्षण और गुणवत्ता बनाए रखना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। स्वच्छ जल ही स्वस्थ जीवन की कुंजी है। उन्होंने जल परीक्षण, स्रोत संरक्षण एवं समुदाय स्तर पर जनजागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं, विभाग से उपस्थित केमिस्ट रामपुकार प्रसाद ने जल जांच की प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और जलसहिया दीदियों को पानी की गुणवत्ता जांचने के विभिन्न तरीकों की जानकारी दी। कार्यक्रम में जलसहिया रूबी राणा, पिंकी देवी, कविता देवी, चमेली देवी, विद्या देवी, रूबी देवी सहित अन्य कई जलसहिया दीदियां उपस्थित रहीं और प्रशिक्षण से लाभान्वित हुईं। कार्यशाला का उद्देश्य जल गुणवत्ता की निगरानी को सशक्त बनाना और गांव स्तर पर सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के प्रयासों को गति देना था। कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और सभी प्रतिभागियों ने जल संरक्षण व गुणवत्ता बनाए रखने का संकल्प लिया।

## संक्षिप्त खबरें

### नावाडीह मे जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट एक व्यक्ति घायल

**मरकच्चो** : मरकच्चो थाना क्षेत्र अंतर्गत नावाडीह पंचायत निवासी शंकर वर्मा ने मरकच्चो थाना में मारपीट कर घायल कर देने को लेकर आधा दर्जन लोगों पर आरोप लगाते हुए आवेदन देकर मामला दर्ज कराया है। दिए गए आवेदन में शंकर वर्मा ने कहा कि मौजा नावाडीह खाता नम्बर 84, प्लॉट 668 मधे रकवा 31.5 डिसमिल जमीन है । इस जमीन के विरुद्ध न्यायालय में मामला लंबित चल रहा है। जो 9/10/25 को एलआरडीसी कोडरमा न्यायालय में बहस होना था जो विपक्षी लोग नहीं पहुंचने की वजह से बहस नहीं हुई। वहीं 11/ 10/ 2025 को नाजायज मजमा बनाकर उक्त जमीन पर नारायण कुशवाहा, महेंद्र कुशवाहा, मेघलाल कुशवाहा तीनों के पिता स्वर्गीय जीतलाल वर्मा, किशोर वर्मा ,विकास वर्मा दोनों के पिता चोलो महतो ने जेसीबी मशीन लगवाकर जमीन की खुदाई कर रहा था। जब मुझे पता चला तो मैं मना करने के लिए जेसीबी मशीन के चालक के पास गया। इसके बाद उक्त लोगों के द्वारा मेरे ऊपर तेज धार हथियार से वार कर दिए जिससे मैं जख्मी हो गया। इसकी खबर हमारे घर वाले को हुआ इसके बाद मेरे भाई और मेरी पत्नी घटना स्थल पर पहुंची। जिस पर रुबिया देवी, आरती देवी, बबीता देवी व रेखा देवी ने ईटा पत्थर से मेरी पत्नी और मेरे भाईयो के ऊपर वार कर दिए जिससे उन्हें भी गंभीर रूप से चोट आई है। इस दरमियान उक्त लोगों ने कहा कि अगर इस जमीन पर दोबारा चढ़ोगे तो जान से मार कर फेंक देंगे। वहां से हम लोग किसी तरह से जान बचाकर भागे। वही आवेदन के आलोक में मरकच्चो थाना में मामला दर्ज कर लिया गया है।

### आरपीवाई बीएड कॉलेज में एकदिवसीय ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का हुआ आयोजन

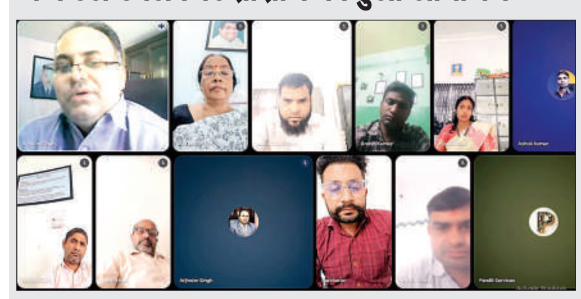

**कोडरमा** : रमेश प्रसाद यादव शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में दिनांक सोमवार को महाविद्यालय के आइक्यूएसी के तत्वावधान में एकदिवसीय ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसका विषय आईसीटी इंटीग्रेटेड क्लासरूम एंड टीचर्स इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी.ज 2020 था। कार्यक्रम में रिसोर्स पर्सन के रूप में डॉक्टर अरजिंदर सिंह, प्राचार्य इनोसेंट हार्ट कॉलेज ऑफ एजुकेशन जालंधर पंजाब शामिल थे। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती की वंदना से हुई। तत्पश्चात आइक्यूएसी समन्वयक सह सहायक प्राध्यापक राजेश पांडेय द्वारा रिसोर्स पर्सन का स्वागत व परिचय कराया गया। साथ ही कार्यक्रम का विषय प्रवेश कराया। रिसोर्स पर्सन ने कहा कि, एनईपी 2020 के तहत आईसीटी को एकीकृत करने और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम का होना आवश्यक है, जिसके तहत शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों, सॉफ्टवेयर और प्लेटफार्मों का उपयोग करके शिक्षण और सीखने के तरीकों को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षित होना होगा। इसका उद्देश्य शिक्षकों को सशक्त बनाना और उन्हें एनईपी 2020 के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके। शिक्षकों को एनईपी 2020 के उद्देश्यों और इसमें प्रौद्योगिकी के एकीकरण के महत्व को समझने की आवश्यकता है। शिक्षकों को अब वर्तमान परिपेक्ष्य के अनुसार नए डिजिटल उपकरणों, शैक्षिक सॉफ्टवेयर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अन्य प्रौद्योगिकी-आधारित माध्यमों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आगे आना होगा, ताकि इन तकनीकों को कक्षा में पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में एकीकृत करने में सक्षम बनाएं ताकि छात्रों के सीखने के अनुभव को बढ़ाया जा सके। आज आप देख रहे होंगें कि, हर विद्यालय आईसीटी लैब को स्थापित किया जा चुका है और किया जा भी रहा है। भारत सरकार डिजिटल पर ज्यादा फोकस भी कर रही है, जिससे भारत में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। इसलिए हम शिक्षकों को भी अब आगे आकर अपने आप को डेवलप करना है।

### मुहं के कैंसर का 92 प्रतिशत मुख्य कारण तम्बाकू होता है : जिला परामर्शी

**बोकारो** : सोमवार को डा0 अभय भूषण प्रसाद सिविल सर्जन बोकारो के आदेशानुसार राम विलास +2 उच्च विद्यालय एवं राजेन्द्र उच्च विद्यालय जारंगडीह बेरमो बोकारो में तम्बाकू के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करने हेतु सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को तम्बाकू से होने वाले जनित रोगों से अवगत कराया गया साथ ही सभी को तम्बाकू छोडने के परामर्शी सेवा के साथ साथ तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र में उपलब्ध सुविधाओं से अवगत कराया गया।
सोशल वर्कर छोटेलाल दास ने बच्चों को बताया कि खैनी का सेवन भी मुंह के कैंसर का कारण बनता है। झारखण्ड में कुल आबादी का लगभग 38.9 प्रतिशत लोग तम्बाकू किसी न किसी रूप में लेते हैं जिसमें 59.7 प्रतिशत पुरूष है और 17 प्रतिशत महिलायें है। 59.7 प्रतिशत पुरूष में 26 प्रतिशत लोग झारखण्ड में सिर्फ और सिर्फ खैनी का सेवन करते हैं जोकि मुंह के कैंसर का एक मुख्य कारण होते है। कार्यक्रम में स्कूल के प्राचार्य के साथं स्वास्थ्य विभाग के सोशल वर्कर छोटेलाल दास, दन्त सहायक विक्की कुमार एवं विद्यालय के शिक्षक, स्टाफ व बच्चे उपस्थित थे।

### प्रिंस खान गिरोह के 12 अपराधी गिरफ्तार, हथियार और बम बरामद

**धनबाद**: धनबाद पुलिस को एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। मोस्टवांटेड अपराधी प्रिंस खान गिरोह के 12 सदस्यों को पुलिस ने हथियार, बम और नकदी के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस की इस कार्रवाई से जिले में सक्रिय संगठित आपराधिक नेटवर्क को गहरा झटका लगा है। बताया गया कि प्रिंस खान और उसका गुर्गा सैफी उर्फ मेजर धनबाद के विभिन्न व्यवसायियों को फोन कर लगातार रंगदारी की मांग और जान से मारने की धमकी दे रहे थे। इन अपराधियों के आर्थिक स्रोतों का पता लगाने, शूटरों एवं समर्थकों के नेटवर्क को खत्म करने और हथियार खरीद-बिक्री चैनल को ध्वस्त करने के लिए धनबाद पुलिस विशेष अभियान चला रही थी। इसी दौरान 12-13 अक्टूबर की रात पुलिस को सूचना मिली कि प्रिंस खान गिरोह के सदस्य हथियारों से लैस होकर किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के इरादे से धनबाद पहुंचे हैं।

# अवैध अफीम की खेती रोकने के लिए जन संवाद कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सरायकेला :** जिला प्रशासन, सरायकेला-खरसावां द्वारा अवैध अफीम की खेती रोकने हेतु राज्य सरकार के निदेर्शानुसार दिनांक 03 अक्टूबर से 17 अक्टूबर, 2025 तक "Pre-Cultivation Drive"संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में सोमवार को चांडिल प्रखंड के हेसाकोचा पंचायत सचिवालय में उपायुक्त नितिश कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनायत की उपस्थिति में जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त सुश्री रीना हांसदा, अनुमंडल पदाधिकारी चांडिल विकास राय, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी चंडील, अंचल अधिकारी चंडील, थाना प्रभारी चौका, स्थानीय मुखिया, ग्राम प्रधान, मनकी-मुंडा एवं अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपायुक्त नितिश कुमार सिंह ने कहा कि अफीम की अवैध खेती न केवल गैरकानूनी है, बल्कि यह समाज, परिवार और विशेष रूप से युवाओं के भविष्य के लिए अत्यंत घातक है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे अफीम जैसी अवैध खेती छोड़कर खरीफ-रबी फसलों, बागवानी एवं फल-सब्जी की वैकल्पिक खेती अपनाएं। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा वैकल्पिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण एवं योजनागत सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशासन का उद्देश्य दंडात्मक कार्रवाई नहीं, बल्कि जागरूकता, आजीविका संवर्धन एवं सामाजिक सशक्तिकरण है। उपायुक्त ने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि यह इस बात का प्रतीक है कि पंचायत स्तर पर जागरूकता बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है – परिवार एवं समाज के समग्र विकास के लिए सभी की सक्रिय भागीदारी जरूरी है। उन्होंने उपस्थित जनों को सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से जुड़कर उनका लाभ लेने हेतु प्रेरित किया। पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनायत ने अफीम की अवैध खेती से संबंधित कानूनी प्रावधानों की जानकारी देते हुए कहा कि ऐसी खेती में संलिप्त पाए जाने पर 20 वर्ष तक के कारावास का प्रावधान है। उन्होंने अवैध खेती के कारण होने वाले वित्तीय, सामाजिक एवं पारिवारिक नुकसान, तथा युवाओं के अपराध के रास्ते पर भटकने के दुष्परिणामों पर विस्तार से चर्चा की।

## एक नजर

### संत माईकल +2 स्कूल, मुरी में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का हुआ आयोजन

**मुरी/सिल्ली :** अखिल विश्व गायत्री परिवार शांति कुंज हरिद्वार के तत्वाधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन संत माईकल +2 स्कूल, मुरी में किया गया।इस परीक्षा का उद्देश्य छात्रों को भारतीय संस्कृति के इतिहास, परंपराओं और मूल्यों से परिचित कराना है,ताकि वे चरित्रवान और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।इस परीक्षा में कक्षा पांचवीं से बारहवीं तक के बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।विद्यालय के निदेशक राकेश कुमार ने कहा कि इस तरह के परीक्षा छात्रों को अपनी संस्कृति के इतिहास मूल्यों और परंपराओं से जोड़ते हैं एवं इस तरह की परीक्षा विद्यालय में आयोजित करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार को धन्यवाद दिए। इस परीक्षा में टीम के संरक्षक की भूमिका विद्यालय के प्राचार्य सी. एल. प्रजापति ने निभाई तथा निरीक्षक के रूप में शिक्षिका मंजू कुमारी,ममता गोस्वामी, मनीषा सिंह एवं शिक्षक वी. वेंकट राव उपस्थित रहे।

### दीवाली-छठ पर शांति व्यवस्था को लेकर डीजीपी की हुई बैठक

**बोकारो:** झारखंड पुलिस महानिदेशक अनुराग गुप्ता ने सोमवार को फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज तथा प्रदेश के सभी चैंबर पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंस की। बैठक में दीपावली और छठ पूजा के मद्देनजर प्रदेश की विधि-व्यवस्था, साइबर क्राइम पर रोक, ट्रैफिक जाम सहित अन्य समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई। चास थाना परिसर के स्थानांतरण पर भी प्रस्ताव रखा गया।

## संक्षिप्त खबरें

### हजारीबाग रोड रेलवे फाटक पर मेंटेनेंस कार्य, यातायात सुगम रहा

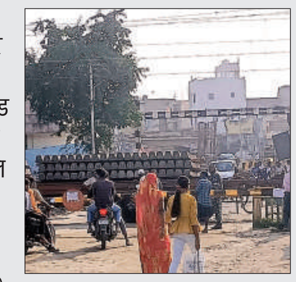

**सरिया :** रेलवे के पूर्व घोषित आदेश के अनुसार, सोमवार और मंगलवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक हजारीबाग रोड रेलवे फाटक बंद रहने की सूचना थी, जिसका व्यापक प्रचार सोशल मीडिया और समाचार पत्रों के माध्यम से किया गया था। इस घोषणा के बाद सड़कों पर अन्य दिनों की तुलना में कम भीड़ देखी गई। हालांकि, रेलवे के मेंटेनेंस कार्य के लिए निर्धारित समय में बदलाव हुआ और फाटक केवल दोपहर 2:15 से 3:15 बजे तक बंद रहा, जिसके कारण यातायात सामान्य रूप से चलता रहा। स्थानीय प्रशासन ने फाटक पर लगने वाले भीषण जाम से निपटने के लिए व्यापक सुरक्षा और यातायात व्यवस्था की थी। एसडीपीओ धनंजय राम के नेतृत्व में बगोदर बाजार, सरिया कॉलेज, डीएवी स्कूल के पास और बरमसिया चौक पर ट्रैफिक ब्लॉक लगाए गए। वाहनों को वैकल्पिक मार्गों से भेजा गया, जिससे सोमवार को जाम की समस्या नहीं हुई। हजारीबाग रोड वरीय अनुभाग के अभियंता आलोक कुमार ने बताया कि सोमवार को दोपहर 2:15 से 3:15 बजे तक रेलवे ट्रैक पर मेंटेनेंस कार्य किया गया। मंगलवार को भी फाटक पर मेंटेनेंस कार्य जारी रहेगा। प्रशासन की सतर्कता और रेलवे के समन्वय से यातायात सुगम रहा, जिससे स्थानीय लोगों को किसी बड़ी असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा।

## सीसीएल कर्मी के आश्रित को मिली नियोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो :** सीसीएल गोविंदपुर कोलियरी, कथारा में कार्यरत 42 वर्षीय बालगोविंद की रविवार की शाम ड्यूटी करके घर लौटते समय सड़क दुर्घटना मौत हो गई थी। यहां सीसीएल कथारा क्षेत्रीय अस्पताल में देर रात्रि तक मौजूद रहे। पूर्व विधायक डॉ लंबोदर महतो के पहल एवं श्रमिक यूनियन के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में क्षेत्रीय प्रबंधन ने मृतक की धर्मपत्नी नुनीबाला देवी को मंथली मॉनिटरी कंपशेसन एवं लाइव रोस्टर के तहत लगभग 13 वर्षीय पुत्र हुलास कुमार के 18 वर्ष पूरे होने पर नियुक्ति देने की मांग मान लिया। सोमवार को प्रबंधन की ओर से मौजूद एसओपी माधुरी मड़के स्वांग गोविंदपुर फेस टू के कार्मिक प्रबंधक संबिराज सिंह आदि अधिकारियों ने मंथली मॉनिटरी कंपशेसन देने, सीसीएल सिक्योरिटी प्रावधान के लाइव रोस्टर के तहत न्युक्ति देने , ईबीआरएफ राशि,एलसीएस राशि, ग्रेच्युटी राशि, पीएफ/ पेंशन की राशि भुगतान करने को लेकर लिखित समझौता हुआ। सोमवार को बोकारो थर्मल थाना की पुलिस ने मृतक के धर्मपत्नी आदि परिजनों से लिखित बयान लेने और कागजी प्रक्रिया पूरी करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडलीय तेनुघाट अस्पताल भेज दिया। परिजनों के अनुसार देर शाम पैतृक गांव गोनियाटो से बालगोविंद महतो के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया जाएगा। इधर इस घटना से मृतक कि धर्मपत्नी, तीन बेटियों सहित एक बेटे व अन्य परिवार के लोगों का रो रो कर बुरा हाल था।

## बीएसएल एडीएम ऑफिस के समीप विस्थापित संघर्ष मोर्चा का धरना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**बोकारो :** बीएसएल एडीएम ऑफिस के समीप टू टैंक गार्डन में सोमवार को विस्थापित संघर्ष मोर्चा और झारखंड नवनिर्माण सेवा के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय धरना आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कामरेड राम प्रसाद मुर्मू ने की, जबकि मुख्य वक्ता कामरेड गुलाब चंद्र रहे। धरना के दौरान चार सूत्री मांगों का स्मार पत्र अधिशासी निदेशक को सौंपा गया। मुख्य मांगों में विस्थापितों की बहाली, डीपीएलआर हेडाचेक, कैजुअल कर्मचारियों की नियुक्ति तथा विभागीय स्तर पर 20 हजार अशिक्षित, शिक्षित और प्रशिक्षित महिला-पुरुषों को योग्यता के आधार पर नियोजन शामिल है।कामरेड गुलाब चंद्र ने आरोप लगाया कि इन मांगों को पहले भी रखा गया था, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि तुरंत पहल नहीं की गई, तो आगामी 4 दिसंबर को बीएसएल एडीएम के सभी गेट जाम किए जाएंगे और आंदोलन निरंतर जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि यह संघर्ष तब तक चलेगा जब तक विस्थापितों को उनका अधिकार नहीं मिल जाता।धरना स्थल पर मौजूद सभी लोगों ने हाथ उठाकर 4 दिसंबर को गेट जाम आंदोलन में शामिल होने का संकल्प लिया। इस अवसर पर नसरुद्दीन अंसारी, इंद्र केवट, लाल बाबू अंसारी, असदुद्दीन अंसारी, परशुराम राय, रविंद्र टुडू, सी देवी, प्रतिमा देवी, रसमणि मांझी, लीला मनी देवी, मंजू देवी, सुखदेव मांझी, विनती देवी, दशरथ मांझी समेत अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।


**District Education Office Latehar**

**Very Short Tendar, FactSheet**

| Sl. | Particular | Details |
|---|---|---|
| a. | Name of the work | RequestforProposal(RFP)for"Installation, Commissioning and Maintenance ofARTIFICIAL INTELLEGANCE Labs"in selected govt. schools ofLatehar Latehar district". |
| b. | Availability of RFP document at | http://jharkhandtenders.gov.in |
| ` | Date of Issue ofRFP | 11 /10 /2025 |
| d. | Last Date forsubmission of Proposal | 21/10 /2025 at05:00PM |
| e. | Date of opening of Technical Proposal | 24/10/2025at11.00AM |
| f. | Date of opening of Financial Proposal | After technical Process |
| g. | Time allowed for completion | 60 daysfromthedateoftheworkorder. |
| h. | Earnestmoney deposit (EMD)(Refundable) | **INR-50,000/-(Rupees fifty thousandonly)Online** http://jharkhandtenders.gov.in |
| i. | Tender Fee | **Rs- 5000/- (Five thousand Rupees) Non-refundable** |
| L. | MethodofSelection | Cost-Based Selection (CBS) Method. Stage 1: The eligibility criteria documents, Bid Fee EMD submitted by the bidders will be evaluated in the first stage. The bidders meeting the technical evaluation criteria only will be shortlisted for further financial bid valuation. Stage 2: Out of the technically eligible bidders, the agency submitting the lowest financial bid will be awarded the project. The rates quoted by the agencies should be valid for 2 year from the issue of the RFP. |

"Note-All bidders are directed to paginate every page of the documents submitted in the Technical Bid and provide an index clearly mentioning the details of each page."

**District Education Officer Latehar**

PR 364035 Human Resource Developement(25-26)#D



**कार्यालय, महाप्रबंधक, जिला उद्योग केन्द्र,लोहरदगा।**

**प्रेस विज्ञप्ति**

**आम सूचना**

**उद्यम पंजीकरण हेतु एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन।**

सूचित किया जाता है कि प्रबंध निदेशक, जिडको, राँची (उद्योग विभाग) झारखण्ड के निदेशानुसार MSME इकाइयों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निःशुल्क उद्यम पंजीकरण हेतु जिला उद्योग केन्द्र,लोहरदगा के सभागार (नए समाहरणालय परिसर) में दिनांक–15.10.2025 को 11:30 बजे पूर्वाह्न में एकदिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में MSME उद्यमियों को उद्यम निबंधन किया जाएगा।

अतः आप सभी उद्यमी/व्यवसायी निर्धारित स्थान,तिथि एवं समय पर आयोजित जागरूकता शिविर में अपने इकाई के उद्यम निबंधन हेतु आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, आधार से लिंक मोबाईल नम्बर के साथ भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जाता हैं। (विशेष जानकारी हेतु मो0–9155700111 एवं 9430389449 से सम्पर्क किया जा सकता है।)

निवेदक,
महाप्रबंधक,
जिला उद्योग केन्द्र,
लोहरदगा।

PR 363983 Lohardaga(25-26)D


## डीएवी महात्मा आनंद स्वामी पब्लिक स्कूल सिल्ली की छात्रा ने राज्य स्तर पर मचाया धमाल

**सिल्ली :** डी.ए.वी. महात्मा आनंद स्वामी पब्लिक स्कूल, सिल्ली की प्रतिभाशाली छात्रा पूजा महतो ने राज्य स्तरीय एस.जी.एफ.आई. वुशू प्रतियोगिता 2025-26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।यह प्रतियोगिता खेलगांव,रांची में आयोजित हुई थी। पूजा महतो की इस शानदार उपलब्धि पर विद्यालय की प्रधानाचार्या बी. शरण ने गर्व व्यक्त करते हुए कहा कि यह उपलब्धि विद्यालय एवं क्षेत्र के लिए अत्यंत गौरव की बात है।उन्होंने पूजा को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।उपस्थित शिक्षकों ने भी विजेता छात्रा को बधाई दी तथा अन्य विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेने का संदेश दिया।इस सफलता के लिए विद्यालय परिवार वुशू कोच सह शिक्षक वाहिद अली को धन्यवाद ज्ञापित करता है।

## कॉलेज में दिवाली के अवसर रंगोली प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

**पटमदा :** बी एन टी सी नर्सिंग कॉलेज, भोलाबगान, गोविंदपुर में दिवाली के पूर्व नर्सिंग छात्र छात्राओं का रंगोली प्रतियोगिता आयोजित किया गया। कॉलेज के जी एन एम एवं बी एस सी छात्र छात्राओं ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में जज के रूप में कॉलेज के निदेशक सुष्मिता खान, सदस्य शंभूनाथ सिंह एवं अपर्णा मंडल ने प्रतिभागियों का निर्णय लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान महमूद अंसारी, मीठी कुमारी, मधु कुमारी एवं रितेश राज के ग्रुप को मिला। कार्यक्रम में सुष्मिता मल्लिक, सुवर्णा दास, स्निग्धा, उत्तम महतो, तापस कर्मकार, मीना देवी समेत कॉलेज के कई सदस्य उपस्थित रहे।

## जमीन विवाद में हुई हत्या के तीन आरोपी गिरफ्तार, 13 फरार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सरिया :** सरिया थाना क्षेत्र के मंदरामो पंचायत अंतर्गत कुम्भाटांड गांव में 7 अक्टूबर को जमीन विवाद में हुई मारपीट में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। जिसे लेकर सरिया थाना कांड संख्या 179/25 के तहत मृतक जुमन मियां (80) की पत्नी जमीला खातून के आवेदन पर 16 व्यक्तियों को नामजद हत्या आरोपी बताया गया। उक्त हत्याकांड के मामले में सरिया पुलिस ने सोमवार को तीन मुख्य अभियुक्तों को गिरफ्तार कर न्यायालय के आदेश पर केंद्रीय कारा गिरिडीह भेज दिया है। इस संबंध में सरिया अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी धनंजय राम ने बताया कि इस कांड से संबंधित शेष 13 नामजद आरोपी अब भी फरार हैं। गिरफ्तार प्राथमिक अभियुक्तों में तिलक पासवान, मुकेश पासवान व विनोद पासवान सभी ग्राम कुम्भाटांड़, थाना सरिया,जिला गिरिडीह के नाम शामिल हैं। इनकी गिरफ्तारी के बाद स्थानीय प्रशासन ने फरार अभियुक्तों की तलाश तेज कर दी है। बताते चलें कि घटना के दौरान जमीन को लेकर हुए विवाद ने हिंसक रूप ले लिया था। जिसमें दोनों पक्ष के दर्जनों लोग घायल हुए थे। वहीं घायलों में इलाज हेतु बगोदर ले जाने के क्रम में जुमन मियां ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया था। वहीं सरिया थाना प्रभारी आलोक कुमार सिंह ने बताया कि फरार आरोपियों को शीघ्र पकड़ने के लिए छापेमारी की जा रही है। ग्रामीणों में इस घटना को लेकर भय का माहौल है। जबकि प्रशासन ने शांति बनाए रखने का आह्वान किया है ।


**OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, BUILDING CONSTRUCTION DEPARTMENT BUILDING DIVISION, HAZARIBAG**

**e-Procurement Cell very Short e-Procurement Notice**

Quotation **Reference No:-BCD/EE/**HAZARIBAG/ 06/2025-26 **Date:- 11-10-2025**

Sealed Quotations are invited for the work **Construction of Surgery Moduar Operation Theatre (OT) in Existing Maternity Ward (G+3) Building in Shekh Bhikhari Medical Hospital (sadar Hospital) District-Hazaribagh.**For all Materials from Reputed Shop Keepers/Manufacturers/ Suppliers/Retailers /Distributors and Registered B.C.D. Contractors for following items. They should quote their rates for unit mentioned in the table. If they do not deals all the below mentioned items then they are allowed to quote their rate for part of the items which ever they deals. The rates should be exclusive of all types of Taxes, GST, Contractor's Profit and overhead charges etc. but inclusive of Royalty. All Rates should be exclusive of Labour Cess.

**Terms and Condition**

1.The quotationer shall furnish Pan, GST registration no.
2.The rate quoted by quotationer shall be firm and final.
3.The undersigned reserves the right to accept or reject/cancel any or all quotations without assigning any reason there of

नोटः–(1) वेवसाईट में ई–कोटेशन प्रकाशन की तिथि : 16.10.2025 के अपराह्न 3:00 बजे।
(2) वेवसाईट में ई–कोटेशन अपलोड की अंतिम तिथि : 24.10.2025 के अपराह्न 3:00 बजेतक।
(3) ई–कोटेशन खोलने की तिथि एवं समय 25.10.2025 अपराह्न 3:00 बजे।
(4) ई–कोटेशन आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल ,हजारीबाग।
(5) ई–कोटेशन प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0 : 9348952485

***Further details and subsequent amendments can be seen on website*** http://jharkhandtenders.gov.in

**Nodal Officer, e-Procurement Cell,**
**Office of the Executive Engineer,**
**Building Construction Department,Building Division,** Hazaribag

PR 363977 (Building)25-26*D


# उपायुक्त द्वारा उत्क्रमित उच्च विद्यालय, जामू का निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**कोडरमा :** उपायुक्त ऋतुराज द्वारा मरकच्चो प्रखंड स्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय, जामू का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय में संचालित शैक्षणिक एवं सहशैक्षणिक गतिविधियों का गहन अवलोकन किया। निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने शिक्षकों की उपस्थिति पंजी, छात्रों की उपस्थिति पंजी, प्रोजेक्ट रेल के अंतर्गत आयोजित टेस्ट, प्रोजेक्ट इंपैक्ट की गतिविधियाँ, पाठ्यक्रम की प्रगति, पोषण वाटिका, विद्यालय परिसर की साफ-सफाई तथा मध्याह्न भोजन व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने कक्षा में जाकर विद्यार्थियों को स्वयं पढ़ाया तथा अंग्रेजी विषय से संबंधित कई प्रश्न पूछे। विद्यार्थियों ने आत्मविश्वासपूर्वक उत्तर दिए, जिस पर उपायुक्त ने उनकी सराहना की तथा शिक्षकों को भी बधाई दी। इसके साथ ही उपायुक्त ने जिला स्तरीय विशेष आकलन परीक्षा का जायजा भी लिया और परीक्षा की निष्पक्षता एवं सुचारू संचालन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

### अबुआ आरोग्य मेला का उपायुक्त ने किया शुभारंभ

**मरकच्चो :** प्रखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मरकच्चो में सोमवार को आयोजित अबुआ आरोग्य मेला का शुभारंभ उपयुक्त कोडरमा ऋतु राज के द्वारा फीता काटकर व दीप प्रज्वलित कर किया गया। मेले में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर विभिन्न स्वास्थ्य जांच शिविर का लाभ उठाया। इस मौके पर उपायुक्त ने कहा कि इस मेले का उद्देश्य ग्रामीणों को स्वास्थ्य सेवाओं की सहज उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इस दौरान सोमवार को डॉक्टरों की टीम ने 188 पंजीकरण,72 लोगों का ब्लड प्रेशर जांच , जांच 70, टीकाकरण 3, कुष्ठ जांच 1 टी बी जांच32 लोगों का किया गया व 13 लोगो का आयुष्मान कार्ड बनाया गया। आवश्यकता अनुसार दवाइयां का निशुल्क वितरण किया गया। इस मौके पर प्रखंड प्रमुख विजय कुमार सिंह बीडीओ हुलास महतो सी ओ परमेश्वर कुशवाहा सी एस अनील कुमार प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ मोनिका मिश्रा,डॉ आकांक्षा कुमारी,डॉ राकेश सिंह,डॉ दिनेश कुमार, मुखिया बेदु साव, सुनील कुमार यादव,बैजन्ती देवी, रानी सिंह,टीपन पांसी, बसन्त साव,रवि शंकर सिंह,समेत कई अधिकारी और जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।


**कार्यपालक अभियंता का कार्यालय**
**ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।**
mail-rdsdgumla123@gmail.com

**अति अल्पकालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना**

ई– निविदा सूचना संख्या – RDD/SD/GUMLA/05/2025-26 (2nd Call)

1. कार्य की विस्तृत विवरणीः

| ग्रुप० सं० | कार्य का नाम | प्राक्कलित राशि | अग्रधन की राशि | परिमाण विपत्र का मूल्य | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | गुमला जिलान्तर्गत कामडारा प्रखण्ड के सरिता पंचायत में ग्राम पकरा में कम्पाट मुण्डा 22 पहड़ा भवन निर्माण | 2,49,99,700.00 | 5,00,000.00 | 10000.00 | 18 माह |
| 2 | Construction of Parha Cultural house at jhariya Dipa Near Dari Tongri Block Sisai Gumla | 2,49,99,700.00 | 5,00,000.00 | 10000.00 | 18 माह |

2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि –17.10.2025
3. ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय – दिनांक 17.10.2025 से दिनांक 31.10.2025 को अपराह्न 5:00 बजे तक
4. ई–निविदा खोलने का स्थान – कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, गुमला।
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय – 03.11.2025 अपराह्न 2:00 बजे
6. ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० – 06524223013 (संबंधित कार्यपालक अभियंता का दूरभाष नम्बर)
8. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तद्नुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
10. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।

विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

**कार्यपालक अभियंता**
**ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल,**
**गुमला।**

PR 364028 (Rural Development) 25-26 (D)

## समय के साथ बदल रहा है डाक विभाग

पूरी दुनिया में 9 अक्टूबर को विश्व डाक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1874 में इसी दिन यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन का गठन करने के लिए स्विट्जरलैंड की राजधानी बर्न में 22 देशों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया था। 1969 में जापान के टाकियो शहर में आयोजित सम्मेलन में विश्व डाक दिवस के रूप में इसी दिन को चयन किये जाने की घोषणा की गयी थी। 01 जुलाई 1876 को भारत यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन का सदस्य बनने वाला भारत पहला एशियाई देश था। जनसंख्या और अंतरराष्ट्रीय मेल ट्रैफिक के आधार पर भारत शुरू से ही प्रथम श्रेणी का सदस्य रहा है। भारत में डाकघर का इतिहास ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के समय से शुरू होता है जब रॉबर्ट क्लाइव ने 1766 में पहली डाक व्यवस्था स्थापित की। वॉरेन हेस्टिंग्स ने 1774 में कोलकाता में पहला डाकघर खोला और 1854 में लॉर्ड डलहौजी ने भारत में एक राष्ट्रीय डाक सेवा की शुरूआत की। आज भारतीय डाक दुनिया के सबसे बड़े डाक नेटवर्क में से एक है जो बैंकिंग, बीमा और अन्य सेवाओं के साथ आम आदमी का भरोसेमंद साथी है। 01 अक्टूबर 1854 को भारतीय डाक विभाग की स्थापना के साथ भारत में पहली बार डाक टिकट भी जारी किया गया था। विश्व डाक दिवस का मकसद देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में डाक क्षेत्र के योगदान के बारे में जागरुकता पैदा करना है। दुनिया भर में प्रत्येक वर्ष 150 से ज्यादा देशों में विविध तरीकों से विश्व डाक दिवस आयोजित किया जाता है। भारतीय डाक प्रणाली का जो उन्नत और परिष्कृत स्वरूप आज हमारे सामने है, वह लंबे सफर की देन है। अंग्रेजों ने डेढ़ सौ साल पहले अलग-अलग हिस्सों में अपने तरीके से चल रही डाक व्यवस्था को एक सूत्र में पिरोने की पहल की थी। उन्होने भारतीय डाक को नया रूप-रंग दिया। पर अंग्रेजों की डाक प्रणाली उनके सामरिक और व्यापारिक हितों पर केंद्रित थी। हमारे देश में पहले डाक विभाग का इतना अधिक महत्व था कि फिल्मों तक में डाकिये पर कई मशहूर गाने फिल्माये गये हैं। मगर अब नजारा पूरी तरह से बदल चुका है। इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव ने डाक विभाग के महत्व को बहुत कम कर दिया है। आज लोगों ने हाथों से चिट्ठियां लिखना छोड़ दिया है। अब ई-मेल, वाट्सएप व सोशल मीडिया, इंटरनेट के माध्यमों से मिनटो में लोगो में संदेशों का आदान प्रदान हो जाता है। आज डाक में लोगों की चिट्ठियां तो गिनती की ही आती है। मनीआर्डर भी बन्द ही हो गये हैं। मगर डाक से अन्य सरकारी विभागों से सम्बन्धित कागजात, बैंको व अन्य संस्थानो के प्रपत्र काफी संख्या में आने से डाक विभाग का महत्व फिर से एक बार बढ़ गया है। डाक विभाग कई दशकों तक देश के अंदर ही नहीं बल्कि एक देश से दूसरे देश तक सूचना पहुंचाने का सर्वाधिक विश्वसनीय, सुगम और सस्ता साधन रहा है। लेकिन इस क्षेत्र में निजी कम्पनियों के बढ़ते दबदबे और फिर सूचना तकनीक के नये माध्यमों के प्रसार के कारण डाक विभाग की भूमिका लगातार कम होती गयी है। वैसे इसकी प्रासंगिकता पूरी दुनिया में आज भी बरकरार है। भारत में डाक विभाग के महत्व को मशहूर शायर निदा फाजली के शेर -सीधा-साधा डाकिया जादू करे महान, एक ही थैले में भरे आंसू और मुस्कान - से समझा जा सकता है। शायर निदा फाजली ने जब यह शेर लिखा था उस वक्त देश में संदेश पहुंचाने का डाक विभाग ही एकमात्र साधन था। डाकिये के थैले में से निकलने वाली चिट्ठी पढ़कर कोई खुश होता था तो कोई दुखी। कुछ वर्ष पूर्व तक डाक विभाग हमारे जनजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होता था। गांव में जब डाकिया आता था तो बच्चे-बूढ़े सभी उसके साथ डाक घर की तरफ इस उत्सुकता से चल पड़ते थे कि उनके भी किसी परिजन की चिट्ठी आयेगी। डाकिया जब नाम लेकर एक-एक चिट्ठी बांटना शुरू करता तो लोग अपनी या अपने पड़ोसी की चिट्ठी ले लेते व उसके घर जाकर उस चिट्ठी को बड़े चाव से देते थे। उस वक्त शिक्षा का प्रसार ना होने से अक्सर महिलायें अनपढ़ होती थी। इसलिये चिट्ठी लाने वालों से ही चिट्ठियां पढ़वाती भी थी और लिखवाती भी थी। कई बार चिट्ठी पढने-लिखने वाले बच्चों को ईनाम स्वरूप कुछ पैसा या खाने को गुड़, पताशे भी मिल जाया करते थे। इसी लालच में बच्चे ज्यादा से ज्यादा घरों में चिट्ठियां पहुंचाने का प्रयास करते थे।

# विश्वास का वैश्विक सेतु और व्यापारिक समरसता का आधार

ललित गर्ग

विश्व मानक दिवस प्रत्येक वर्ष 14 अक्तूबर को मनाया जाता है। यह दिवस उस अदृश्य व्यवस्था का उत्सव है जो हमारे जीवन, उद्योग, व्यापार और सुरक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करती है। मानकीकरण केवल कोई तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विश्वसनीयता, सुरक्षा, पारदर्शिता और आपसी सहयोग की ऐसी बुनियाद है जो मानव जीवन की सहजता और स्थिरता का आधार बनती है। इस दिवस का उद्देश्य यह स्मरण कराना है कि किसी भी उत्पाद, सेवा या व्यवस्था की उपयोगिता तभी टिकाऊ और भरोसेमंद हो सकती है जब उसमें निर्धारित मानक और गुणवत्ता की कसौटी कायम हो। विश्व मानक दिवस उन हजारों विशेषज्ञों और कर्मयोगियों को सम्मान देने का भी अवसर है जो अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में बैठकर विश्व के हित में ऐसे मानक तय करते हैं और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के निर्माण और कार्यान्वयन में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सुरक्षा के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में मानकीकरण की भूमिका पर जोर देना है, जो सबके लिए समान हों, निष्पक्ष हों और मानवता की सुरक्षा और प्रगति के लिए हों।

यह दिवस 1946 में हुई पहली बैठक की याद में मनाया जाता है, जिसमें 25 देशों के प्रतिनिधि लंदन में एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना के लिए एकत्र हुए थे, जो मानकीकरण पर अपने प्रयासों को केंद्रित करेगा। हालाँकि अगले वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन का गठन किया गया था, लेकिन पहला विश्व मानक दिवस 1970 में ही मनाया गया। विश्व मानक दिवस का उद्देश्य जनता को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मानकों की महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति जागरूक करना है। अर्थात स्वास्थ्य सेवा से लेकर तकनीक तक, लगभग हर क्षेत्र के उत्पादों और सेवाओं में सुरक्षा, विश्वसनीयता और गुणवत्ता। 2025 की थीम 'सहयोग' है, जो प्रगति को संभव बनाने के लिए साझेदारी के महत्व को दशार्ती है। यह सहयोग की शक्ति और इस विश्वास का प्रमाण है कि हम अपने-अपने हिस्सों के योग से भी अधिक शक्तिशाली हैं। साथ मिलकर काम करके, हम लोगों को स्थिरता की चुनौतियों का सीधा सामना करने के लिए वास्तविक समाधानों से सशक्त बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त, भारतीय मानक ब्यूरो ने इस वर्ष की थीम को 'सतत विकास लक्ष्यः लक्ष्य प्राप्ति में सामूहिक साझेदारी' के रूप रखा है। एक बेहतर विश्व निर्माण के लिए साझा दृष्टिकोण का विशेष महत्व है, इस दिवस को मनाने का लक्ष्य उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचे पर विशेष ध्यान देना और उपभोक्ताओं, नियामकों और उद्योग के बीच मानकीकरण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

आज जब वैश्वीकरण, तकनीकी तीव्रता, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट और आपूर्ति श्रृंखला जैसी जटिल चुनौतियाँ सामने हैं, तब मानकीकरण का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। मानक ही वह भाषा हैं जिनसे विश्व के देश एक-दूसरे को समझ पाते हैं। जब कोई वस्तु या सेवा एक निश्चित मानक के अनुरूप होती है, तो उसे किसी भी देश में स्वीकार किया जा सकता है। इससे व्यापार सहज होता है, उपभोक्ता का भरोसा बढ़ता है और देशों के बीच परस्पर निर्भरता मजबूत होती है। यही कारण है कि मानकीकरण को विश्व व्यापार की आत्मा कहा जाता है। इससे केवल आर्थिक लाभ नहीं होता, बल्कि यह जीवन की गुणवत्ता, सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को भी सुनिश्चित करता है।

विश्व मानक दिवस के इस सन्देश के विपरीत आज की राजनीति में कई बार ऐसे कदम उठाए जा रहे हैं जो विश्व व्यापार और आपसी सहयोग की भावना को कमजोर करते हैं। अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा अपनाई जा रही अतिशयोक्ति पूर्ण टैरिफ नीति इसका उदाहरण है। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रतिस्पर्धा के नाम पर आयातित वस्तुओं पर भारी शुल्क लगाकर एक प्रकार से व्यापार युद्ध का वातावरण बना दिया है। यह नीति केवल व्यापारिक हितों को नहीं बल्कि वैश्विक संतुलन को भी प्रभावित कर रही है। टैरिफ की यह दीवारें देशों के बीच अविश्वास बढ़ाती हैं, कीमतों में वृद्धि करती हैं और आपूर्ति श्रृंखला को असंतुलित करती हैं। आयातित वस्तुओं की लागत बढ़ने से उपभोक्ताओं को अधिक कीमत चुकानी पड़ती है, उद्योगों की उत्पादन लागत बढ़ती है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार की गति धीमी पड़ जाती है।

विश्व व्यापार संगठन ने पहले ही चेताया है कि ऐसी टैरिफ नीतियाँ वैश्विक व्यापार वृद्धि को घटा रही हैं और निवेशकों में अस्थिरता पैदा कर रही हैं। टैरिफ केवल कर या शुल्क नहीं होते, वे राष्ट्रों के बीच विश्वास का संकेत भी होते हैं। जब कोई देश बार-बार अपने आर्थिक हितों की आड़ में ऊँचे शुल्क लगाता है, तो अन्य राष्ट्र प्रतिकार के रूप में अपने दरवाजे बंद करने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि जो विश्व पहले एक साझा बाजार की ओर बढ़ रहा था, वह फिर से सीमाओं और अविश्वास की जंजीरों में बँधने लगता है। ऐसे में विश्व मानक दिवस यह सन्देश देता है कि दुनिया को जोड़ने का वास्तविक माध्यम व्यापारिक शुल्क नहीं बल्कि मानकीकरण है। मानक देशों को एक साझा धरातल प्रदान करते हैं, जहाँ उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा का विश्वास इतना मजबूत होता है कि किसी अतिरिक्त शुल्क या रोक की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। मानकीकरण दरअसल विश्वास का पुल है जो सीमाओं के आर-पार लोगों, वस्तुओं और विचारों को जोड़ता है। जब एक देश दूसरे देश के मानकों को स्वीकार करता है, तो यह आपसी सम्मान और पारदर्शिता का प्रतीक होता है। इसी प्रक्रिया से अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सरलता आती है, सुरक्षा और गुणवत्ता की गारंटी मिलती है और उपभोक्ता हित सुरक्षित रहते हैं। मानकीकरण की यह प्रक्रिया न केवल औद्योगिक या व्यापारिक है बल्कि यह मानवीय भी है। इसके मूल में समानता, निष्पक्षता और सहयोग की भावना निहित है। यह वह दर्शन है जो कहता है कि विश्व एक परिवार है और सबकी भलाई में ही अपनी भलाई है। अतः जब कोई राष्ट्र टैरिफ या प्रतिबंधों की दीवार खड़ी करता है, तो वह इस वैश्विक परिवार के बीच विभाजन की रेखा खींचता है। मानक उन रेखाओं को मिटाते हैं और संबंधों को जोड़ते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मानकीकरण केवल औद्योगिक मंच तक सीमित न रहे, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय नीति का भी आधार बने। विश्व के सभी देश मानकों के निर्धारण में समान भागीदारी करें ताकि कोई भी राष्ट्र या कंपनी इस प्रक्रिया पर वर्चस्व न जमा सके। छोटे और विकासशील देशों को भी अंतरराष्ट्रीय मानक संस्थाओं में समान अवसर मिले ताकि वे अपने उत्पादों और सेवाओं के माध्यम से वैश्विक व्यापार में समान रूप से शामिल हो सकें। इसके साथ ही प्रमाणन प्रक्रिया को सरल और सुलभ बनाना आवश्यक है ताकि छोटे उद्योग भी मानक के अनुरूप अपने उत्पादों को विश्व स्तर पर प्रस्तुत कर सकें। विश्व मानक दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि मानवता की प्रगति केवल आर्थिक शक्ति में नहीं बल्कि उस सहयोग और विश्वास में है जो मानकीकरण के माध्यम से संभव होता है। अतिशयोक्ति पूर्ण टैरिफ जैसी नीतियाँ क्षणिक राजनीतिक लाभ तो दे सकती हैं, पर वे विश्व के समन्वित विकास और आपसी विश्वास को नष्ट करती हैं। इसलिए आवश्यक है कि सभी राष्ट्र मानकीकरण की भावना को अपनाएँ और विश्व व्यापार को किसी प्रतिस्पर्धा या प्रतिशोध का माध्यम न बनाकर साझेदारी और साझा उन्नति का माध्यम बनाएँ। मानकीकरण ही वह अदृश्य तंतु एवं बुनियादी आधार है जो दुनिया को एकजुट रखता है। यह न केवल उत्पादन और व्यापार में गुणवत्ता लाता है बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में विश्वसनीयता और सुरक्षा का भाव जगाता है। विश्व मानक दिवस इस विचार का प्रतीक है कि जब तक हम समान मानकों और साझा मूल्यों से नहीं जुड़ते, तब तक विश्व की एकता अधूरी है। इसलिए इस दिवस पर यह संकल्प लिया जाना चाहिए कि हम ऐसी नीतियों से दूर रहें जो विभाजन उत्पन्न करें, और मानकीकरण की उस साझा राह पर चलें जो सबके लिए विश्वास, सुरक्षा और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है। संपूर्ण मानक प्रणाली सहयोग पर आधारित है।

# बड़ा मायने है पर्यटन में मध्य प्रदेश का वैश्विक रूप से हृदय जीत लेना!

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

मध्य प्रदेश ने पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह पर्यटन के क्षेत्र में अपनी सशक्त पहचान बनाई है, वह नीतियों और प्रचार अभियानों के साथ दृष्टि और निरंतरता का प्रतीक है। भारत के हृदय में स्थित यह प्रदेश आज देश-विदेश के यात्रियों के लिए भरोसे और अनुभव दोनों का केन्द्र बन गया है। महामारी के बाद जब वैश्विक पर्यटन उद्योग पुनर्जीवन की राह खोज रहा था, तब मध्यप्रदेश ने योजनाबद्ध ढंग से अपनी साख दोबारा कायम की। पर्यटन के हर आयाम में यहां नई हलचल दिख रही है। कभी विरासत और वन्यजीव के लिए पहचाने जाने वाला यह प्रदेश आज वेडिंग, एमआईसीई, फिल्म और ग्रामीण पर्यटन जैसे क्षेत्रों में देशव्यापी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। भोपाल में हुए एमआईसीई एवं वेडिंग टूरिज्म सम्मेलन में देशभर के विशेषज्ञों ने माना है कि मध्यप्रदेश आयोजनों का नया केन्द्र बनकर उभर रहा है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि राज्य भौगोलिक रूप से देश के मध्य में है, जहां सड़क, रेल और हवाई मार्ग से सुगमता है, साथ ही यहां के शहर आधुनिक सुविधाओं और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम हैं।

खजुराहो, महेश्वर, मांडू, पचमढ़ी और भोपाल जैसे शहर अब विवाह समारोहों और कॉर्पोरेट इवेंट्स के लिए नई पसंद बन रहे हैं। पारंपरिक स्थापत्य, शांत परिवेश और उत्कृष्ट आतिथ्य ने इन्हें विशिष्ट पहचान दी है। इस उभार के पीछे प्रशासनिक दक्षता और निजी क्षेत्र के साथ सरकार की साझेदारी की नई सोच है। आज जो सामने से दिखाई दे रहा है, वह यह है कि मध्यप्रदेश की कोशिश अब केवल आयोजन करवाने तक सीमित नहीं, हर आयोजन को सांस्कृतिक अनुभव में बदलने की है।

वेडिंग टूरिज्म ने जहां स्थानीय कारीगरों, संगीतज्ञों और सेवा क्षेत्र को नए अवसर दिए हैं, वहीं यह संस्कृति और परंपरा के जीवंत प्रदर्शन का मंच भी बना है। मांडू के ऐतिहासिक महलों में संगीत की ध्वनियाँ और महेश्वर के घाटों पर नर्मदा की लहरों के बीच विवाह समारोह, प्रदेश के सांस्कृतिक आत्मविश्वास के नए प्रतीक हैं। पर्यटन विभाग का मानना है कि हर विवाह आयोजन राज्य की जीवंत संस्कृति का दर्पण है।

इसी तरह फिल्म पर्यटन भी मध्यप्रदेश की पहचान का मजबूत स्तंभ बन चुका है। भोपाल, महेश्वर, पचमढ़ी, जबलपुर और ग्वालियर जैसे शहर अब फिल्मकारों के प्रिय स्थल हैं। यहां की फिल्म नीति ने शूटिंग प्रक्रिया को सरल बनाया है और स्थानीय कलाकारों के लिए नए अवसर खोले हैं। फिल्मों और वेब सीरीज की शूटिंग से इन इलाकों में रोजगार बढ़ा है, साथ ही पर्यटन को नया जीवन मिला है।

अपर मुख्य सचिव पर्यटन व संस्कृति एव प्रबंधन संचालक मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड शिवशेखर शुक्ला कहते भी है कि राज्य अब एक विविधतापूर्ण, बहुआयामी और ऑफबीट पर्यटन गंतव्य के रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना रहा है। यहां विरासत, वन्यजीवन, रोमांच, संस्कृति, कला, हस्तशिल्प और पाक-परंपराओं का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

मध्यप्रदेश की सीमा से लगे अन्य राज्य जैसे छत्तीसगढ़ से राम वन पथ गमन सर्किट, महाराष्ट्र के साथ ज्योर्तिलिंग सर्किट जैसे संयुक्त कार्यों पर काम किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त टाइगर कॉरिडोर, फिल्म पर्यटन और ईको टूरिज्म के साझा विकास की संभावना भी तलाशी जा सकती है। ऐसे अनेक प्रयासों ने प्रदेश के टूरिज्म को आज एक नई गति दी है।

यही कारण है कि राज्य ने अंतरराज्यीय सहयोग की दिशा में भी उल्लेखनीय पहल की है। राजस्थान, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के साथ साझा पर्यटन परिपथ विकसित किए जा रहे हैं, कहीं हेरिटेज सर्किट, कहीं वाइल्डलाइफ या जनजातीय सर्किट। इससे यात्रियों को विविध अनुभव मिलेंगे और क्षेत्रीय पर्यटन को गति मिलेगी। यह सहयोगी दृष्टिकोण दिखाता है कि मध्यप्रदेश पर्यटन को स्थानीय या सीमित अर्थों में नहीं, व्यापक भारतीय परिप्रेक्ष्य में देख रहा है।

कहना होगा कि विरासत संरक्षण और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाना इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि है। राज्य में 498 राज्य संरक्षित, 290 एएसआई संरक्षित स्मारक और तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं। इन धरोहरों को संरक्षित रखते हुए आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का समावेश किया गया है। भोपाल और ग्वालियर का यूनेस्को क्रिएटिव सिटी नेटवर्क में शामिल होना इस दिशा में ऐतिहासिक कदम है। भोपाल अपने संग्रहालयों, झीलों और सांस्कृतिक आयोजनों के लिए अंतरराष्ट्रीय पहचान बना रहा है, जबकि ग्वालियर अपनी संगीत परंपरा और स्थापत्य वैभव के साथ नए सिरे से पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है।

राज्य की नीतियों में सतत पर्यटन प्रमुख तत्व के रूप में उभरा है। ग्रामीण और ईको-टूरिज्म पर ध्यान देकर मध्यप्रदेश ने पर्यटन को स्थानीय समुदायों से जोड़ा है। सतपुड़ा, कान्हा, बांधवगढ़ और पेंच जैसे वनक्षेत्रों में अब ईको-लॉज और कम्युनिटी-बेस्ड टूरिज्म के मॉडल फलफूल रहे हैं। गांवों में होम-स्टे की पहल से यात्रियों को स्थानीय जीवन, भोजन और संस्कृति का अनुभव मिलता है। यह पर्यटन का नया चेहरा है और आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की दिशा में बढ़ता कदम भी है।

महामारी के बाद जब वैश्विक पर्यटक दोबारा यात्रा के लिए तैयार हो रहे थे, तब मध्यप्रदेश ने उन्हें भरोसे का कारण दिया। बेहतर स्वास्थ्य सुरक्षा, स्वच्छ गंतव्य और सहज नीतियों ने इसे पुनः विश्वसनीय बनाया। एफआईसीसीआई जैसे राष्ट्रीय निकायों के साथ साझेदारी, फिल्म और एमआईसीई टूरिज्म पर केंद्रित प्रयासों ने निवेशकों और आयोजकों का विश्वास जीता है।

पर्यटन एवं संस्कृति विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ने हाल में कहा कि हमारा लक्ष्य केवल पर्यटक संख्या बढ़ाना नहीं, ऐसा अनुभव देना है जो यादों में बस जाए। यही दृष्टि राज्य के पर्यटन विकास का आधार बन गई है।

पर्यटन अब मध्य प्रदेश में यात्रा नहीं, भावनाओं और आत्मीयता का अनुभव है। महेश्वर के घाटों से उठती आरती की लौ, खजुराहो के मंदिरों की नक्काशी, पचमढ़ी के जंगलों की नमी और भोपाल की झीलों में उत्साह से आती लहरें, इन सबमें वह भरोसा झलकता है जो किसी भी गंतव्य को जीवंत बनाता है। यही वह भरोसा है जिसने मध्यप्रदेश को भारत का नहीं, विश्व पर्यटन का भी हृदय बना दिया है।

आज जब दुनिया के तमाम देश अपने पर्यटन मॉडल को स्थायी और समावेशी बनाने की दिशा में सोच रहे हैं, तब मध्यप्रदेश अपने अनुभव से एक नया उदाहरण पेश कर रहा है, जहां विरासत जीवित है, आधुनिकता शामिल है और प्रकृति सुरक्षित है। यह विकास की कहानी है और उस संवेदनशील दृष्टि की मिसाल है जिसने पर्यटन को आर्थिक गतिविधि से आगे, विश्वास और आत्मगौरव की यात्रा बना दिया है।

**(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)**

### सूडोकु नवताल- 7582

★★★★★ कठिनतम

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 4 | | | 9 | | | |
| | 2 | | | 8 | 4 | | | |
| 8 | | | | | | 3 | | |
| | | | | | | | 9 | 4 |
| | 3 | | | | | | 7 | |
| 5 | 6 | | | | | | | |
| | | 7 | | | | | | 9 |
| | | | 2 | 5 | | | 8 | |
| | | | 6 | | | 2 | | |

Jagrutidaur.com, Bangalore

#### सूडोकु नवताल -7581 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 9 | 1 | 2 | 8 | 4 | 3 | 6 | 7 |
| 6 | 4 | 2 | 3 | 5 | 7 | 9 | 1 | 8 |
| 8 | 3 | 7 | 9 | 6 | 1 | 4 | 2 | 5 |
| 4 | 7 | 5 | 8 | 2 | 6 | 1 | 9 | 3 |
| 3 | 6 | 9 | 7 | 1 | 5 | 8 | 4 | 2 |
| 1 | 2 | 8 | 4 | 3 | 9 | 7 | 5 | 6 |
| 7 | 5 | 6 | 1 | 9 | 8 | 2 | 3 | 4 |
| 9 | 8 | 3 | 5 | 4 | 2 | 6 | 7 | 1 |
| 2 | 1 | 4 | 6 | 7 | 3 | 5 | 8 | 9 |

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

# क्या ट्रंप नोबेल में मात के बाद भी शांति दूत बने रहेंगे?

ऋतुपर्ण दवे

बड़बोले डोनाल्ड ट्रंप को नोबेल पुरस्कार नहीं मिला। अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने वाले ट्रंप हाथ मलते रह गए। शांति के नोबेल के लिए चंद देशों से खुद को नामित कराने वाले अड़ीबाज अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रप के मुकाबले बेहद कम चर्चित और दुनिया में अलग पहचान रखने वाली एक महिला को मिलना शायद ट्रंप को उनकी असलियत या औकात बताने को काफी है। वैसे भी हर पुरस्कार के लिए नियम होते हैं, लंबी फेहरिस्त होती है और कारण होते हैं। ट्रंप कहीं से भी इसमें फिट नहीं बैठते थे। लेकिन उन्हें अमेरिका का राष्ट्रपति होने का गुमान था। इसीलिए वो यह जानते हुए भी कि पुरस्कार के लिए नामित होने और औपचारिकताओं के पूरा करने की प्रक्रिया को भी शायद अपनी धौंस से धता बताने की जुगाड़ में थे, जो हो न सका। यह भी सच है कि शायद यह पहला मौका होगा जब पुरस्कार मिलने वाले के नाम की चर्चा के बजाए न मिलने वाले का नाम और उसका रंज सुर्खियों में है।

अब ट्रंप भले ही लगातार अपना दावा जता रहे हों और कहते फिर रहे हों कि कि अमेरिका में जिन भी लोगों को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया, वो ज्यादातर विवादित ही रहे। ट्रंप भला क्या कम विवादित हैं? अमेरिका के राष्ट्रपति बनाम वहां के बड़े बिजनेसमैन डोनाल्ड ट्रंप इस बार सत्ता में आने के साथ ही खुद को शांति का स्वयं-भू मसीहा बताते नहीं अघाते हैं। वो भारत-पाकिस्तान, रूस-यूक्रेन, इजरायल-हमास जंग समेत आठ युद्धविराम या समझौते कराने का दावा करते हैं। जबकि दुनिया हकीकत जानती है कि इन सभी जगहों पर अभी कितनी शांति है?

इस बार का नोबेल शांति पुरस्कार नॉर्वेनियन नोबेल कमेटी ने वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को देना तय किया। नोबेल समिति के अध्यक्ष यॉर्गन वाटने फ्रिडनेस ने मारिया कोरिना मचाडो को एक ऐसी प्रमुख और एकजुट करने वाली शख्सियत बताया जिन्होंने पहले गहरे विभाजित विपक्ष को एकजुट किया फिर स्वतंत्र चुनावों और प्रतिनिधि सरकार की मांग में समान आधार स्थापित करने का कठिन काम किया। अपने प्रयासों की कामियाबी के लिए मारिया कोरिना मचाडो को छिपकर रहने पर भी मजबूर होना पड़ा। लेकिन जान को गंभीर खतरों के बावजूद उन्होंने अपना देश नहीं छोड़ा और दुनिया भर में शांति के पक्षधर लाखों लोगों का प्रेरित किया। मारिया का मानना है कि जब सत्तावादी लोग सत्ता हथिया लेते हैं, तो स्वतंत्रता के ऐसे साहसी रक्षकों को पहचानना जरूरी है जो उठ खड़े हों और विरोध करें। लोकतंत्र उन्हीं लोगों पर निर्भर करता है जो चुप रहने के बजाए गंभीर जोखिमों के बावजूद आगे बढ़ते रहने का दुस्साहस करते हैं। यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए, बल्कि हमेशा उसकी रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और शब्दों के सामर्थ्य का इस्तेमाल जरूरी है। ट्रम्प भले ही दुनिया का दारोगा कहलाएं लेकिन उन्हें मारिया के सिध्दांतों और धारणाओं से काफी कुछ सीखने की जरूरत है।

यह सही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने दूसरे कार्यकाल में तो शुरूआत से ही शांति के नोबेल पुरस्कार का सपना संजोए बैठे थे। उनका हर मंच पर दावा कि उन्होंने ही आठ युद्ध रुकवाए हैं यही बताता है। पूर्व राष्ट्रपति ओबामा की आलोचना करना और कहना कि बिना किसी कारण के उन्हें नोबेल मिला मैंने तो 8-8 युद्ध रुकवाए अहंकार नहीं तो क्या है? लेकिन वो भूल गए कि उनके दावे नोबेल शांति पुरस्कार के नामांकन की समय-सीमा के बाद के हैं। ऐसे में संभव है कि यह उनकी चालाकी हो और अगले साल के अपने दावे को पुख्ता करने की रणनीति हो! दुनिया जानती है कि ट्रम्प कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। कहा तो यह तक जाने लगा है कि ट्रंप को यह भी नहीं पता अगले पल वो क्या कर बैठें, बहरहाल यह उनका अपना मामला है वो जाने। हां, नोबेल कमेटी की निना ग्रेगर ने यह जरूर कहा कि नोबेल के फैसले पर गाजा सीजफायर का असर नहीं होगा, लेकिन अगर यह शांति स्थायी रही, तो अगले साल ट्रंप की दावेदारी मजबूत हो सकती है। वहीं, नोबेल कमेटी के अध्यक्ष जोएर्गन वाटने फ्राइडनेस ने कहा कि पुरस्कार पर फैसला काम के आधार पर किया जाता है। अब ऐसा भी नहीं है कि अमेरिका जैसे देश सशक्त देश के राष्ट्रपति को इतना भी भान न हो?

अब एक पुराना और चौंकाने वाला वाकया सुर्खियों में है। जब एडॉल्फ हिटलर को शांति पुरस्कार के लिए नामांकित करने की कोशिश हुई। इससे हर कोई असहज हुआ होगा। उनके क्रूर होने के किस्से-कहानियां इतिहास की किताबों में दर्ज है। क्या उनका नाम कभी प्रस्तावित हुआ? दरअसल एक तीखी व्यंग्यात्मक आलोचना के रूप में जरूर उनका प्रस्ताव स्वीडिश संसद के एक सदस्य, एरिक ब्रांट ने 27 जनवरी 1939 को नोबेल समिति को भेजा। ब्रांट एक समाजिक-लोकतांत्रिक राजनेता थे। यह उनका स्वीडिश राजनीतिज्ञों की प्रवृत्ति पर कटाक्ष और व्यंग था जो तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री नेविल चेम्बरलेन की शांति-नीति की तारीफ करते नहीं अघाते थे। जब चेम्बरलेन की शांति के लिए खूब स्तुति हो सकती है, तो हिटलर को भी यूरोप में युद्ध के खतरों लिए नामांकित कर दीजिए। लेकिन सार्वजनिक प्रतिक्रियाओं, आलोचनाओं और गलतफहमियों से घिरता देख ब्रांट ने अपना नामांकन औपचारिक रूप से वापस भी ले लिया।

नोबेल पुरस्कार की स्थापना बिजनेसमैन, एंटरप्रेन्योआर और वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की मृत्यु के बाद हुई जिन्होंने अपनी ज्यादातर संपत्ति कई क्षेत्रों में पुरस्कारों के लिए छोड़ी थी। सन 1895 में अपनी वसीयत में कहा था कि ऐसे पुरस्कार उन्हें दिया जाना चाहिए जिन्होंने पिछले साल मानव जाति के लिए सबसे बड़ा उपकार किया हो।

### दैनिक पंचांग

**14 अक्टूबर 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति**

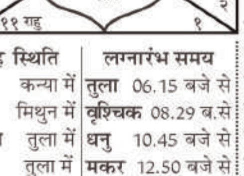


| ग्रह स्थिति | | लग्नारंभ समय | |
|---|---|---|---|
| **सूर्य** | कन्या में | **तुला** | 06.15 बजे से |
| **चंद्र** | मिथुन में | **वृश्चिक** | 08.29 ब.से |
| **मंगल** | तुला में | **धनु** | 10.45 बजे से |
| **बुध** | तुला में | **मकर** | 12.50 बजे से |
| **गुरु** | मिथुन में | **कुंभ** | 14.37 बजे से |
| **शुक्र** | कन्या में | **मीन** | 16.10 बजे से |
| **शनि** | मीन में | **मेष** | 17.40 बजे से |
| **राहु** | कुंभ में | **वृष** | 19.20 बजे से |
| **केतु** | सिंह में | **मिथुन** | 21.18 बजे से |
| **राहुकाल** | | **कर्क** | 23.32 बजे से |
| 3.00 से 4.30 | | **सिंह** | 01.48 बजे से |
| बजे तक | | **कन्या** | 04.00 बजे से |

**मंगलवार** 2025 वर्ष का 287 वा दिन
**दिशाशूल** उत्तर **ऋतु** शरद।
**विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947
**मास** कार्तिक (दक्षिण भारत में आश्विन) **पक्ष** कृष्ण
**तिथि** अष्टमी 11.10 बजे को समाप्त।
**नक्षत्र** पुनर्वसु 11.55 बजे को समाप्त।
**योग** सिद्ध 04.11 बजे प्रात: को समाप्त।
**करण** कौलव 11.10 बजे तदनन्तर तैतिल 22.47 बजे को समाप्त।
**चन्द्रायु** 22.2 घण्टे
**रवि क्रान्ति** दक्षिण 08° 09'
**सूर्य** दक्षिणायन
**कलि अहर्गण** 1872497
**जूलियन दिन** 2460962.5
**कलियुग संवत्** 5126
**कल्पारंभ संवत्** 1972949123
**सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123
**वीरनिर्वाण संवत्** 2551
**हिजरी सन्** 1447
**महीना** रबी उस्सानी
**तारीख** 21

| दिन का चौघड़िया | | | रात का चौघड़िया | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रोग** | 05.53 से | 07.22 बजे तक | **काल** | 05.42 से | 07.13 बजे तक |
| **उद्वेग** | 07.22 से | 08.15 बजे तक | **लाभ** | 07.13 से | 08.45 बजे तक |
| **चर** | 08.15 से | 10.19 बजे तक | **उद्वेग** | 08.45 से | 10.16 बजे तक |
| **लाभ** | 10.19 से | 11.48 बजे तक | **शुभ** | 10.16 से | 11.48 बजे तक |
| **अमृत** | 11.48 से | 01.16 बजे तक | **अमृत** | 11.48 से | 01.19 बजे तक |
| **काल** | 01.16 से | 02.45 बजे तक | **चर** | 01.19 से | 02.51 बजे तक |
| **शुभ** | 02.45 से | 04.13 बजे तक | **रोग** | 02.51 से | 04.22 बजे तक |
| **रोग** | 04.13 से | 05.42 बजे तक | **काल** | 04.22 से | 05.54 बजे तक |

**चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ** शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

## एक नजर

### विधायक ने सामुदायिक अस्पताल का किया औचक निरीक्षण

**चौपारण** : बरही विधायक मनोज कुमार यादव ने रविवार देर रात करीब 8 बजे चौपारण सामुदायिक अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति का जायजा लिया और अस्पताल में कार्यरत चिकित्सक व अन्य कर्मियों की उपस्थिति की जाँच की। विधायक ने अस्पताल के विभिन्न वार्डों और सुविधाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर और स्वास्थ्य कर्मियों से बातचीत कर उनकी उपस्थिति और कार्यशैली की जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को दूर करने और स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार लाने के लिए मौके पर ही आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के बाद विधायक ने कहा कि चौपारण सामुदायिक अस्पताल क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य इकाई है, और इसे बेहतर बनाना उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने घोषणा की कि अस्पताल के भवन और सुविधाओं के जीर्णोद्धार का कार्य जल्द ही शुरू कराया जाएगा।

### माउंट ऑलिवेट पब्लिक स्कूल में अभिभावक-शिक्षक गोष्ठी का आयोजना

**बरही** : बरही प्रखंड अंतर्गत विजैया पंचायत के गुडियो में संचालित माउंट ऑलिवेट पब्लिक स्कूल में अभिभावक सह शिक्षक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में शामिल अभिभावकों ने विद्यालय के विधि व्यवस्था, पठन पठान एवं शिक्षण व्यवस्था की सराहना की। इस दौरान विद्यालय के प्रधानाध्यापक विजय कुमार यादव ने अभिभावकों से बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने की बात कही। साथ विद्यालय की खूबियों से परिचित कराया। मौके पर अभिभावकों की उपस्थिति में विद्यालय में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम भी घोषित किया गया। गौरतलब हो कि यह विद्यालय विजैया एवं मलकोको सहित आस - पास के पंचायतों में सबसे बेहतरीन विद्यालयों में से एक है। इस तरह के आयोजन से निश्चित ही विद्यालय का शैक्षणिक माहौल सकारात्मक होगा। मौके पर माउंट ऑलिवेट स्कूल दिल्ली के इंचार्ज सुनील कुमार स्वर्णकार, शैक्षणिक प्रभारी राजदेव यादव, कार्यालय प्रभारी मुकेश कुमार यादव एवं रंजीत कुमार मौजूद थे। जबकि शिक्षकों में सोहन कुमार चंद्रा, इंद्रदेव शर्मा, दिलीप कुमार, सोनाली रॉय, अरुण कुमार, संतोष स्वर्णकार, भगवान प्रसाद, नरेश कुमार, मुकेश, रविन्द्र, भूषण यादव, रानी कुमारी, यशोदा कुमारी, काजल कुमारी, शिवानी कुमारी एवं अमीषा कुमारी समेत सैकड़ों अभिभावक मौजूद थे।

### ब्रह्म विद्या विहंगम योग की सत्संग गोष्ठी का हुआ आयोजन

**बरही** : बरही हजारीबाग रोड स्थित शकुंतला पैलेस में ब्रह्म विद्या विहंगम योग की ओर से सत्संग गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता कृष्णा गुप्ता एवं संचालन समुद्री देवी ने किया। वहीं सत्संग में ॐ कार ध्वनि, स्वागत गान, मंगल गान एवं माल्यार्पण सामूहिक रूप से किया गया। जबकि उद्घोष सुनीता देवी, ज्ञान गुदड़ी सिकंदर सिंह, स्वर्वेद पाठ कृष्णा गुप्ता, भजन सुनीता देवी, कैलाश केशरी एवं रविन्द्र सिंह एवं प्रवचन उपेंद्र पांडेय एवं कृष्णा गुप्ता ने किया। इस दौरान कृष्ण गुप्ता ने मौके पर मौजूद लोगों को ब्रह्मा विद्या विहंगम योग के उद्देश्य को जीवन में आत्मसात करने की बात कही। मौके पर उपेंद्र पांडेय, सुनीता देवी, रामचंद्र राम एवं कैलाश प्रसाद केशरी, किशोर सिंह, आरिफ अंसारी, प्रमोद गुप्ता , सोनू प्रजापति सहित कई लोग मुख्य रूप से मौजूद थे।

# उपायुक्त का नाम लेकर लोन पास कराने की फाइनेंस सॉल्यूशन सेंटर कर रही है उगाही

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

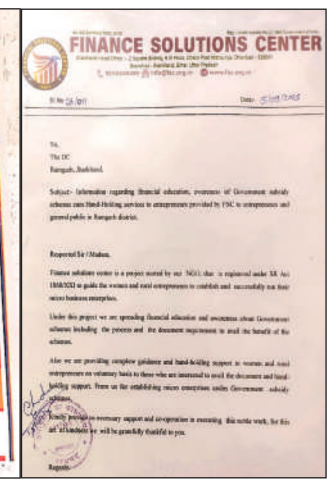


**रामगढ़** : रामगढ़ जिले बताया जाता है कि पिछले लगभग पांच महीने से फाइनेंस सॉल्यूशन सेंटर सीएमईजीपी, पीएमईजीपी, पीएमएफएमई, एमएसएमई, पीएमएमवाई, पीएमवीवाई 100% लोन पास करने की गारंटी लेकर क्षेत्र में तेजी से प्रचार प्रसार किया जा रहा है वहीं फाइनेंस सॉल्यूशन सेंटर के कर्मी लोगों ने रामगढ़ उपायुक्त फैज अक अहमद मुमताज के ऑथराइजेशन का नाम लेकर लोन आवेदक अवेदिकाओ को दिलाने के नाम से फॉर्म भरने का काम किया जा रहा हैं। दरअसल या मामला रामगढ़ जिला के कैथा मोड़ के नजदीक जहां पर फाइनेंस सॉल्यूशन सेंटर कार्यालय पिछले जून माह से संचालित किया जा रहा हैं। जिसमें रामगढ़ जिला के विभिन्न क्षेत्रों से महिला, पुरुष जुड़कर लोन पास करने के नाम से 1500 रु और 1 लाख से 18 लाख रुपए का लोन प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने के चार्ज पर 2000 रुपए से 7000 रुपए तक लिया जा रहा है। आपको बता दूं कि प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने के नाम से 1 से 3 लाख रुपए तक लोन प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाने का चार्ज 2000, 4 से 6 लाख रुपए का 3000 रूपए, 7 से 9 लाख रुपए तक 4000 रुपए, 10 से 12 लाख रुपए का 5000 रुपए,? 13 से 15 लाख रुपए तक 6000 रुपए और 16 से 18 लाख रुपए तक 7000 रुपए का प्रोजेक्ट बनाने के नाम से फाइनेंस सॉल्यूशन सेंटर ले रही है जिले में इस तरह का संस्था उपायुक्त का नाम लेकर लोन दिलाने का काम कर रही है ऐसे में यह जांच का विषय है।

## रामगढ़ के चर्चित काली मंदिर नूरी मस्जिद केस में भाजपा नेता सहित 13 लोग बाइज्जत बरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रामगढ़** : 13 अक्टूबर 2025 को रामगढ़ के माननीय अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी संदीप कुमार बर्तम के न्यायालय ने विगत 10 वर्षों से चल रहे रामगढ़ के चर्चित एन.एच.33 स्थित काली मंदिर नूरी मस्जिद रामगढ़ थाना के कांड संख्या 30/14 में महत्वपूर्ण निर्णय देते हुए भाजपा नेता धनंजय कुमार पुटूस सहित अन्य 13 अभियुक्तों रणंजय कुमार कुंटू, द्वारिका महतो, दामोदर महतो, धर्मेंद्र साव भोपाली, अंकित सिंह, बिट्टू सिंह चंडोक, प्रदीप कुशवाहा, लालबिहारी महतो, मनोज महतो, सुरेश महतो, चिंतामणि पटेल, भुनेश्वर महतो, तारकेश्वर महतो को बाइज्जत बरी कर दिया। यह मामला विगत 10 वर्षों से लंबित था। निर्णय के बाद अपनी प्रतिक्रिया देते हुए धनंजय कुमार पुटूस ने कहाः मुझे हमेशा माननीय न्यायालय पर पूरा विश्वास था कि न्याय अवश्य मिलेगा। आज का निर्णय इस बात का प्रमाण है कि सत्य की हमेशा विजय होती है। इस मामले में धनंजय कुमार पुटूस की ओर से पैरवी वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. राजेंद्र कुमार ने की।

## हर परिवार तक विकास की रोशनी पहुंचाना हमारा संकल्प : भूषण बाड़ा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**केरसई** : प्रखंड के टैंसेर नवाटोली में 63 केवीए और दुगाटोली में 25 केवीए नए ट्रांसफार्मर का उद्घाटन विधायक भूषण बाड़ा ने किया। मौके पर विधायक भूषण बाड़ा ने कहा कि हर गांव तक बिजली पहुंचाना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। ग्रामीण क्षेत्र के हर परिवार तक विकास की रोशनी पहुंचे, यही हमारा संकल्प है। सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर व्यक्ति तक पहुंचे, इसके लिए हमारी टीम निरंतर प्रयासरत है। मौके पर उपस्थित जिप सदस्य एवं महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष जोसिमा खाखा ने कहा कि ग्रामीणों की सुविधा और बच्चों की पढ़ाई के लिए निर्बाध बिजली आपूर्ति बहुत जरूरी है। कांग्रेस पार्टी जनता के बीच जाकर उनके मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि सह मुखिया मुंश खेस, विधायक प्रतिनिधि सुरेन्द्र प्रसाद, मंडल अध्यक्ष मनोज कुमार, अल्पसंख्यक अध्यक्ष बशारत अंसारी, कार्यकारी प्रखंड अध्यक्ष बालासीयूस खेस, उप प्रमुख सिलबेस्टर बघवार, 20 सूत्री सदस्य मनोहर प्रसाद, जिला सचिव विनय तिग्गा, पंचायत अध्यक्ष नोवेल मिंज, मन्नू यादव, अरविंद यादव, सुधीर मिंज, शंभु प्रसाद, प्रतिमा कुजूर, उर्मिला केरकेट्टा, शोभेन तिग्गा, सुचिता तिर्की, ईश्वर दास, प्रभाकर तिर्की, संजोम बेक, जीवन बेक, विल्सन बेक, धीरज बेक, सौरव तिर्की, मुकुट बेक, राजकुमार तिर्की सहित भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता और ग्रामीण उपस्थित थे।

## रामगढ़ में मुख्यमंत्री ट्रैक्टर एवं सोलर पंप सेट वितरण योजना के तहत लाभुकों को मिला लाभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**रामगढ़** : कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग अंतर्गत भूमि संरक्षण प्रभाग द्वारा सोमवार को जिला समाहरणालय परिसर में मुख्यमंत्री ट्रैक्टर वितरण योजना एवं सोलर पंप सेट वितरण योजना के तहत लाभुकों को ट्रैक्टर एवं सोलर पंपसेट उपलब्ध कराया गया। इस दौरान माननीय विधायिका रामगढ़ ममता देवी, माननीय विधायक मांडू निर्मल महतो, उप विकास आयुक्त आशीष अग्रवाल, प्रभारी पदाधिकारी गोपनीय शाखा रविंद्र कुमार गुप्ता के द्वारा योजना के तहत लाभुकों को लाभ दिया गया। मौके पर मुख्यमंत्री ट्रैक्टर वितरण योजना के तहत 50% अनुदान पर सपना महिला स्वयं समूह, कमल आजीविका सखी मंडल, चांदनी महिला समूह, रोशनी आजीविका सखी मंडल, आजीविका सखी स्वयं सहायता समूह को ट्रैक्टर उपलब्ध कराया गया वहीं सोलर पंप सेट 90% अनुदान पर फागु बेदिया, कयूम अंसारी, बबीता देवी, दहाबुन निशा, मुनुवा देवी, सोनी देवी, प्रदीप प्रसाद, जमन महतो, दीपक कुमार महतो, धर्मेंद्र कुमार, मुकंद महतो को पंपसेट उपलब्ध कराया गया। इस दौरान भूमि संरक्षण पदाधिकारी अनूप कुमार हेंब्रम, कनीय अभियंता नरेंद्र देव पटेल सहित अन्य उपस्थित थे।

## कुरडेग में मैंया सम्मान योजना में अवैध निकासी का मामला, बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**कुरडेग** : प्रखंड के कुटमाकछार पंचायत अंतर्गत राजस्व ग्राम दरीडीह गांव के भेंडर सतीश साय द्वारा मैंया सम्मान योजना में अवैध निकासी किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार वही गांव के निवासी मंजरी केरकेट्टा उम्र 49 वर्ष पति बामावास केरकेट्टा के द्वारा आरोप है कि मेरा मैंया सम्मान योजना का पैसा अवैद्य रूप से निकासी कर लिया है। पूर्व में भी प्रखंड विकास पदाधिकारी कुरडेग को इस सम्बन्ध में आवेदन दिया था। उसके बाद प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा भेंडर सतीश साय को सितंबर महीने में बुलाकर पैसा वापस करने की बात कहकर करने के बात कही। लेकिन उसको पैसा देने को लेकर झगड़ा भी कर रहा था। फिर भी पैसा नहीं दिया गया। इसके बाद प्रखंड उप प्रमुख अजय जायसवाल और प्रमुख पति दिलीप साय जी के पास मामला आया और उसके द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी को उपयुक्त महिला का पैसा वापस करवाते हुए उक्त आदमी के ऊपर कानूनी करवाई करने के बाद कही गई। और आवेदन बनाकर ज्ञापन सौंपा गया।

# सिमडेगा पुलिस के हाथ लगी बड़ी सफलता, 50 पैकेट में 62.624 किलोग्राम अवैध गांजा किया गया बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**सिमडेगा** : दिनांक- 12.10.25 को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि, राउरकेला से सिमडेगा के रास्ते एक मेरून रंग का वेरना कार जिसका रजि0न0-डब्ल्यूबी02एसी 9494 से अवैध गांजा लेकर बिहार ले जाया जा रहा है। उक्त सूचना के आलोक में पुलिस अधीक्षक महोदय सिमडेगा के निर्देशन में अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी सिमडेगा के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम एवं सशस्त्र बलों के द्वारा हलवाई पुल के पास वाहन चेकिंग प्रारंभ किया गया। कुछ समय पश्चात समय करीब 21:15 बजे राउरकेला की ओर से एक मेरून रंग का वेरना कार आते दिखाई दिया, जिसे सशस्त्र बलों के सहयोग से रोका गया तथा वाहन का चालक से नाम पूछने पर अपना नाम विशाल पटेल उम्र 24 वर्ष, पिता- मनीष पटेल, सा0-रामनगर आंदर ढाला, थाना- नगर थाना, जिला- सिवान(बिहार) बतलाया। वाहन की जांच करने पर पाया गया कि, पीछे डिक्की में लोहे का चदरा से वेल्डिंग कर अलग से एक केबिन बनाया गया था, जिसके अंदर छोटे-छोटे पैकेटों में कुल 50 पैकेट अवैध गांजा बरामद किया गया, जिसका वजन 62.624 किलोग्राम है। उक्त के संबंध में सिमडेगा थाना काण्ड सं0- 110/25, दिनांक- 13.10.25, धारा- 20(B)(ii)(B) एनडीपीएस दर्ज किया गया तथा उक्त अवैध गांजा एवं घटना में प्रयुक्त वाहन एवं एक डढढड मोबाईल को विधिवत जप्त करते हुए अभियुक्त विशाल पटेल उम्र 24 वर्ष, पिता- मनीष पटेल, सा0-रामनगर आंदर ढाला, थाना- नगर थाना, जिला- सिवान(बिहार) को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

## संक्षिप्त खबरें

### रामगढ़ मिलिट्री स्टेशन में 33 केवीए डीवीसी फीडर लाइन का उद्घाटन

**रामगढ़** : रामगढ़ कैंट को नईसराय से बिजली देने वाली 33 केवीए फीडर लाइन का उद्घाटन स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर साजेश बाबू पी. जी. ने 13 अक्टूबर 2025 को किया। यह परियोजना लगभग 9 .37 करोड़ रुपए की लागत से बनी है। इस लाइन से अब रामगढ़ मिलिट्री स्टेशन को 24 घंटे बिजली की सुविधा मिलती रहेगी। इससे सभी सैनिकों और कर्मचारियों के कामकाज में सुविधा होगी। इस लाइन के आने से अब रामगढ़ में बिजली की कोई कमी नहीं रहेगी। रक्षा विभाग और झारखंड के मुख्यमंत्री की बैठक के बाद इस काम को जल्दी पूरा किया गया। इस कार्य को करने मे मुख्यमंत्री ने जरूरी मंजूरियाँ दिलाने और विभागों के बीच तालमेल बैठाने में अहम भूमिका निभाई। रक्षा विभाग, डीवीसी और झारखंड सरकार के बीच निरंतर समन्वय ने सभी प्रमुख अड़चनो, तकनीकी कठिनाइयों और चुनौतीयों का समाधान करते हुए इस परियोजना को समय पर पूरा किया गया। यह परियोजना राज्य की राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के लिए एक बड़ा कदम है। और यह दिखाता है की अगर सभी विभाग मिलकर काम करें तो कोई भी काम असभंव नहीं है।

### डीसी के निर्देश पर गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी प्रतिमा का निरीक्षण एवं मरम्मती कार्य शुरू

**रामगढ़** : रामगढ़ शहर अंतर्गत गांधी चौक स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा क्षतिग्रस्त होने संबंधित सूचना प्राप्त होने पर उपायुक्त, रामगढ़ फैज अक अहमद मुमताज के निर्देश पर सोमवार को अनुमंडल पदाधिकारी अनुराग कुमार तिवारी एवं प्रभारी पदाधिकारी गोपनीय शाखा सह नजारत उप समाहर्ता रविंद्र कुमार गुप्ता ने स्थल पर पहुंचकर प्रतिमा का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में उनके द्वारा प्रतिमा की जांच की गई। जांच के उपरांत प्रतिमा की मरम्मती का कार्य शुरू किया गया। टाटा के प्रतिनिधि दीपक श्रीवास्तव को प्रतिमा की मरम्मती सुनिश्चित कराने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। साथ ही प्रतिमा के पुराने हो जाने के मद्देनजर नयी प्रतिमा लगाए जाने की कार्यवाई की जा रही है।

### राज्य स्तरीय वेटलिफ्टिंग में चौपारण का परचम, रौशन और आशीष ने जीता गोल्ड

**चौपारण** : फिटनेस और खेल भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चौपारण के केसरवानी धर्मशाला परिसर में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता का समापन जोरदार माहौल में हुआ। प्रतियोगिता में चौपारण के ही रौशन केसरी और आशीष यादव ने शानदार प्रदर्शन कर गोल्ड मेडल जीतते हुए ओवरऑल चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे विधायक मनोज यादव ने विजेता खिलाड़ियों को पदक और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि चौपारण के युवा अब खेल के क्षेत्र में इतिहास रच रहे हैं। सीमित संसाधनों में भी यहाँ के खिलाड़ी राज्य स्तर पर अपना दमखम दिखा रहे हैं, यह पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है। इस प्रतियोगिता में हजारीबाग, रांची, धनबाद, बोकारो, कोडरमा, गिरीडीह, चतरा और गया जिलों से सौ से अधिक खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और ताकत व तकनीक का शानदार प्रदर्शन किया। पहले दिन महिला वर्ग की खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता में जलवा बिखेरा। ज्योति, मनीषा, जीवन, शिवांगी और अलीशा ने अपने शानदार प्रदर्शन से दर्शकों का दिल जीत लिया। दूसरे दिन पुरुष वर्ग के मुकाबले में जबरदस्त रोमांच देखने को मिला। बड़ी संख्या में दर्शक खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करने पहुंचे। प्रतियोगिता का संचालन रांची और हजारीबाग के अनुभवी कोच व रेफरी राजकुमार थापा, विशाल झा और उनकी छह सदस्यीय टीम ने किया। आयोजन को सफल बनाने में एवी फिटनेस के सदस्य अविनाश केसरी, रौशन केसरी, आशीष यादव, सूरज, रीतेश और वैभव की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आयोजकों ने बताया कि यह सिर्फ एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि फिट चौपारण, हेल्दी चौपारण का संदेश लेकर आया है। इसका उद्देश्य युवाओं को नशे से दूर कर खेल और अनुशासन से जोड़ना है।समापन समारोह में खेल प्रेमियों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और सैकड़ों दर्शकों ने युवाओं के इस शानदार प्रदर्शन की सराहना की। आयोजकों ने अगली बार इसे और बड़े पैमाने पर आयोजित करने का संकल्प लिया। विजेताओं में 59 किग्रा में रौशन केशरी, गोल्ड मेडल, रीतेश केशरी सिल्वर, 66 किग्रा आशीष यादव, गोल्ड मेडल, गौरव राणा, व संजय रूंडा, सिल्वर 53 किग्रा संदीप कुमार गोल्ड मेडल, अंकित कुमार, सिल्वर सुरज कुमार सिल्वर, संजय रुंडा आशीष यादव, बेंच प्रेस गोल्ड मेडल सहित दो दर्जन से अधिक युवा शामिल हैं।

### गोशला में पासवान कल्याण समिति की बैठक संपन्न

**चौपारण** : पासवान कल्याण समिति की पंचायत स्तरीय बैठक गोशला ग्राम बजरंग मंदिर के प्रांगण में किया गया। इसकी अध्यक्षता पूर्व मुखिया कैलाश पासवान व संचालन रेवाली पासवान ने किया। बैठक के मुख्य अतिथि हजारीबाग ज़िले के अनुसूचित जाति विभाग के कार्यकारी ज़िला अध्यक्ष रेवाली पासवान ने कहा की शिक्षा को बढ़ावा देना ही मेरा पहला कर्तब्य है समाज को एक जुट एवं समाज में बढ़ रहे कुरीतिओं, अंधविश्वास, दहेज प्रथा आदि को मिटाने पर समाज को आगे आना चाहिए। बैठक मे कमिटी का गठन किया गया, जिसमे अध्यक्ष सेवा निर्मित दरोगा जोगेंद्र पासवान, सचिव आदित्य पासवान, कोषाध्यक्ष संजय पासवान एवं अमृत पासवान को संयोजक बनाया गया। बैठक में बैजू गहलौत, प्रेमधारी पासवान, निर्मल पासवान, प्रदीप पासवान, कपिलदेव पासवान, रामदेव पासवान, संजय पासवान बिहारी, सुधीर कुमार कौशल, अजय पासवान, अशोक पासवान, बद्री पासवान, महेन्द्र पासवान, अभिषेक गहलोत, रामचंद्र पासवान, बिशुन पासवान, सहदेव पासवान, विकास कुमार पासवान, सहदेव पासवान, मुनेश्वर पासवान, राहुल पासवान, रामचंद्र पासवान, सुजीत पासवान, अर्जुन पासवान सहित अन्य उपस्थित थे।

## एक नजर

### गैंगस्टर से रुपया ट्रांजैक्शन के आरोप में उधवा से एक युवक गिरफ्तार

**साहिबगंज:** जिला के उधवा प्रखंड में धनबाद के प्रिंस खान गैंगस्टर से कनेक्शन के आरोप में धनबाद पुलिस ने राधानगर थाना क्षेत्र के एक युवक को हिरासत में लिया है। मिली जानकारी के अनुसार धनबाद के कुख्यात गैंगस्टर प्रिंस खान ग्रुप के एक सदस्य से उधवा के एक युवक के अकाउंट में कुछ राशि का ट्रांजेक्शन होने के आरोप में थाना बुलाया। हालांकि कितना रुपया ट्रांजैक्शन हुआ यह स्पष्ट नहीं हो सका है। रविवार की देर शाम गोविंदपुर थाना के एसआई के नेतृत्व में एक टीम राधानगर थाना पहुंची थी। जहां राधानगर थाना पुलिस के सामने उधवा के उक्त युवक से लंबी पूछताछ के बाद हिरासत में लिया। हालांकि राधानगर थाना से 24 घंटे के लिए ट्रांजिट पर उक्त युवक को धनबाद पुलिस साथ ले गई है। मामले को लेकर स्थानीय पुलिस कुछ भी बताने से इनकार कर रही है। इधर युवक के परिजनों ने बताया कि वह बोकारो के आसपास बालू घाटों में नदी से बालू उठाने वाले मशीन (बोट) का संचालन करते थे। बालू या बोट खरीद-बिक्री में कोई अनजान व्यक्ति रुपया उसके अकाउंट में भेजा होगा।

### तेज रफ्तार ट्रैक्टर मारी पलटी, बाल-बाल बच्चे चालक

**साहिबगंज:** जिला के तीनपहाड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत धमधामिया सवलापुर मुख्य सड़क के धमधमिया संथाली के समीप सोमवार को एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलटी मार दिया। मिली जानकारी के अनुसार एक ट्रैक्टर धमधमिया की ओर से काफी तेज गति से जा रही थी कि अचानक धमधमिया संथाली के पहले पलटी मार दिया। हालांकि इस घटना में किसी प्रकार का कोई हताहत नही हुआ है। मामले को लेकर तीनपहाड़ थाना पुलिस जांच में जुटी थीं।

### नहाने के दौरान 38 वर्ष युवक गंगा नदी में डूबा, लापता

**साहिबगंज:** गंगा स्नान करने गए 38 वर्षीय युवक गंगा में डूबे, हुए लापता,जिले के जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत चानन गांव निवासी भोला मंडल 38 वर्षीय पिता जगदीश मंडल रोज की तरह आज भी मजदूरी कर घर आया। इसके बाद वह गंगा स्नान करने गया। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार भोला मंडल जैसे ही गंगा में गया अचानक गहरे पानी में चला गया जिससे कि वह गंगा में डूब गया और लापता हो गया। परिवार के लोगों ने काफी खोजबीन की लेकिन पता नहीं चल पाया। बता दे की भोला मंडल का तीन बेटी और दो बेटा है। वहीं उनकी पत्नी और बच्चे का रो-रो कर बुरा हाल है खबर लिखे जाने तक भोला मंडल का कोई पता नहीं चल पाया।

### जेएलकेएम सह सचिव जितेंद्र कुमार को मातृ शौक, शौक व्यक्त

**चास:** प्रखण्ड पंचायत बाधाडीह के स्व मुखिया अर्जुन राजवार की धर्मपत्नी व जेएलकेएम प्रखण्ड सह सचिव जितेंद्र राजवार का माता अनिता देवी 80 बर्ष का सोमवार को निधन हो गया। इनकी निधन की खबर सुनकर गाँव समाज व कार्यकताओं धोवनी गांव पहुँच कर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया। ये दो पुत्र व एक पुत्री सहित भरापुरा परिवार छोड़ कर गये हैं। इनका अंतिम संस्कार दामोदर नदी तेलमोचौ घाट पर किया गया। शौक व्यक्त राजवार समाज सुधार समिति पुर्व अध्यक्ष सह विधानसभा पुर्व प्रत्याशी जगन्नाथ राजवार,

# दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर डीसी की अध्यक्षता में शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** समाहरणालय सभागार में जिला दंडाधिकारी-सह-डीसी हेमंत सती की अध्यक्षता में दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर विधि-व्यवस्था संधारण एवं जनसुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य रूप से वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग उपस्थित थे। बैठक के दौरान डीसी ने कहा कि आगामी पर्वों को शांति, सौहार्द और सुरक्षा के साथ संपन्न करना जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने सभी थाना प्रभारियों एवं अंचल अधिकारियों को निर्देश दिया कि अपने-अपने क्षेत्रों में लाइसेंस प्राप्त पूजा समितियों की जानकारी अद्यतन रखें और उनसे निरंतर संपर्क बनाए रखें। प्रत्येक पूजा पंडाल में लाइटिंग, अग्निशमन, विद्युत सुरक्षा, वॉलिंटियर व्यवस्था तथा यातायात नियंत्रण की समुचित तैयारी सुनिश्चित करने को कहा गया। डीसी ने निर्देश दिया कि संवेदनशील एवं अतिसंवेदनशील स्थलों पर विशेष निगरानी रखी जाए। जिला प्रशासन द्वारा ड्रोन कैमरा के माध्यम से निगरानी की जाएगी तथा सीसीटीवी कैमरों का अधिष्ठापन भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिला एवं पुलिस प्रशासन पूर्ण समन्वय के साथ सतर्क रहेगा ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति न उत्पन्न हो। काली पूजा के दौरान साहिबगंज नगर क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निकलने वाले मां काली के जुलूस को लेकर भी विशेष दिशा-निर्देश दिए गए। डीसी ने सभी पूजा समितियों से रस्सा, लाइटिंग, एवं वालंटियर्स की उचित व्यवस्था करने को कहा। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को जुलूस मार्ग की साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था, और ट्रैफिक नियंत्रण की व्यवस्था सुदृढ़ करने का निर्देश दिया।डीसी ने स्वास्थ्य विभाग को भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि दीपावली के दौरान किसी प्रकार की दुर्घटना की स्थिति में त्वरित चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराने हेतु एंबुलेंस की व्यवस्था, बर्न वार्ड में चिकित्सकों की ड्यूटी रोस्टर के अनुसार तैनाती, तथा सभी चिकित्सकों को अलर्ट मोड पर रहने के निर्देश दिए गए हैं। अग्निशमन वाहन एवं कर्मियों को भी अलर्ट मोड पर रहने का आदेश दिया गया है ताकि किसी आकस्मिक घटना पर तुरंत नियंत्रण पाया जा सके। डीसी हेमंत सती ने कहा कि जिला प्रशासन चाहता है कि पूजा समितियां एवं जिलेवासी प्रशासन के साथ सहयोग करें और सभी दिशा-निदेशों का पालन करते हुए पर्वों को सौहार्दपूर्ण एवं सुरक्षित वातावरण में मनाएँ। उन्होंने कहा कि जिलेवासियों की सुरक्षा जिला प्रशासन की सर्वोच्च जिम्मेदारी है, जिसे हम पूरी प्रतिबद्धता के साथ निभाएँगे। बैठक के अंत में डीसी ने सभी उपस्थित अधिकारियों, पूजा समिति प्रतिनिधियों एवं जिलेवासियों को दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व की अग्रिम शुभकामनाएँ दीं तथा सभी से अपील की कि वे स्वच्छता, शांति एवं सद्भाव बनाए रखते हुए पर्वों का आनंद लें।

## कुसुमकियारी आईटीआई में 100 बेड का छात्रावास बनेगा : विधायक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**चंदनक्यारी :** प्रखंड के कुसुमकियारी स्थित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान परिसर में श्रम नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग, झारखंड सरकार द्वारा स्वीकृत भवन मरम्मति एवं रंगाई-पुताई कार्य का आज विधायक उमाकांत रजक ने विधिवत शिलान्यास किया। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्र के विकास से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घोषणाएँ भी कीं। विधायक उमाकांत रजक ने अपने संबोधन में कहा कि निकट भविष्य में कुसुमकियारी आईटीआई परिसर में 100 छात्रों के लिए एक आधुनिक छात्रावास का निर्माण किया जाएगा, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा मिल सकेगी। उन्होंने बताया कि छात्रावास निर्माण की प्रक्रिया फिलहाल टेंडर चरण में है और शीघ्र ही इसका कार्य प्रारंभ होगा। विधायक ने कहा कि चंदनक्यारी जैसे ग्रामीण क्षेत्र के किसान और मजदूरों के बेटे आज आईटीआई की शिक्षा लेकर रेलवे, सेल, ईसीएल समेत विभिन्न प्रतिष्ठानों में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि जल्द ही कुसुमकियारी पंचायत में एक राइस मिल भी स्थापित की जाएगी, जिससे किसानों को अपने धान को स्थानीय स्तर पर बेचने की सुविधा मिलेगी और धनबाद या अन्य जिलों में भेजने की आवश्यकता नहीं रहेगी। उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में क्षेत्र के विकास की गति थम सी गई थी, लेकिन अब जनसहयोग से विकास की रफ्तार तेजी से आगे बढ़ रही है। विधायक ने बताया कि आईटीआई भवन की मरम्मति का कार्य इसी सोच का हिस्सा है, और भविष्य में छात्रावास का शिलान्यास भी शीघ्र किया जाएगा।

## चलती ट्रेन से छिनतई किए गए मोबाइल के साथ एक व्यक्ति ने आरपीएफ के समक्ष किया आत्मसमर्पण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** बरहरवा 08 अक्टूबर 2025 को ट्रेन संख्या 13415 इंटरसिटी एक्सप्रेस में हुई मोबाइल छिनतई की घटना के मामले में आरपीएफ बरहरवा को बड़ी सफलता मिली है। आरपीएफ इंस्पेक्टर संजीव कुमार के नेतृत्व में लगातार की जा रही छापेमारी और कड़ी कार्रवाई के दबाव में आरोपी ने स्वयं सामने आकर चोरी किए गए मोबाइल के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। सूत्रों के अनुसार, 13 अक्टूबर 2025 को शाम 6:05 बजे एक व्यक्ति मो. मुश्ताक शेख, उम्र 41 वर्ष, पिता मो. सकूरउद्दीन शेख, निवासी तेतुल्ला, झीकटिया, साहिबगंज आरपीएफ पोस्ट बरहरवा पहुंचे। उन्होंने अपने समक्ष एक व्यक्ति के साथ मोटोरोला कंपनी का काले रंग का मोबाइल फोन प्रस्तुत किया। पूछताछ के दौरान प्रस्तुत व्यक्ति ने अपना नाम यूसुफ शेख, उम्र 23 वर्ष, ग्राम मोगलपारा, पोस्ट इस्लामपुर, थाना बरहरवा, जिला साहिबगंज बताया। उसने स्वीकार किया कि 08 अक्टूबर 2025 को जब ट्रेन संख्या 13415 बोनीडांगा स्टेशन से बरहरवा की ओर धीरे-धीरे बढ़ रही थी, उसी समय उसने चलती ट्रेन से एक यात्री का मोबाइल फोन झपट्टा मारकर छीन लिया और गेट नंबर 67 के समीप उतर गया था। आरपीएफ द्वारा लगातार मोगलपारा क्षेत्र में छापेमारी किए जाने से डरकर वह अपने घर से फरार हो गया था। लेकिन बाद में उसने अपनी गलती स्वीकार की और अपने ससुर के समक्ष अपराध कबूल करते हुए माफी मांगी। इसके बाद उसने चोरी किया हुआ मोबाइल अपने ससुर मो. मुश्ताक शेख के माध्यम से आरपीएफ के समक्ष प्रस्तुत किया। साथ ही प्रस्तुत मोबाइल को शाम 6:20 बजे, उप निरीक्षक लाल बहादुर माझी ने उपस्थित गवाहों के समक्ष जब्त किया। इंस्पेक्टर संजीव कुमार ने बताया कि इस सफलता का श्रेय आरपीएफ टीम के निरंतर प्रयासों को जाता है।

## कृषक उपकार लाइवलीहुड अफ्लिमेंट फाउंडेशन के द्वारा किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** कृषक उपकार लाइवलीहुड अफ्लिमेंट फाउंडेशन के द्वारा संचालित एग्री क्लीनिक सेंटर, राजमहल के कृषि समन्वयक निकेश कुमार द्वारा आज किसानों के बीच मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के कई किसान उपस्थित रहे, जिनमें गोपाल घोष, ममता रॉय, गीता रॉय, मुबारक हुसैन सहित अन्य कृषक शामिल थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को उनकी भूमि की उर्वरता और पोषक तत्वों की स्थिति के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करना था, ताकि वे वैज्ञानिक तरीके से खेती कर सकें और उत्पादन में वृद्धि कर सकें। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से वे अपनी मिट्टी की गुणवत्ता का आकलन कर सकते हैं और आवश्यक पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए उचित कदम उठा सकते हैं।

**मिट्टी की गुणवत्ता का आकलन:** किसान अपनी मिट्टी में मौजूद पोषक तत्वों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

**उर्वरकों का संतुलित उपयोग** मिट्टी की रिपोर्ट के आधार पर किसान सही मात्रा में उर्वरकों का उपयोग कर सकते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता है और मिट्टी की सेहत बनी रहती है।

फसलों की उत्पादकता में वृद्धिः संतुलित पोषण से फसलों की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार होता है। मिट्टी की सेहत में सुधारः किसानों को मिट्टी सुधार के उपायों की जानकारी देकर दीर्घकालिक उर्वरता सुनिश्चित की जाती है।

कृषकों में जागरूकताः यह योजना किसानों में वैज्ञानिक खेती और मिट्टी संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक है। कार्यक्रम के अंत में कृषि समन्वयक निकेश कुमार ने किसानों से अपील की कि वे नियमित रूप से अपनी मिट्टी की जांच कराएं और मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दी गई सिफारिशों के अनुसार खेती करें, जिससे वे कम लागत में अधिक उपज प्राप्त कर सकें। इस अवसर पर उपस्थित किसानों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि मृदा स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से उन्हें अपनी भूमि के पोषण स्तर की सही जानकारी मिल रही है, जो उनके लिए अत्यंत उपयोगी है।

### स्कूल प्रांगण से हाई वोल्टेज तार हटाने की मांग

**बोकारो :** जरीडीह प्रखंड खुटरी पंचायत के ठाकुरटांड़ गांव में स्तिथ उत्क्रमित मध्य विधालय के प्रांगण से मात्र एक खंभे के सहारे गुजरे ग्यारह हजार वोल्ट के तार को हटाने की मांग हेडमास्टर अनील तिवारी व ग्रामीणों ने जैनामोड़ बिजली विभाग से की है। तिवारी ने बताया कि तार के कारण विद्यार्थी केम्पस में खेलने से डरते हैं। कई बार तार टूट कर गिर चुका है। एक बार स्कूल के बाहर तार गिरने से दो भैंसों की मौत भी हो गई है। शिक्षा विभाग के साथ साथ बिजली विभाग को पत्र लिखकर देने के बाद भी तार को नहीं हटाया गया। सरकार के जनता दरबार में अधिकारियों ने कहा था कि तार के निचे जाली लगा दिया जाएगा , वह भी आज तक नहीं हुआ। भविष्य में कोई अनहोनी हो इससे पहले समस्या का समाधान होना चाहिये।

# धर्मांतरण की साजिश, बुर्का पहनाकर नाबालिक किशोरी को बंगाल ले जा रहा मुस्लिम युवक गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

**साहिबगंज :** गुरुग्राम की एक नाबालिक हिंदू किशोरी को शादी और धर्मांतरण के झांसे में फंसा कर बंगाल ले जा रहे एक मुस्लिम युवक को आरपीएफ ने शुक्रवार रात बरहरवा स्टेशन पर दबोच लिया। आरोपी की पहचान साहेल अली निवासी शुरून उत्तर दिनाजपुर के रूप में हुई है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार युवक किशोरी को बुर्का पहना कर ब्रह्मपुत्र मेल से बंगाल लेकर जा रहा था। इसी दौरान ट्रेन बरहरवा स्टेशन पर रुकी तो लड़की ने मौका पाकर प्लेटफार्म पर उतरने की कोशिश की, पीछे से आरोपी भी उतर गया। दोनों में हो रही कहा सुनी को देख गश्ती कर रहे आरपीएफ जवानों को शक हुआ और उन्हें हिरासत में ले लिया गया।

**गुरुग्राम से गायब थी किशोरी, पिता ने दर्ज कराई थी गुमशुदगी**

किशोरी मूल रूप से नेपाल के रहने वाली है। उसके पिता हरियाणा के गुरुग्राम में होटल में खाना बनाते हैं और मां घरेलू महिला है। 9 अक्टूबर को परिजनों ने उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट थाना में दर्ज कराई थी। परिवार के अनुसार आरोपी साहेल अली उसी इलाके में रहता था और धीरे-धीरे किशोरी से उसकी जान पहचान हुई। इसके बाद उसने उसे बहला-फुसला कर अपने साथ भागने की साजिश रची।

**दिल्ली में बनवाया फर्जी आधार, नाम बदलकर बना दिया रेशमा खातून**

लड़की ने आरपीएफ को बताया कि 9 अक्टूबर को साहेल उसे दिल्ली ले गया, जहां उसने अपने कुछ साथियों की मदद से उसका फर्जी आधार कार्ड बनवाया। असली नाम की जगह कार्ड पर रेशमा खातून लिखवाया गया। गुरुवार रात आरोपी ने उसे बुर्का पहनाया और दिल्ली स्टेशन से ट्रेन में बैठाया। पहले कटिहार का टिकट लिया, लेकिन बाद में दोनों ब्रह्मपुत्र मेल में सवार हो गए। रास्ते में साहेल ने अपने मामा और कई रिश्तेदारों से फोन पर बात की। मामा ने लड़की को लाने से मना किया तो साहेल ने कहा कि वह अब कोलकाता जाएगा।

**लड़की को हुआ शक तो बरहरवा स्टेशन पर उतर कर दी पुलिस को सूचना**

मामा की बात सुनकर लड़की को युवक की मनसा पर शक हुआ। शुक्रवार रात ट्रेन बरहरवा स्टेशन पर रुकी तो लड़की ट्रेन से उतर गई। आरोपी भी उसके पीछे-पीछे उतरा। प्लेटफार्म पर दोनों में चल रही कहा सुनी और तकरार को देख कर आरपीएफ जवानों को कुछ गड़बड़ लगी। पूछताछ में किशोरी ने पूरी कहानी बता दी। इसके बाद दोनों को हिरासत में ले लिया गया। परिजनों को सूचना दी गई और आरोपी को आगे की कार्रवाई के लिए जीआरपी को सौंप दिया गया।

## संक्षिप्त खबरें

### पहाड़िया समाज व भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री द्वारा विद्युत विभाग के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

**साहिबगंज:** जिला के बोरियो प्रखंड क्षेत्र के हाथीगढ़ तेलों पचाड़े पहाड़ के आदिम जनजाति गांव के विगत एक माह से जले हुए ट्रांसफार्मर नहीं बदलने की विरोध में पहाड़िया समाज द्वारा सोमवार को विद्युत विभाग के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम किया गया। जहां इस विरोध प्रदर्शन कार्यक्रम में भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री बजरंगी प्रसाद यादव अपने कार्यकताओं के साथ विरोध रैली प्रदर्शन निकालते हुए उक्त पहाड़िया गांव में जल्द से जल्द बिजली मुहैया कराने की मांग की। उधर बिजली विभाग परिसर में संबंधित अधिकारियों को आवेदन सौंपने के बाद उपायुक्त हेमंत सती को ज्ञापन सौंपा गया। उधर भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री बजरंगी प्रसाद यादव के नेतृत्व में पहाड़िया गांव के दर्जनों लोगों ने एकजुट होकर आवेदन देते हुए जल्द से जल्द ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की। जहां बिजली विभाग ने मामले में संज्ञान लेते हुए त्वरित कार्यवाही करते हुए पहाड़िया गांव में ट्रांसफार्मर की व्यवस्था कर दिया गया जिससे स्थानीय लोगों में खुशी का माहौल है।

### साहिबगंज महाविद्यालय में बीएड सत्र 2025-27 की कक्षा शुरू, सभी छात्रों को प्राचार्य ने दी शुभकामनाएं

**साहिबगंज:** साहिबगंज महाविद्यालय में बीएड सत्र 2025 –27 के लिए चयनित छात्रों का दो वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम कक्षा सोमवार से प्रारंभ हुआ। कक्षा के प्रथम दिन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर सैयद राजा इमाम रिजवी ने सभी नए छात्रों को पाठ्यक्रम में चयन के लिए बधाई दी तथा नियमित रूप से कक्षा में आकर क्लास करने प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्देश दिया। विभागअध्यक्ष डॉ डेविड यादव ने बीएड पाठ्यक्रम ओर नियम के बारे में विस्तार से छात्रों को बताया। मौके पर प्रोफेसर डॉ रविंद्र प्रसाद, प्रोफेसर रेखा चौधरी, प्रोफेसर हेमलता साह, प्रोफेसर नितिन कुमार घोष, प्रोफेसर चंद्रशेखर प्रमाणिक, डॉ मनोज कुमार, डॉ जयशंकर सिंह, डॉ सुनीता कुमारी, डॉ मो असादुल्लाह, प्रोफेसर प्रदीप कुजुर व छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

### घर-घर जाकर पल्स पोलियो का स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारी ने किया भ्रमण

**साहिबगंज:** जिला में सोमवार को राज्य स्तरीय टीम से डॉ. अंजुम इकबाल राज्य कालाजार सलाहकार रांची झारखण्ड एवं जिला स्तरीय टीम से हीना गौरव वर्णवाल जिला कार्यक्रम प्रबंधक, डॉ. सत्ती बाबू डाबडा जिला वी बीडी सलाहकार, अमित कच्छप डीडीएम व अन्य जिला स्तरीय पदाधिकारी के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बोरियो के अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बोरियो, बोरियो हरिजन टोला, आयुष्मान आरोग्य मंदिर डुमरिया अंतर्गत पत्थरघट्टा आदि में तीन दिवसीय पल्स पोलियो कार्यक्रम का दूसरा दिन घर घर भ्रमण कर मॉनिटरिंग किया गया। जिसमे टीम के द्वारा पल्स पोलियो कार्यक्रम से सम्बंधित बूथकर्मियों से आवश्यक बिन्दुओ पर चर्चा किए एवं आवश्यक सलाह भी दिए। साथ ही टीम के द्वारा बूथ कर्मियों को सभी 0 से 5 साल तक के सभी बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने को कहा गया। साथ ही टीम के द्वारा बूथ कर्मियों को कहा की क्षेत्र में एक भी बच्चा ना छूटे सभी को पोलियो की खुराक जरूर पिलाये। अगर एक भी बच्चा छुटा.....तो हमारा सुरक्षा चक्र टुटा। इसके साथ ही डॉ. अंजुम इकबाल राज्य कालाजार सलाहकार के द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बोरियो में दो कालाजार पीकेडीएल मरीजों का फॉलो अप कर ईलाज प्रारम्भ किया गया। मौके पर डॉ. पंकज कुमार प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, डॉ. विवेक भारती, डॉ. सुदामा कुमार साह, बिष्णु कुमार भगत बीपीएम, मनोहर पंडित एमटीएस, प्रवीर कुमार सिन्हा एमटीएस, लवली कुमारी सीएचओ, अर्चना कुमारी एएनएम, सहिया, सेविका आदि मौजूद थे।

### सहायक श्रमायुक्त के साथ बार्ता सफल रहा हड़ताल स्थगित : बीके चौधरी

**बोकारो :** कोक ओवेन एण्ड कोक केमिकल बिभाग मे कार्यरत ठेकाकमीर्यों के मांगो को लेकर जय झारखंड मजदूर समाज की ओर से 18,10,24 के लिए एक दिवसीय ( 24 घंटे )हड़ताल का नोटिस दिया था जिस पर आज सहायकश्रमायुक्त केन्द्रीय धनबाद मे दुसरे दिन भी बार्ता हुई। पहले दौर की बार्ता मे कोक शोर्टिंग प्लांट मे काम करने बाले को पहले महिना मे मात्र 21 दिन ही काम पर बुलाया जाता था जिसे पूरा महिना काम देने का सुझाव सहायक श्रमायुक्त ने प्रबंधन को दिया था जिसपर अमल किया गया साथ मे सभी जरूरत का सुरक्षा उपकरण देने का भी निर्देश दिया गया था जिसका अमल प्रबंधन करने लगा है। आज की बार्ता मे मजदूरों को रात्री पाली भत्ता,साईकिल भत्ता,केन्टीन भत्ता,इन्सेंटिव रिवार्ड, प्रोफिट लिंक रिवार्ड,एस डब्लू का ईलाज साथ मे दूर्गा पूजा दिवाली से पहले बोनस का भुगतान इत्यादि पर लम्बी बार्ता के बाद प्रबंधन ने दिवाली पूर्व बोनस भुगतान स्वीकार किया लेकिन बांकी मांगो पर यह कहते हुए जवाब दिया कि वांकी मांग एन जे सी एस स्तर का है जिसे सेल मुख्यालय भेजा जायगा। बोनस सहित स्थानीय मांगो के पूरा होने पर जय झारखण्ड मजदूर समाज ने हड़ताल वापस लेने पर सहमति जताया। बार्ता मे प्रबंधन की ओर से महाप्रबंधक कोक ओवेन के एन झा,सहायक महाप्रबंधक आई आर मोहम्मद आरिफ हुसैन, युनियन की ओर से महामंत्री बि के चौधरी,संयुक्त महामंत्री एन के सिंह, कार्यालय मंत्री आर बी चौधरी,उत्तम कुमार, राजेन्द्र प्रसाद, संतोष महतो, सुदामा गिरी, अनिल मुर्मू, निरंजन गिरी, राजेश गिरी, मनोज दास, प्रेम चंद महतो, इत्यादि उपस्थित थे।

# छठ महापर्व की तैयारी: गंगा जलस्तर के बीच बिहार प्रशासन अलर्ट मोड पर

## 109 घाटों को 21 सेक्टर में बांट कर होगी निगरानी

**पटना।** छठ महापर्व, सिर पर है और गंगा का जलस्तर अब भी सामान्य से अधिक है। ऐसे में लाखों श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षित घाट तैयार करने के लिए प्रशासन सतर्क है। इसी क्रम में रविवार सुबह प्रमंडलीय आयुक्त अनिमेष कुमार पराशर, जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एसएम, एसएसपी कार्तिकेय के शर्मा व नगर आयुक्त यशपाल मीणा ने दीघा पाटीपुल घाट से कलेक्ट्रेट घाट तक लगभग तीन घंटे पैदल चलकर घाटों का निरीक्षण किया। इस दौरान घाटों की भौगोलिक स्थिति, कटाव, ढलान व दलदल आदि का अवलोकन कर इसकी बाबत निर्देश दिए गए। जल संसाधन विभाग के अनुसार, छठ पर्व के समय गंगा का जलस्तर 45 से 46 मीटर के बीच रहने की संभावना है। गत वर्ष यह 44.64 मीटर था। जलस्तर में कमी की प्रवृत्ति को देखते हुए संवेदनशील घाटों पर सुरक्षात्मक कार्य करने व स्पष्ट साइनेज लगाने का निर्देश दिया गया है। प्रमंडलीय आयुक्त ने पांच फीट गहराई वाले क्षेत्र से पहले मजबूत बैरिकेडिंग करने व खतरनाक घाटों को लाल कपड़े से घेरने का निर्देश दिया है। संबंधित अधिकारियों को गंगा के घटते जलस्तर को ध्यान में रखते हुए घाटों का निर्माण करवाने को कहा गया है। सभी विभागों को आपसी समन्वय से युद्धस्तर पर सभी तैयारियां समय पर पूरी करने का आदेश दिया गया है। प्रमंडलीय आयुक्त ने अधिकारियों को आपस में समन्वय कर पूर्णतः दुर्घटनारहित एवं छठव्रतियों के लिए सभी प्रशासनिक सुविधायुक्त व्यवस्था करने का निर्देश दिया। सुबह 8 बजे दीघा पाटीपुल घाट से मीनार घाट, जेपी सेतु पश्चिमी घाट, दीघा पोस्ट आफिस घाट, जेपी सेतु पूर्वी घाट, गेट नं. 93, गेट नं 88, गेट नं 83 (संत माइकल हाई स्कूल के बगल की गली) घाट, बालुपर घाट, कुर्जी घाट, एलसीटी घाट, राजापुर पुल घाट, पहलवान घाट, बांस घाट, बुद्धा घाट एवं कलेक्ट्रेट घाट तक करीब नौ किलोमीटर सभी अधिकारियों ने एक-एक घाट का निरीक्षण किया। घाटों की वर्तमान स्थिति यथा कटाव, दलदल, ढलान इत्यादि के साथ सभी घाटों के अप्रोच रोड में पैदल चलकर इसकी अद्यतन स्थिति का निरीक्षण किया। रास्ते में जहां गड्ढे थे उन्हें भरने व अन्य व्यवधान दूर करने का निदेश दिया गया। जिला प्रशासन व नगर निगम की तैयारियों पर चर्चा की गई। इसमें बताया गया कि दानापुर से पटना सिटी तक 109 प्रमुख घाटों को 21 सेक्टर में बांट कर सेक्टर पदाधिकारियों एवं सेक्टर पुलिस पदाधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है। हर घाट पर डेडिकेटेड टीम मौजूद रहेगी। अभी घाटों के अप्रोच रोड एवं अन्य व्यवस्थाओं की तैयारी की जा रही है। जलस्तर में कमी की प्रवृत्ति व घाटों की भौगोलिक स्थिति को देख कर घाटों को तैयार किया जा रहा है। अधिकारियों ने कहा कि मानदंडों के अनुसार सातो दिन 24 घंटे तैयारी चल रही है। गंगा नदी का जलस्तर गांधी घाट पर रविवार को 47.28 मीटर था। 11 अक्टूबर को यह

47.44 मीटर था। इस प्रकार पिछले 24 घंटा में 16 सेंटीमीटर जल-स्तर कम हुआ है। अनुमान है कि इस वर्ष छठ के समय गांधी घाट पर जलस्तर लगभग 45 से 46 मीटर रहेगा। गत वर्ष यह 44.64 मीटर था। प्रमंडलीय आयुक्त ने कहा कि अधिकारी लगातार जलस्तर पर नजर रखें और घटने की प्रवृति के अनुसार सभी तैयारी करें। जिन-जिन घाटों पर कटाव अधिक है उस पर नजर रखें। सभी घाटों पर बड़े-बड़े अक्षरों में घाटों का नाम एवं वाच टावरों तथा अन्य सुरक्षात्मक संरचनाओं की नंबरिंग का आदेश दिया गया है। एनडीआरएफ-एसडीआरएफ की तैनाती के साथ आपदा प्रबंधन तंत्र पूरे समय सक्रिय रहेगा। प्रमंडलीय आयुक्त ने कहा कि दीघा, कुर्जी, कलेक्ट्रेट व आसपास बड़े-बड़े घाट हैं। इन घाटों पर काफी संख्या में छठव्रती व श्रद्धालु आते हैं। इसको देखते हुए निर्धारित मापदंडों के अनुसार सारी तैयारी करने का निर्देश दिया गया है। विद्युत विभाग के कार्यपालक अभियंता को प्रकाश की समुचित व्यवस्था करने को कहा गया है। आयुक्त ने कहा कि छठव्रतियों व श्रद्धालुओं के लिए घाटों एवं मार्गों में सभी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। पुरुषों व महिलाओं के लिए अलग-अलग शौचालय, स्वच्छ पेयजल, चेंजिंग रूम, व्रतियों के ठहरने हेतु शेड, घाटों के यथासंभव नजदीक वाहन पार्किंग की बेहतर सुविधा रहेगी। पार्किंग स्थल पर बैरिकेडिंग, ड्राप गेट की व्यवस्था रहेगी। आयुक्त ने कहा कि घाटों के पास एवं संपर्क पथ में समुचित संख्या में वाच टावर की स्थापना की जाएगी। घाटों पर नियंत्रण कक्ष कार्यरत रहेगा। ध्वनि-विस्तारक यंत्र एवं स्थायी तथा अस्थायी सीसीटीवी कैमरा के माध्यम से भीड़ को नियंत्रित किया जाएगा। घाटों पर जाने के लिए अप्रोच रोड सुचारू एवं अवरोध-मुक्त रहेगा। घाटों पर उत्कृष्ट सफाई एवं प्रकाश-व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। नगर निगम द्वारा सभी वार्डों में स्ट्रीट लाइट दुरुस्त कराई जा रही है।

# वाहन जांच के दौरान कुख्यात अपराधी जग्गा यादव गिरफ्तार

## 9 एमएम पिस्तौल और चार जिंदा कारतूस बरामद

**पटना।** बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर सहरसा पुलिस पूरी तरह सतर्क है। जिले में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए जगह-जगह चेकपोस्ट बनाए गए हैं और सघन वाहन जांच अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को नया बाजार स्थित सिल्की पेट्रोल पंप के पास वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस को बड़ी सफलता मिली। चेकिंग के दौरान कुख्यात अपराधी जग्गा यादव को उसके एक साथी के साथ गिरफ्तार किया गया। मौके पर मौजूद यातायात डीएसपी अजीत कुमार ने बताया कि पुलिस की टीम नया बाजार क्षेत्र में वाहनों की गहन जांच कर रही थी। इस दौरान एक काले रंग की नेक्सॉन कार को रोका गया, जिसमें तीन लोग सवार थे। जांच के दौरान एक व्यक्ति के पास से 9 एमएम की पिस्तौल और चार जिंदा कारतूस बरामद किए गए। पुलिस ने मौके पर ही दो अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि तीसरा व्यक्ति फरार हो गया। भागे हुए आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। गिरफ्तार अपराधी जग्गा यादव सहरसा जिले के सिमरीबख्तियारपुर थाना क्षेत्र के सुखासनी गांव का रहने वाला बताया जा रहा है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, वह सहरसा में रहकर कई आपराधिक गतिविधियों में शामिल रहा है। उसके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। कुछ महीने पहले सदर थाना क्षेत्र के अस्पताल कॉलोनी में आपसी वर्चस्व के विवाद में उसे गोली भी मारी गई थी। डीएसपी अजीत कुमार ने बताया कि विधानसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए जिले के सभी इलाकों में सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है।

## दरभंगा में मां-बेटी लापता

**दरभंगा।** सिंहबाड़ा थाना क्षेत्र से एक मां-बेटी के लापता होने का मामला सामने आया है। महिला 5 अक्टूबर को अपनी 2 साल की बेटी के साथ मेला देखने निकली थी, लेकिन देर रात तक घर नहीं लौटी। काफी खोजबीन के बाद भी जब कोई सुराग नहीं मिला तो परिजनों ने पुलिस को इसकी सूचना दी। लापता मां-बेटी की पहचान रघवा गांव निवासी रानी देवी(21) और बेटी रुचिता कुमारी(2) के तौर पर हुई है। रानी देवी अपने पति विपिन कुमार और बेटी के साथ मायके रघवा गांव आई हुई थी। उस दिन वह अपनी दो सहेलियों आंचल कुमारी और किरण देवी के साथ मेला देखने गई थी।

## संक्षिप्त डायरी

### पवन सिंह की पत्नी ज्योति लड़ेंगी बिहार विधानसभा चुनाव, भोजपुरी स्टार के ससुर ने किया दावा

**पटना।** गायक पवन सिंह के ससुर रामबाबू सिंह ने कहा कि ज्योति सिंह का बिहार में विधानसभा चुनाव लड़ना तय है। उन्होंने कहा कि वह किस सीट से लड़ेंगी, यह अभी तय नहीं हुआ है। लोकसभा चुनाव में गायक पवन सिंह के लिए प्रचार के दौरान कराकट के लोगों से ज्योति सिंह का खास लगाव हो गया था। पवन सिंह के हारने के बाद स्थानीय लोग ज्योति को चुनाव में उतारने की मांग कर रहे थे। रामबाबू सिंह ने रविवार को एक बयान में बताया कि तीन महीने पहले मैं पवन सिंह से मिला था। पवन सिंह ने कहा कि मैंने उनसे ज्योति को विधायक बनाने के लिए कहा था। लेकिन यह पूरी तरह से गलत है। उन्होंने सच्चाई नहीं बताई थी। मैं उनके यहां गया था, उनके पैर पकड़ कर विनती की थी कि मेरी बेटी को सम्मान पूर्वक साथ रखिए, मेरी इज्जत बचा लीजिए। मैंने पूरी कोशिश की, लेकिन उन्होंने कहा कि अदालत फैसला करेगी तो देखा जाएगा। मैंने उनसे 10 दिन बाद मिलने और स्थिति पर शांतिपूर्वक विचार करने का अनुरोध किया लेकिन तब से वे मेरा फोन नहीं उठा रहे हैं।

### नवादा में रिटायर्ड नर्स के घर से 50 लाख के जेवरात और 10 लाख नगद गायब

**नवादा।** नगर थाना क्षेत्र शहर के न्यू एरिया मोहल्ला स्थित हनुमान नगर कॉलोनी में रविवार को एक बड़ी चोरी की घटना सामने आई है। सेवानिवृत्त नर्स मांडवी कौशिक के पुराने मकान से करीब 50 लाख रुपये के जेवरात और 10 लाख रुपये नकद की चोरी कर ली गई। घटना के समय घर में कोई भी सदस्य मौजूद नहीं था, जिससे चोरों को वारदात को अंजाम देने में आसानी हुई। परिजनों के अनुसार, मांडवी कौशिक और उनका परिवार हाल ही में एक नए मकान में शिफ्ट हुआ है, जबकि नकदी और गहने पुराने घर में ही रखे गए थे। रविवार रात मांडवी कौशिक के पति नए घर में खाना खाने के लिए आए थे। इसी दौरान चोरों ने पुराने घर में घुसकर अलमारी में रखे नकदी और जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। चोरी की इस घटना में सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि न तो घर का ताला टूटा है और न ही अलमारी का। इससे पुलिस को आशंका है कि वारदात किसी करीबी व्यक्ति ने ही की है, जिसे घर और अलमारी की चाबी की जानकारी थी। घटना की सूचना मिलते ही नगर थानाध्यक्ष अविनाश कुमार अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। पुलिस ने एफएसएल (फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी) की टीम और डॉग स्क्वायड को भी घटनास्थल पर बुलाया है। थानाध्यक्ष अविनाश कुमार ने बताया कि संदेह के आधार पर घर के कुछ सदस्यों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही मामले का खुलासा कर दिया जाएगा। इस वारदात से मोहल्ले में दहशत का माहौल है और लोग अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं।

# 392 किलो विस्फोटक के साथ चार आरोपी गिरफ्तार

**पटना।** बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर चल रहे ऑपरेशन 'जखीरा' के तहत पटना पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। बिहटा के अमहरा आईआईटी थाना क्षेत्र के तारानगर गांव में छापेमारी के दौरान पुलिस ने 392 किलोग्राम विस्फोटक पदार्थ बरामद किया है। इस मामले में पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि तारानगर गांव में बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री इकट्ठी की जा रही है।

सूचना के आधार पर एक विशेष टीम गठित कर छापेमारी की गई। छापेमारी के दौरान पुलिस ने एक घर से 392 किलो विस्फोटक जब्त किया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान मोहम्मद अरमान, मोहम्मद राजा, मोहम्मद आफताब और सोनू आलम, सभी निवासी तारानगर, के रूप में हुई है। इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक मिलने से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई है। पटना पश्चिमी सिटी एसपी भानु प्रताप सिंह ने बताया कि तारानगर में पहले भी वर्ष 2018 में विस्फोट की एक बड़ी घटना हुई थी, जिसमें काफी नुकसान हुआ था।

उसी क्षेत्र में फिर से विस्फोटक सामग्री मिलने की सूचना पर यह छापेमारी की गई। एसपी ने बताया कि बरामद किया गया विस्फोटक पटाखे बनाने के लिए अवैध रूप से रखा गया था, लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में इसे लाने और रखने के पीछे की मंशा को लेकर जांच जारी है।

# गोलीकांड के पीड़ित परिवार से मिले पप्पू यादव

## मंत्री पर लगाया अपराधियों को संरक्षण देने का आरोप

सुपौल। बीते दिनों सुपौल के सदर थाना क्षेत्र के अंतर्गत बैरो में हुए गोलीकांड में मृतक साजन मुखिया के परिजनों से रविवार को पूर्णिया से निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने मुलाकात की। इस दौरान सांसद ने सूबे के ऊर्जा मंत्री सह स्थानीय विधायक बिजेंद्र प्रसाद यादव पर जमकर हमला बोला। उन्होंने मंत्री पर अपराधियों को संरक्षण देने का आरोप लगाते हुए कहा कि अपराध की कोई जाति नहीं होती है लेकिन बिहार में सुशासन के नाम पर महाजंगलराज चल रहा है। मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव और जदयू के लोग अपराधियों को संरक्षण दे रहे हैं। मंत्री और सरकारी अधिकारी अपराधी को बचाने में जुटे हैं। सांसद ने कहा कि अपराधी के परिजन सुपौल के तथाकथित विश्वकर्मा के इर्द-गिर्द घूमते रहे हैं। गरीब का वोट 25 साल से ले रहे हैं, लेकिन गरीबी खत्म नहीं हुई, उन्हें न्याय नहीं मिला। सुपौल में आम लोगों ने कभी आजादी नहीं

देखी। अपराध के विरोध में प्रदर्शन करने पर पुलिस ने लाठी चलाई। यह आतंक का राज है। सरकार जितना भी आतंक को सपोर्ट करना हो, करे लेकिन ये महागुंडाराज नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि चुनाव का वक्त होने की वजह से गोलीकांड के आरोपी को सरेंडर कराया गया है, अन्यथा ये लोग आरोपी पक्ष के लोगों को अपने साथ रखते हैं। उन्होंने कहा कि आचार संहिता की वजह से वे ज्यादा कुछ नहीं बता सकते लेकिन पीड़ित परिवार को मदद की है। हालांकि सहायता राशि पर सांसद ने कुछ भी बोलने से इंकार किया। उन्होंने कहा कि आदर्श चुनाव आचार संहिता की वजह से वे अभी परिवार को छोटी सहायता ही उपलब्ध करा सके हैं। चुनाव के बाद परिवार के स्वरोजगार के लिए उनका सहयोग रहेगा। वैशाली में बाढ़ पीड़ितों की मदद करने पर उनके विरुद्ध आचार संहिता उल्लंघन का मामला दर्ज कर लिया गया है। उन्होंने पीड़ित परिवार के लिए 20 लाख रुपए मुआवजा, सरकारी नौकरी और केस के स्पीडी ट्रायल की मांग की। उन्होंने कहा कि उन्होंने पीड़ित परिवार को तत्काल सहायता उपलब्ध कराई है। मृतक घर का इकलौता बेटा था। लिहाजा अब वे स्वयं और उनकी पत्नी सह कांग्रेस की राज्यसभा सांसद रंजीत रंजन पीड़ित परिवार के लिए साथ खड़े रहेंगे। साथ ही जरूरत पड़ने पर न्याय की लड़ाई भी लड़ेंगे। सूत्रों के अनुसार सांसद ने पीड़ित परिजनों को एक लाख रुपए भी दिए। सांसद पप्पू यादव दोपहर डेढ़ बजे हेलिकॉप्टर से सदर प्रखंड अंतर्गत परसरमा के कोहली मैदान पहुंचे थे, जिसके बाद सड़क मार्ग से समर्थकों के साथ वे बैरो पंचायत के वार्ड 12 पहुंचे, जहां उन्होंने मृतक साजन मुखिया के परिजनों से मुलाकात कर घटना की जानकारी ली। सांसद ने घटना के अगले दिन पुलिस की लाठीचार्ज को लेकर भी आपत्ति जताई। इधर सांसद के कार्यक्रम के दौरान स्थानीय लोगों में खासा उत्साह दिखा।

# छात्र नेता खुशबू पाठक लड़ेंगी चुनाव

**पटना।** बिहार में विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद राज्य की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। भोजपुर जिले में प्रथम चरण के चुनाव होने हैं और कई उम्मीदवार चुनावी मैदान में सक्रिय हो गए हैं। इसी बीच, भोजपुर की छात्र नेता खुशबू पाठक, जिन्होंने 70वीं बीपीएससी शिक्षक भर्ती पेपर लीक कांड के खिलाफ सड़कों से लेकर जेल तक संघर्ष किया, अब राजनीतिक मैदान में उतरने जा रही हैं। 9 दिन बेऊर जेल में बिताने वाली छात्रा अब बड़हरा विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़कर छात्रों, युवाओं और महिलाओं की आवाज विधानसभा तक पहुंचाने का संकल्प लेकर सामने आई हैं। खुशबू पाठक ने घोषणा की है कि वे आगामी विधानसभा चुनाव में बड़हरा से प्रत्याशी के रूप में मैदान में उतरेंगी। उनका कहना है कि वे युवाओं, छात्रों और महिलाओं की आवाज बनकर राजनीति में नई दिशा देना चाहती हैं। खुशबू पाठक

लंबे समय से शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और प्रतियोगी परीक्षाओं में सुधार की मांग को लेकर आंदोलन करती रही हैं। वे 70वीं बीपीएससी शिक्षक भर्ती परीक्षा में पेपर लीक प्रकरण के विरोध में हुए आंदोलन की प्रमुख चेहरों में से एक रही हैं। इसी दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन्होंने पटना के बेऊर जेल में 9 दिन बिताए। खुशबू का कहना है कि उनका चुनावी एजेंडा स्पष्ट है, प्रतियोगी परीक्षाओं को समय पर कराना, नौकरियों में पारदर्शिता सुनिश्चित करना, अभ्यर्थियों को कट ऑफ मार्क्स की बुकलेट उपलब्ध कराना और युवाओं तथा महिलाओं के हितों की रक्षा करना। खुशबू ने कहा कि युवाओं को सिर्फ सड़कों पर आंदोलन करने के बजाय राजनीति में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। उनका मानना है कि जब तक युवा आगे नहीं आएंगे, तब तक व्यवस्था में बदलाव संभव नहीं है। बड़हरा प्रखंड के पीपरपांती गांव की रहने वाली खुशबू पाठक ने बताया कि वे राजनीति को समाज सेवा का माध्यम मानती हैं और छात्रों के अधिकारों की लड़ाई को विधानसभा के मंच तक ले जाने का संकल्प लेकर चुनावी मैदान में उतर रही हैं।

# बिहार में इस बार एक साथ तीन पर्व, परदेश से वापस लौट रहे लोग, ट्रेन-फ्लाइट फुल

**पटना।** मुंबई, दिल्ली, सूरत, बेंगलुरु जैसे शहरों से बड़ी संख्या में प्रवासी अपने गांवों की ओर लौट रहे हैं। हालांकि, हर वर्ष छठ और दीपावली पर प्रवासी लौटते रहे हैं, लेकिन इस बार बात कुछ है। दरअसल, वोट डालने की दायित्व भी उनके साथ है। इन सबसे विधानसभा चुनाव एक बार फिर मात्र राजनीतिक नहीं, सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र बनता दिख रहा है। गांवों और कस्बों में इन दिनों एक अनोखी चहल-पहल है। एक ओर पारंपरिक पर्वों की तैयारी जोरों पर है, तो दूसरी ओर लोकतंत्र के उत्सव की अनुभूति भी। नोएडा की एक फैक्ट्री में प्रबंधक बेगूसराय के रोशन सिह भी घर आने वाले हैं। कहते हैं कि इस बार घर आने के दो कारण हैं, छठ और चुनाव। दोनों ही हमारे लिए त्योहार हैं। इधर कई लोग अपने गांव आ भी गए हैं। उनसे गांवों की दुकानों पर रौनक बढ़ गई है। बाजार गुलजार हैं और चाय की दुकानों पर राजनीतिक बहस एक करवट गर्म और दूसरी करवट ठंड हो रही है। त्योहार की तैयारी के बीच लोग यह भी तय कर रहे हैं कि किसे वोट देना है। प्रवासियों के लौटने से सड़कों पर चहल-पहल है, रेलवे स्टेशन गुलजार हैं और हवाई जहाजों की सीटें फुल। मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, सूरत जैसे महानगरों से बड़ी संख्या में प्रवासी बिहार लौट रहे हैं, लेकिन इस बार मात्र घर के लिए नहीं, लोकतंत्र के लिए भी लौट रहे हैं। मुजफ्फरपुर के अरुणोदय कुमार हरियाणा में नौकरी करते हैं। रोशन की तरह छठ तो साधना-अराधना का निमित्त है ही, चुनाव

लोकतंत्र के लिए निर्धारित दायित्वों के निर्वहन का महापर्व है। आहुति दोनों में देनी है। बेंगलुरु की साफ्टवेयर कंपनी में डेवलपर दिव्यांशु झा मुस्कुराते हुए कहते हैं कि हम तो वोटर-पर्यटक हैं। उद्देश्य मात्र वोट नहीं। गांव की मिट्टी, त्योहार की महक और अपनेपन की हवा भी साथ आती-जाती है। मधुबनी की श्रुति शर्मा मुंबई में इंजीनियर हैं। घर आने का कार्यक्रम तय है। कहती हैं कि इस बार वोट डालने के साथ मधुबनी पेंटिंग और गांव की हवा भी साथ ले जाऊंगी। लोकतंत्र मात्र मतदान नहीं, जुड़ाव का अनुभव भी है। इस बार चुनाव प्रचार में भी त्योहार की छाप साफ दिख रही है। कई प्रत्याशी दीपावली के आयोजन में सम्मिलित हो रहे हैं, तो कुछ छठ घाटों की सफाई में स्वयं फावड़ा उठा रहे हैं। पोस्टरों और भाषणों में ह्वसंस्कृति से जुड़ावह्व और ह्वपर्वों की गरिमाह्व जैसे शब्द आम हो गए हैं। राजनीतिक दलों ने भी त्योहारों के इस माहौल को ध्यान में रखते हुए अपने संदेशों को भावनात्मक और सांस्कृतिक रंग दिया है। सेवानिवृत्त शिक्षक रामकेवल सिंह मानते हैं, अब प्रवासी युवक मात्र त्योहार के अतिथि नहीं, लोकतंत्र के जागरूक भागीदार भी हैं। यह वापसी मात्र भावनात्मक नहीं, राजनीतिक जागरूकता की भी प्रतीक है। प्रो. मनोज प्रभाकर के अनुसार, यह ट्रेंड बताता है कि आज का युवा मतदाता मात्र अधिकार नहीं, जिम्मेदारी भी समझता है। साथ ही यह एक संकेत है कि चुनाव अब एक लोकतांत्रिक उत्सव बनता जा रहा है, जिसमें नारे, पोस्टर और रैलियों से आगे जाकर लोग भावनात्मक रूप से जुड़ रहे हैं। बिहार की मिट्टी से जुड़े पर्व हमेशा सामूहिक उल्लास का प्रतीक रहे हैं। लोक-आस्था का महापर्व छठ हो या प्रकाश-पर्व दीपावली, गांव की चौपाल से लेकर शहर की गलियों तक, हर कोना जगमगाता है।

# क्यों होती है बेचैनी

आपाधापी व कोलाहल से परिपूर्ण इस युग में उत्तेजना या बेचैनी की शिकायत एक आम बात है। एक अध्ययन के अनुसार 20 से 34 फीसदी लोग इस शिकायत से ग्रस्त हैं।

## लक्षण

उत्तेजना या बेचैनी जैसी शिकायत में व्यक्ति किसी भी काम को शुरू करने से पहले ही घबराने लगता है। उसका दिल तेजी से धड़कने लगता है, हाथ-पैरों में थरथराहट होती है और पेट में हलचल महसूस होती है। इस रोग का सीधा संबंध हमारे शरीर के तंत्रिका तंत्र से होता है। उत्तेजना से संबंधित दो तरह की बीमारियां प्राय: ज्यादातर लोगों में पाई जाती हैं।

## कुछ अनजाने डर

इसे चिकित्सकीय भाषा में 'पैनिक डिसार्डर' भी कहते हैं। इस मर्ज में रोगी बिना किसी कारण के उलझन महसूस करने लगता है। मानो उसकी सांसें रुक जाएंगी और दिल जोर से धड़कने लगता है और उसे घुटन-सी महसूस होने लगती है। ऐसे रोगी भीड़भाड़ वाली जगह पर नहीं जाते, उन्हें लिफ्ट पर चढ़ने में डर लगता है कि कहीं लिफ्ट न गिर जाए। इसी प्रकार की एक दूसरी समस्या को चिकित्सकीय भाषा में सामान्य उत्तेजना गड़बड़ी (जनरल एंग्जाइटी डिसार्डर) कहते हैं। इस रोग में रोगी दिन-भर घबराता रहता है। वह मामूली आहट से भी सहम जाता है। इस वजह से उसे नींद नहीं आती है और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

## उपचार

इस तरह की मानसिक बीमारियों के उपचार के लिए अब यूएसएफडीए एप्रूव्ड जैसी कई प्रभावशाली दवाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। इन दवाओं के सेवन से 12 से 15 सप्ताह के अन्दर रोगी पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है, इसके साथ ही रोगी को मनोचिकित्सकीय परामर्श भी दिया जाता है।

# जीभ का स्वाद बिगड़ जाए तो...

- राई – पानी में 10 ग्राम राई को डालकर उबाल लें। इस पानी से प्रतिदिन सुबह-शाम कुल्ला करने से जीभ का स्वाद ठीक हो जाता है।
- नौसादर – 5 ग्राम नौसादर और 5 ग्राम कालीमिर्च को पीसकर इसमें शहद मिलाकर जीभ पर रगड़ें तथा लार को बाहर गिरने दें। इससे जीभ की कड़वाहट दूर हो जाती है।
- दालचीनी – जीभ पर कड़वाहट महसूस होने पर दालचीनी या बच को पीसकर और छानकर इस चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करने से जीभ की कड़वाहट दूर हो जाती है।
- अमलतास – 20 ग्राम अमलतास के गूदे को 250 ग्राम गर्म दूध में मिलाकर कुल्ला करें। इससे अफीम तथा कोकीन के सेवन करने के कारण खराब हुआ जीभ का स्वाद फिर से ठीक हो जाता है।

# पोस्टपार्टम डिप्रेशन से बचाव

**पोस्टपार्टम अवसाद** और 'बेबी ब्लू', दोनों ही स्थितियां एक दूसरे से अलग हैं, इन दोनों प्रकार के अवसाद के लक्षण भिन्न है। 'बेबी ब्लू' प्रसव पूर्व होने वाली ऐसी अवस्था है, जो सबसे सामान्य है और हर तीन में से एक महिला में यह स्थिति पाई जाती है। प्रसव के बाद कुछ हफ्तों में शरीर में हुए हार्मोनल परिवर्तन की वजह से ये विकार होता है। प्रसव के बाद नई मां अक्सर भावनात्मक रुप से संवेदनशील हो जाती है, कुछ ही क्षण में वह खुश हो जाती है और अगले कुछ क्षणों में दुखी। 'बेबी ब्लू' विकार से और भी समस्याएं आ सकती हैं, लेकिन इससे आमतौर पर एक मां की जिम्मेदारी और कार्य में हस्तक्षेप नही होता और कुछ सप्ताह बाद यह बीमारी खत्म हो जाती है।

पोस्टपार्टम अवसाद एक अलग स्थिति है। यह समस्या प्रसव के पहले, दूसरे या तीसरे महीनों में किसी भी समय शुरू हो सकती है। इसमें दु:ख और निराशा महसूस होती है या व्यक्ति कभी-कभी खुद को बेकार और दोषी मानता है। नई मां किसी भी कार्य या बात में एकाग्रता या रुचि लेने मे असमर्थ हो जाती है, यहां तक कि बच्चे की जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाती। कुछ मामलों में बच्चों की जरूरतों को लेकर वो अति व्याकुल भी हो सकती है। वह बहुत चिंतायुक्त, संवेदनशील बन जाती है और उसके मन में इस तरह के परेशान करने वाले विचार बार-बार आने से उसको बच्चे के स्वास्थ्य की भी चिंता होने लगती है। ऐसे में नई मां बार-बार एक ही कार्य करती है, जैसे बच्चे कि बार-बार जांच करती है या फिर लगातार बच्चों के चिकित्सक को फोन करके सवाल पूछती है।

इस विकार के कुछ दुर्लभ मामलों में, लगभग 1000 में से 1 मामले में इस विकार वाली महिला (साइकोटिक) मनोरोगी बन जाती है। जिसमें वह वास्तविकता की पहचान करने में असमर्थ होती है। इस स्थिति को कभी-कभी पोस्टपार्टम मनोविकृति कहा जाता है। इस विकार में मां को मतिभ्रम होता है (जैसे ऐसी आवाजें या महक आना जो वहां नही है) या झूठे भ्रम होना (जैसे उनके बच्चे को शैतान ने पकड़ लिया है) इस प्रकार की हालत मां और बच्चे दोनों के लिए खतरनाक है और अगर ये विकार एक बार हुआ है तो उसकी दूसरे बच्चे के दौरान होने की संभावना ज्यादा होती है।

पोस्टपार्टम अवसाद 10 में से 1 नई मां में होता है। एक महिला में प्रसव के बाद ये अवसाद हो सकता है, अगर उसमें निम्नलिखित लक्षण हो-

- अगर उस महिला मे पहले से अवसाद इतिहास है।
- पहली गर्भावस्था के दौरान अवसाद हुआ हो।
- शादीशुदा जिंदगी में परेशानी, मित्रों या परिवार मे सहायक सदस्यों की कमी।
- अपने नए शिशु की देखभाल के लिए कठिनाई, खासकर अगर बच्चे को गंभीर चिकित्सा समस्याएं हैं।
- किशोर माताओं, खासकर यदि वे गरीब आर्थिक संसाधनों वाले परिवारों से हैं।
- इस तरह के लक्षणो वाली महिलाओ मे पोस्टपार्टम अवसाद कि विशेष रूप से उच्च जोखिम होती है।

आधे से भी कम महिलाएं जिनको पोस्टपार्टम अवसाद होता है, वो उनकी समस्याओं के लिये चिकित्सा कराती है।

कुछ महिलाएं इस बात से अनजान होती की उनको पोस्टपार्टम अवसाद है और वह इलाज से ठीक हो सकता है। कुछ महिलाएं ऐसा सोचती है की उनको तो एक बच्चा होने के बाद खुश होना चाहिये फिर उनको उदासी क्यों हो रही है, इस तरह के अजीब लक्षणों से उनको शर्मिंदगी होती है और वी किसी से मदद भी नहीं ले पाती।

**प्रसव के तुरंत बाद की अवधि को पोस्टपार्टम कहते है। इस अवधि के दौरान एक औरत में अवसाद के लक्षण दिखते है और इसीलिए इसे पोस्टपार्टम (प्रसव के पश्चात आने वाला) अवसाद कहा जाता है।**

## पोस्टपार्टम डिप्रेशन के लक्षण

एक महिला जिसको पोस्टपार्टम अवसाद है, उसमें निम्नलिखित लक्षणों में से कोई भी लक्षण हो सकते हैं-

- टीयर फुलनेस निराश लगना और रोना आना।
- कभी-कभी बच्चे के सुरक्षा को ले के सनकी, मजबूर या बेचैन होना।
- कभी बच्चे को संभालने की जिम्मेदारी को ले के खुद को सक्षम ना समझना।
- खुद को निकम्मा, बेकार या दोषी समझना।
- अतिसंवेदनशिल होना या दबाव महसूस होना।
- सभी गतिविधियों में से रुचि चली जाना या किसी बात पर आनंद होना एक मां होने पर भी आनंद ना होना।
- भूख में परिवर्तन (या तो ज्यादा खाना या आहार में कमी होना)।
- नींद में समस्या (नीद ना लगना, या जल्दी जाग जाना)।
- उत्तेजित दिखना या अत्यंत धीमा होना।
- सामान्य से बहुत थकान होना, जो एक बच्चे में सामान्य है।

## पोस्टपार्टम डिप्रेशन से बचाव

यदि आप गर्भवती हैं, तो आपके जीवन शैली में मातृत्व के बाद होने वाले बदलावों की पहले ही तैयारी करके खुद को पोस्टपार्टम अवसाद के जोखिम से बचाने मे सक्षम किया जा सकता है। आप दूसरी माताओ या डॉक्टरों से बात करके नवजात शिशु की देखभाल के बारे मे पूछ सकती हैं और इसमें कोई संकोच की बात नहीं। अगर आपको नवजात शिशु और आप में योग्य तालमेल निर्माण होने में समय लगता है तो आपको अपने साथी या डॉक्टर, जिनको आपकी परवाह है, उनसे मदद लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। अक्सर, जिनमें पोस्टपार्टम अवसाद का एक इतिहास है उनके लिए अवसाद के एण्टीडिप्रेसेंट उपचार के बिना मुकाबला करना मुश्किल होता है। इसलिए प्रसूति के तुरंत बाद डॉक्टर एण्टीडिप्रेसेंट दवा देना शुरू कर सकते हैं। इसके बारे में आपको पहले ही डाक्टर से बात करना चाहिए। एक सामान्य नियम के रूप में डॉक्टरों को दवा की राशि गर्भावस्था के दौरान कम से कम निर्धारित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन कभी-कभी अवसाद का जोखिम भ्रूण के जोखिम से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप अपने डॉक्टर के साथ इन बातों पर चर्चा करें।

# चिकित्सा के नए आयाम

**एलोपैथी आज दुनिया-भर में सर्वाधिक प्रचलित चिकित्सा प्रणाली है। नित नई औषधि-तत्वों की खोज हो रही है। ज्यादातर दवाओं के गंभीर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। ऐसे में लोगों का रुझान सैकड़ो वर्षों से व्यवहृत और निरापद चिकित्सा पद्धतियों की तरफ देखा जा रहा है।**

## धब्बेदार अध :पतन

धब्बेदार अध :पतन एक कठिन रोग है और वह एक नंबर के हैं। एफडीए इलाज को मंजूरी दी गई है। कई तरीकों से काम धीमा करने के लिए, रोक या धब्बेदार अध :पतन के प्रभाव को रिवर्स, कोई भी एक निर्णायक इलाज का परिणाम विश्वसनीय होता है। अध : पतन की जगह लेने के लिए कई परीक्षण हो रहे हैं। इनका उपचार किसी भी हालत के लिए उपयुक्त हो सकता है, अपने नेत्र चिकित्सक के साथ चर्चा करके ठीक तरह से उपचार कर सकते हैं। इसकी स्थिति सक्रिय होती है। धब्बेदार अध : पतन का व्यवहार शुष्क रहता है। यह इंजेक्शन के माध्यम से प्राप्त होता है।

## लाभ

अध : पतन प्रोस्टाग्लैंडीन है, इससे रक्त प्रवाह, रेटिना के बीच रक्त प्रवाह के लिए प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार से कोशिकाओं की रक्षा में मदद करता है।

# चमत्कारिक पुष्प औषधि रेस्क्यू रेमेडी

## कैसे हुई खोज

रेस्क्यू रेमेडी चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक रहे हैं डॉ. एडवर्ड बेच जो लन्दन में प्रमुख एलोपैथिक डॉक्टर थे। इस चिकित्सा पद्धति से असन्तुष्ट होने से उन्होंने होम्योपैथिक डिग्री प्राप्त की और होम्योपैथिक पद्धति से चिकित्सा कार्य करना शुरू किया, लेकिन शीघ्र ही वे होम्योपैथिक पद्धति से भी असन्तोष का अनुभव करने लगे और किसी और भी सरल लेकिन सफल चिकित्सा पद्धति की खोज में लग गये। प्रकृति का अध्ययन करते हुए उनका ध्यान फूलों की तरफ गया। उन्होंने विचार किया कि स्वभावत: मनुष्य का मन फूलों की तरह कोमल होता है और मूलत: मनुष्य का अन्तर्मन सौम्य, सरल और भावुक होता है। इसका यह प्राकृतिक रूप मन के जिन छह शत्रुओं से बनता या बिगड़ता है, उनके नाम हैं काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और मत्सर। इन्हीं विकारों के प्रभाव से मनुष्य अपना प्राकृतिक स्वरूप याने स्वाभाविक अवस्था खो देता है। स्वाभाविक अवस्था का होना स्वास्थ्य है और इसे खो देना अस्वास्थ्य है, रोग है। मनुष्य की स्वाभाविक अवस्था फूलों के समान है और यदि यह अवस्था बिगड़ जावे तो

**चिकित्सा के क्षेत्र में जो विभिन्न पद्धतियां प्रचलित हैं, उनमें एक नाम बेच फ्लावर रेमेडीज का भी मौजूद है। इसे रेस्क्यू रेमेडी भी कहते हैं। इस पद्धति की दवाएं चोट लगने की स्थिति में कारगर होती हैं। इनका संक्षिप्त परिचय आइए, जानते हैं।**

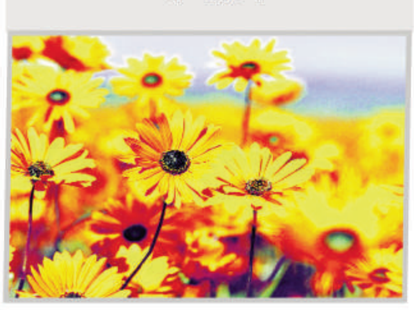

इसे सुधारने के लिये फूलों का प्रयोग किया जा सकता है।

सन 1930 से 1936 तक के 6 वर्ष डॉ. एडवर्ड बेच ने इसी खोज में गुजार दिये और हजारों फूलों पर रिसर्च करने के बाद 38 प्रकार के फूलों को मनुष्य के विकारों को दूर करने में सक्षम पाया और इन 38 प्रकार के फूलों से उन्होंने 38 दवाइयां बनाईं, जो इन्हीं डॉ. के नाम से बेच फ्लावर रेमेडीज के नाम से जानी जाने लगीं। इन 38 दवाओं में से 5 दवाइयां मिलाकर जो 39वीं दवा बनाई गई, उसका नाम रेस्क्यू रेमेडी रखा गया, क्योंकि यह दवा किसी भी खतरनाक और गम्भीर स्थिति से छुटकारा (रेस्क्यू) दिलाने वाली है। इन पांचों दवाइयों की संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है-

## राकरोज

यह दवा किसी भी दुर्घटना के कारण मन में जो डर या दहशत बैठ जाती है, उसके असर को दूर करती है। जब किसी भी दुर्घटना के कारण मन में इतना डर बैठ जाए कि हर समय वही घटना आंखों के सामने घूमती रहे तो यह दवा बहुत अच्छा काम करती है और मनुष्य शीघ्र ही सामान्य मानसिक अवस्था में आ जाता है।

## स्टार ऑफ बेथलहम

यह दवा मानसिक आघात के असर को दूर करती है। कभी-कभी किसी दुर्घटना में शरीर के भीतर अन्दरुनी चोट लगती है, जिसका तत्काल पता नहीं चलता, पर बाद में शरीर में कष्ट पैदा हो जाता है। कई बार ऐसी किसी घटना का मन पर ऐसा गहरा असर होता है कि कई वर्ष गुजर जाने पर भी उसका असर नहीं जा पाता। उस स्थिति में यह दवा पूर्ण सकारात्मक प्रभाव मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर करती है।

## क्लेमेटिस

जब किसी दुर्घटना के कारण कोई बेहोश हो जाए या अस्वाभाविक रूप से सो जाए, बेसुध हो जाए या कोई ख्याली पुलाव पकाता रहता हो तो यह दवा उसे सामान्य मानसिक अवस्था में ले आती है।

## इम्पेशेंस

किसी दुर्घटना के बाद की उत्तेजित अवस्था और चिड़चिड़ेपन की स्थिति इस दवा के सेवन से दूर हो जाती है।

# बाल सफेद हो रहे हों तो...

*एक चम्मच भर* आंवला चूर्ण दो घूंट पानी से सोते समय अंतिम वस्तु के रूप में लें। असमय बाल सफेद होने और चेहरे की कान्ति नष्ट होने पर जादू का सा असर करता है। (साथ ही स्वर को मधुर और शुद्ध बनाता है तथा गले की घर-घराहट भी इससे ठीक हो जाती है।

## एक और उपाय है

आंवला चूर्ण का लेप – सूखे आंवलों के चूर्ण को पानी के साथ लेई बनाकर इसका खोपड़ी पर लेप करने तथा पांच दस मिनट बाद केशों को जल से धो लेने से बाल सफेद होने और गिरने बन्द हो जाते है।

## आंवला जल से सिर धोएं

25 ग्राम सूखे आंवलों को मोटा कूटकर किए हुए टुकड़ों को 250 ग्राम पानी में रात को भिगो दें। प्रात: फूले हुए आंवलों को कड़े हाथ से मसलकर सारा जल पतले स्वच्छ कपड़े से छान लें। अब इस निथरे हुए जल को केशों की जड़ों में हल्के-हल्के अच्छी तरह मलिए और दस बीस मिनट बाद केशों को सादे पानी से धो डालिए। रूखे बालों को सप्ताह में एक बार और चिकने बालों को सप्ताह में दो बार धोना चाहिए।

# भारत/वेस्ट इंडीज दूसरे टेस्ट: वेस्टइंडीज के खिलाफ सूपड़ा साफ करने से भारत 58 रन दूर

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में खेले जा रहे दूसरे और अंतिम टेस्ट के चौथे दिन भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी में 63/1 रन बनाए हैं और अब जीत से सिर्फ 58 रन दूर है। केएल राहुल 25* और साई सुदर्शन 30* रन बनाकर नाबाद हैं। वेस्ट इंडीज ने भारत को जीत के लिए 121 रन का टारगेट दिया है।

भारत ने अपनी पहली पारी 518/5 घोषित की थी और वेस्ट इंडीज ने पहली पारी में 248 रन बनाए। इसके बाद भारत ने फॉलो-ऑन देते हुए वेस्ट इंडीज को दूसरी पारी में बल्लेबाजी के लिए भेजा। वेस्ट इंडीज ने दूसरी पारी में 390 रन बनाए, जिसमें जॉन कैम्पबेल ने 115 और शाई होप ने 103 रन बनाकर शानदार प्रदर्शन किया।

जॉन कैम्पबेल और शाई होप ने तीसरे विकेट के लिए 177 रनों की साझेदारी कर भारत की जीत को चुनौती दी। कैम्पबेल का यह टेस्ट करियर का पहला शतक था। शाई होप ने आठ साल बाद टेस्ट क्रिकेट में शतक लगाया।

भारतीय गेंदबाजों में कुलदीप यादव ने 5 विकेट, जसप्रीत बुमराह ने 3 और मोहम्मद सिराज ने 2 विकेट लिए। रनचेज़ में भारतीय टीम की शुरुआत यशस्वी जायसवाल (8 रन) के जल्दी आउट होने से थोड़ी धीमी रही, लेकिन केएल राहुल और साई सुदर्शन ने नाबाद अर्धशतकीय साझेदारी कर भारत को जीत के करीब पहुंचा दिया।

भारत के लिए कुलदीप यादव ने 5 विकेट लिए। रवींद्र जडेजा को तीन विकेट मिले। मोहम्मद सिराज और जसप्रीत बुमराह ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। उल्लेखनीय है कि भारत ने पहली पारी में यशस्वी जयसवाल (175) और कप्तान शुभमन गिल (नाबाद 129) की शतकीय पारियों के दम पर पांच विकेट पर 518 के स्कोर पर पारी घोषित कर दी थी।

### भारत की पहली पारी: जायसवाल और शुभमन का कमाल

पहले दिन भारत के बल्लेबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। सलामी जोड़ी यशस्वी जायसवाल (175) और केएल राहुल (36) ने ठोस शुरुआत दी। इसके बाद साई सुदर्शन (87) ने जायसवाल के साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 193 रनों की साझेदारी की।

जायसवाल का शतक 145 गेंदों में आया, जबकि शुभमन गिल ने 196 गेंदों पर नाबाद 129 रन की पारी खेलते हुए टीम को विशाल स्कोर तक पहुंचाया।

नीतीश रेड्डी (43) और ध्रुव जुरेल (44) ने भी तेज पारी खेली। भारत ने 134.2 ओवर में 518 रन बनाकर पारी घोषित की।

### वेस्टइंडीज की पारी: फिरकी में फंसे बल्लेबाज

जवाब में वेस्टइंडीज की शुरुआत निराशाजनक रही। ओपनर जॉन कैम्पबेल (10) जल्दी आउट हुए। तेजनारायण चंद्रपॉल (34) और एलिक अथानाज (41) ने थोड़ी देर प्रतिरोध किया, लेकिन जडेजा ने दोनों को चलता किया।

कप्तान रोस्टन चेज़ बिना खाता खोले आउट हुए। दिन के अंत में शाई होप (31)* और टेविन इमलाच (14)* नाबाद रहे।

### भारत की नजर 10वीं सीरीज जीत पर

भारत ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पिछली 9 टेस्ट सीरीज में एक भी हार नहीं झेली है। 2002 के बाद से कैरेबियाई टीम भारत के खिलाफ कोई टेस्ट मैच नहीं जीत पाई है। दिल्ली के इस मैदान पर जडेजा का प्रदर्शन एक बार फिर चर्चा में है – याद दिला दें, 2023 में इसी पिच पर उन्होंने एक पारी में 7 विकेट (7/42) और पूरे मैच में 10 विकेट झटके थे।

# जिद ने दिलाया खिताब, कोको गॉफ ने पेगुला को हराकर जीता वुहान ओपन फाइनल

**स्पोर्ट्स डेस्क।** अमेरिकी स्टार टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ (Coco Gauff) ने रविवार को अपने हमवतन जेसिका पेगुला को 6-4, 7-5 से हराकर वुहान ओपन 2025 का खिताब अपने नाम किया। 21 वर्षीय गॉफ ने इस टूर्नामेंट में बिना एक भी सेट गंवाए खिताब जीता और ओपन एरा में ऐसी पहली खिलाड़ी बनीं, जिन्होंने अपने शुरुआती 9 हार्ड कोर्ट फाइनल लगातार जीते।

गॉफ ने मैच के बाद बताया कि उनकी 'जिद' ने उन्हें जीत दिलाई, 'मेरे कोच चाहते थे कि मैं यूएस ओपन के बाद आराम करूं, लेकिन मैं जिद्दी हूं... और मैंने उन्हें गलत साबित कर दिया!'

कोको ने कहा कि चीन आकर खेलने का उनका फैसला सही साबित हुआ, 'यह एशियन स्विंग शानदार रहा। बीजिंग में सेमीफाइनल तक पहुंची और अब यहां खिताब जीतना वाकई खास है।'

गॉफ और पेगुला कभी डबल्स पार्टनर रह चुकी हैं। इस ऑल-अमेरिकन फाइनल में गॉफ ने कई बार पिछड़ने के बावजूद वापसी की। उन्होंने लगातार 10 अंक जीतकर मुकाबले को अपने नाम किया। पेगुला ने भी गॉफ की तारीफ करते हुए कहा, 'कोको के साथ फाइनल खेलना शानदार अनुभव रहा। वह जबरदस्त फाइटर हैं।'

31 वर्षीय पेगुला ने हाल के हफ्तों में बीजिंग और वुहान दोनों जगह शानदार प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि एशियाई टूर की गर्मी और थकान के बावजूद यह उनका सबसे अच्छा फॉर्म रहा है।

गॉफ ने अब तक अपने करियर का तीसरा WTA 1000 खिताब जीता है और उनकी फॉर्म आने वाले सीज़न के लिए इंगित करती है कि वह अभी लंबी दौड़ में हैं।

# लगातार दूसरी हार से निराश हरमनप्रीत बोली, हम वापसी करेंगे

**विशाखापत्तनम (एजेंसी)।** भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विश्वकप मैच में 300 से अधिक रन बनाने के बाद भी मिली हार पर निराशा जताई है। हरमनप्रीत ने साथ ही कहा कि केवल दो मैचों में मिली हार से विश्वकप अभियान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इन दोनो ही मैचों में टीम का प्रदर्शन अच्छा रहा हालांकि उसे जीत नहीं मिल पायी। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में भारतीय टीम ने 330 रनों का विशाल स्कोर बनाया था पर फिर भी वह उसका बचाव नहीं कर पायी। इस मैच में भारतीय टीम को 3 विकेट से हार का सामना करना पड़ा। हरमनप्रीत ने कहा कि दो मैचों की विफलता से कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है और टीम एक बार फिर जीत के साथ वापसी करेगी। हरमनप्रीत कौर ने कहा, हमारी शुरुआत जिस तरह की हुई थी, उससे हम 30 से 40 रन और बना सकते थे पर अंतिम 6 से 7 ओवरों में हमने लगातार विकेट गंवा दिये। बल्लेबाजी के लिए अच्छे विकेट का लाभ नहीं उठा पाने के कारण ऐसा हुआ। सलामी बल्लेबाजों ने काफी अच्छी शुरुआत दी थी पर बीच के ओवरों में हम उसका ठीक से इस्तेमाल नहीं कर पाये हालांकि निचले क्रम का प्रदर्शन अच्छा रहा। हरमनप्रीत ने कहा, अगले कुछ मैच बहुत अहम हैं और इस मैच से कई सकारात्मक बातें सामने आई हैं। हम बैठकर उस पर बात करेंगे। इस संयोजन से हमें पहले भी सफलता मिली है। वहीं भारतीय टीम को पिछले मैच में दक्षिण अफ्रीका के हाथों 3 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था। उस मैच भी भारतीय टीम जीत के करीब पहुंचकर भी हार गयी थी। दक्षिण अफ्रीकी टीम ने शुरुआती विकेट काफी कम रनों पर गंवा दिये थे पर उसके बाद निचले क्रम ने उसे लक्ष्य तक पहुंचा दिया था।

# मोहम्मद सिराज 2025 में टेस्ट क्रिकेट के बादशाह बने, ब्लेसिंग मुजरबानी को पछाड़ा

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए 2025 में टेस्ट मैचों में सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज का खिताब अपने नाम कर लिया। उन्होंने यह उपलब्धि वेस्टइंडीज के खिलाफ दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में चल रहे दो मैचों की टेस्ट सीरीज के दूसरे मैच के चौथे दिन हासिल की, जब उन्होंने शाई होप (103 रन) को आउट किया।

सिराज ने इस साल अब तक आठ टेस्ट मैचों में 37 विकेट झटके हैं। उन्होंने 1,575 गेंदें (262.3 ओवर) फेंकीं, जिनमें 39 मेडन ओवर शामिल रहे। उनका गेंदबाजी औसत 26.91, इकॉनमी रेट 3.79 और स्ट्राइक रेट 42.56 रहा। सिराज का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 70 रन देकर 6 विकेट का है। उन्होंने दो बार चार विकेट और दो बार पाँच विकेट हासिल किए हैं।

दूसरी ओर, जिम्बाब्वे के तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजरबानी ने नौ मैचों में 36 विकेट लिए हैं। उन्होंने 1,660 गेंदें (276.4 ओवर) फेंकीं और 28.63 की औसत से विकेट झटके। उनका इकॉनमी रेट 3.72 और स्ट्राइक रेट 46.11 रहा, जबकि सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 58 रन देकर 7 विकेट का था।

वेस्टइंडीज़ के खिलाफ दूसरे टेस्ट के चौथे दिन, मेहमान टीम ने 252/3 के स्कोर से दूसरे सत्र की शुरुआत की थी। शाई होप ने सिराज की गेंद पर चौका लगाकर अपना शतक पूरा किया, लेकिन जल्द ही 103 रन पर आउट हो गए। इसके बाद कुलदीप यादव ने एक ही ओवर में दो विकेट झटके रोस्टन चेज (40) और खैरी पियरे (0)।

विंडीज की टीम 300 रन तक पहुंची, लेकिन जल्द ही वारिकन (3) और फिलिप्स (2) भी आउट हो गए। दिन के अंत में मेहमान टीम 93 ओवर में 311/9 पर संघर्ष कर रही थी, जबकि जस्टिन ग्रीव्स (5*) और जोमेल वारिकन (0*) क्रीज पर टिके रहे। सिराज के शानदार प्रदर्शन ने न केवल भारत को मज़बूत स्थिति में ला दिया है, बल्कि उन्हें 2025 का टेस्ट विकेट किंग भी बना दिया है।

# जोशना चिनप्पा ने जापान ओपन का खिताब जीता

नई दिल्ली। भारत की चोटी की स्क्वाश खिलाड़ी जोशना चिनप्पा ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए सोमवार को योकोहामा में जापान ओपन फाइनल में मिस्र की हया अली को चार गेम में हराकर अपना 11वां पीएसए टूर खिताब जीता। विश्व की पूर्व नंबर 10 भारतीय महिला खिलाड़ी ने 15,000 अमेरिकी डॉलर इनामी चैलेंजर प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में तीसरी वरीयता प्राप्त मिस्र की खिलाड़ी को 38 मिनट में 11-5, 11-9, 6-11, 11-8 से हराया। इससे पहले विश्व रैंकिंग में 117वें स्थान पर काबिज चिनप्पा ने सेमीफाइनल में मिस्र की चौथी वरीयता प्राप्त राणा इस्माइल को 11-7, 11-1, 11-5 से हराया था। इस बीच मौजूदा पुरुष राष्ट्रीय चैंपियन और दुनिया के 29वें नंबर के खिलाड़ी अभय सिंह रविवार को रेडवुड सिटी (अमेरिका) में चल रहे 130,500 डॉलर इनामी पीएसए गोल्ड इवेंट सिलिकॉन वैली ओपन के राउंड ऑफ 16 के मैच में दुनिया के नौवें नंबर के खिलाड़ी और पांचवीं वरीयता प्राप्त फ्रांस के विक्टर क्रूइन से 4-11, 2-11, 1-11 से हार गए।

# पाक गेंदबाज इहसानुल्लाह का दावा, अभिषेक को 3 से 6 गेंदों में ही आउट कर दूंगा

लाहौर। एशिया कप क्रिकेट में अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से विरोधी टीम के गेंदबाजों की जमकर पिटाई करने वाले भारतीय क्रिकेट टीम के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को पाकिस्तान के एक गेंदबाज ने चुनौती दी है। पाक गेंदबाज इहसानुल्लाह का एक वीडियो आया है। इसमें इस गेंदबाज ने कहा है कि अगर उसे अवसर मिले तो वह 3 से 6 गेंदों में ही अभिषेक को आउट कर सकता है। उसने इसके लिए अपनी योजना भी बतायी है। इहसानुल्लाह को एशिया कप में पाकिस्तान की टीम में जगह नहीं मिली थी। इस गेंदबाज ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में प्रवेश किया है। इस गेंदबाज ने पाक के लिए एक एकदिवसीय और 4 टी20 मुकाबले खेले हैं। वहीं दूसरी ओर अभिषेक ने एशिया कप के सात मैचों में करीब 200 के करीब स्ट्राइक रेट से 314 रन बनाए हैं। उनके नाम सबसे ज्यादा छक्के का रिकार्ड भी है। वहीं पाक सुपर लीग में 152.65 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंद फेंकने के लिए मशहूर हुए इहसानुल्लाह के अनुसार वह अभिषेक का विकेट ले सकते हैं। वायरल वीडियो में इहसानुल्लाह कहते नजर आ रहे हैं, 'अगर मुझे भारत के खिलाफ खेलने का मौका मिला तो मैं अभिषेक का विकेट 3 से 6 गेंदों के बीच ले लूंगा।' साथ ही कहा, 'मेरी 140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार उसे 160 जैसी लगेगी। वह उनकी तेजी का अंदाजा नहीं लगा पाएगा। मैं बाएं हाथ के बल्लेबाज़ों को इनस्विंगर करता हूं, और उसे ऐसी गेंदों से परेशानी होती है। इसीलिए मैं ऐसा कह रहा हूं। मैं बाएं हाथ के बल्लेबाजों के दाएं कंधे पर अपनी बाउंसर फेंकता हूं। जिससे खेलना कठिन हो जाता है।' भारत और पाकिस्तान की टीमों के बीच अगला मुकाबला टी20 विश्वकप 2026 में खेला जाएगा, अब देखना होगा कि इमसें इहसानुल्लाह पाक टीम में जगह मिलती है या नहीं।

# हरभजन सिंह को उम्मीद, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विराट कोहली कम से कम इतने शतक लगाएंगे

**मुंबई (एजेंसी)।** पूर्व भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह ने स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली की ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए वनडे टीम में वापसी पर खुशी जताई और उम्मीद जताई कि 19 अक्टूबर से शुरू होने वाले तीन मैचों के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान वह कम से कम दो शतक जड़ेंगे। विराट रोहित शर्मा के साथ ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घर से बाहर होने वाली तीन वनडे मैचों की सीरीज के लिए भारतीय टीम में अपनी बहुप्रतीक्षित वापसी करेंगे।

टी20 और टेस्ट मैचों से पहले ही संन्यास ले चुके विराट कोहली की वनडे क्रिकेट में वापसी किसी उत्सव से कम नहीं लग रही है, खासकर ऑस्ट्रेलिया में, जहां उनका रिकॉर्ड शानदार रहा है। शुभमन गिल के नए वनडे कप्तान बनने और अभिषेक शर्मा, प्रभसिमरन सिंह और तिलक वर्मा जैसी कई नई प्रतिभाओं के साथ उन्हें 2027 आईसीसी क्रिकेट विश्व कप की दौड़ में बने रहने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा, क्योंकि टूर्नामेंट से पहले उनकी उम्र क्रमशः 39 और 40 वर्ष होगी।

हरभजन ने कहा कि विराट उन खिलाड़ियों में से एक हैं जो बड़े मौकों पर शानदार प्रदर्शन करते हैं और यही बात उन्हें दूसरों से अलग बनाती है। उन्होंने कहा, 'वह बड़े मौकों और दबाव वाले मैचों का इंतजार करता है और तभी वह दिखाता है कि वह चैंपियन क्यों है। जब आप सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तभी आप सम्मान अर्जित करते हैं और उसने यह सम्मान अर्जित किया है, खासकर ऑस्ट्रेलिया में शतक लगाने और टीम की कप्तानी की जिम्मेदारी संभालने के बाद। यही वो चुनौतियां हैं जिनका वह बेसब्री से इंतजार करता है। ऑस्ट्रेलिया उसका पसंदीदा शिकारगाह है और अब वह आईपीएल के बाद वापसी कर रहा है। मैं उसे उन तीन वनडे मैचों में बल्लेबाजी करते देखने के लिए उत्सुक हूं और उम्मीद है कि उन तीन में से वह भारत के लिए कम से कम दो शतक लगाएगा।'

हरभजन ने विराट को फिटनेस गुरु भी कहा और आग्रह किया कि इस स्टार बल्लेबाज की फिटनेस को लेकर कोई सवाल या चिंता न उठाई जाए। उन्होंने आगे कहा, 'वह फिट हैं, शायद उनके साथ खेलने वाले कई खिलाड़ियों से ज़्यादा फिट। आज के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वह यकीनन सबसे फिट खिलाड़ी हैं। अब मैं विराट को फिर से खेलते हुए देखने के लिए उत्सुक हूं। प्रशंसकों ने उन्हें देखना मिस किया है, और निजी तौर पर मैं उन्हें कुछ और समय तक वनडे इंटरनेशनल फॉर्मेट में खेलते देखना पसंद करूंगा क्योंकि उनमें अभी भी बहुत कुछ है। जब उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लिया, तो मुझे सचमुच लगा कि उनमें अभी भी 4-5 साल बाकी हैं, न सिर्फ खेलने के लिए बल्कि दबदबा बनाने के लिए भी, क्योंकि वह उस तरह के बल्लेबाज हैं।'

इस स्पिनर ने विश्वास जताया कि विराट ऑस्ट्रेलिया में एक बार फिर अपनी ÷दमदार÷ दिखाएंगे। उन्होंने कहा, 'हमने उन्हें पहले भी उन परिस्थितियों में ढेरों रन बनाते देखा है, और मुझे विश्वास है कि वह फिर से ऐसा करेंगे। रोहित के लिए भी यही बात लागू होती है, मैं इन दोनों दिग्गजों को भारत के लिए बड़े स्कोर बनाते और टीम को मैच जिताने में मदद करते देखने के लिए उत्सुक हूं।'

### विराट का रिकॉर्ड

विराट वनडे में भारत के दूसरे सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं जिन्होंने 302 मैचों और 290 पारियों में 57.88 की औसत और 93 से ज़्यादा के स्ट्राइक रेट से 14,181 रन बनाए हैं, जिसमें 51 शतक और 74 अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 183 है। इस साल सात वनडे मैचों में, इस सुपरस्टार ने सात पारियों में 45.83 की औसत से 275 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और दो अर्द्धशतक शामिल हैं और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 100* है।

विराट का ऑस्ट्रेलियाई खेल परिस्थितियों से भी पुराना नाता है। उन्होंने 29 वनडे मैचों में 51.03 की औसत और 89 से ज़्यादा के स्ट्राइक रेट से 1,327 रन बनाए हैं, जिसमें 29 पारियों में 5 शतक और 6 अर्द्धशतक शामिल हैं और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 133* है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उनकी आखिरी पांच पारियां 54, 56, 85, 54 और 84 हैं। ऑस्ट्रेलिया में उनकी आखिरी पांच पारियां 104, 46, 21, 89 और 63 हैं।

# डेनमार्क ओपन में लक्ष्य सेन, चिराग-सात्विक की जोड़ी करेगी भारतीय चुनौती की अगुवाई

नई दिल्ली। लक्ष्य सेन और देश की शीर्ष पुरुष युगल जोड़ी चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी मंगलवार से शुरू हो रहे डेनमार्क ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारतीय चुनौती का नेतृत्व करेंगे। लक्ष्य सेन ने पिछले साल पेरिस 2024 में सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। उसके बाद से वह सीजन अब तक 10 बार पहले दौर से बाहर हो चुके हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पिछले महीने हांगकांग ओपन में रहा, जहां वे उपविजेता रहे। पुरुष एकल वर्ग में सेन के साथ आयुष शेट्टी भी होंगे। इस साल की शुरुआत में आयुष शेट्टी ने यूएस ओपन 2025 में पुरुष एकल स्पर्धा का खिताब जीता था। पुरुष युगल ड्रॉ में छठी वरीयता प्राप्त चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी पिछले महीने हांगकांग ओपन और चाइना मास्टर्स में लगातार उपविजेता रहने के बाद अपने हालिया प्रदर्शन को और बेहतर करने के लिए उत्सुक होंगे। साई प्रतीक के और पृथ्वी कृष्णमूर्ति रॉय ड्रॉ में शामिल अन्य भारतीय पुरुष युगल जोड़ी हैं। अनमोल खरब महिला एकल वर्ग में भारत की एकमात्र खिलाड़ी हैं और पिछले हफ्ते आकर्टिक ओपन सुपर 500 टूर्नामेंट के सेमीफाइनल तक पहुंचने के बाद उनका आत्मविश्वास बढ़ा हुआ होगा। मिश्रित युगल में भारत की चुनौती का नेतृत्व ओलंपियन तनिषा क्रैस्टो और ध्रुव कपिला करेंगे। महिला युगल में भारत के लिए कविप्रिया सेल्वम-सिमरन सिंघी और रुतपर्णा पांडा-श्वेतापर्णा पांडा की जोड़ी मैदान में उतरेगी।

# इसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है, अपने पहले टेस्ट शतक के बाद बोले कैंपबेल

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज के सलामी बल्लेबाज जॉन कैंपबेल सोमवार को यहां अपना पहला टेस्ट शतक लगाने के बाद भावुक हो गए और कहा कि समझदारी से शॉट चयन करना उनके लिए कारगर रहा। फॉलोऑन खेलने के बाद कैंपबेल (155 रन, 199 गेंद में) और शाई होप (103 रन, 214 गेंद में) ने तीसरे विकेट के लिए 177 रन की साझेदारी की जिससे वेस्टइंडीज ने शानदार वापसी करते हुए मैच को पांचवें दिन तक खिंचने में सफल रहे। कैंपबेल ने कहा, 'इस पारी में मेरा शॉट चयन काफी सधा हुआ था। मुझे स्वीप खेलने में हमेशा से मजा आता है। शुक्र है, यह मेरे लिए कारगर रहा।' वेस्टइंडीज ने दूसरी पारी में 390 रन बनाये और भारत को 121 रनों का लक्ष्य दिया। स्टंप्स के समय भारत 2-0 की क्लीन स्वीप से 58 रन दूर था। कैम्पबेल इस तरह 23 साल बाद भारत में टेस्ट शतक बनाने वाले वेस्टइंडीज के पहले सलामी बल्लेबाज बन गये। उनसे पहले वेवेल हाइंड्स ने 2002 में ईडन गार्डन्स में शतक बनाया था। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने रविंद्र जडेजा की गेंद पर लांग ऑन पर छक्का लगाकर अपना शतक पूरा किया। उन्होंने छक्का लगाकर शतक पूरा करने के बारे में पूछ जाने पर कहा, 'इस गेंद से पहले मैंने देखा कि जडेजा मिड-ऑन के क्षेत्ररक्षक को करीब बुला रहे है। ऐसे में मैंने क्षेत्ररक्षक के ऊपर से शॉट खेलने का मन बनाया।' उन्होंने कहा, 'मैं दूसरी पारी में टीम के लिए योगदान देकर खुश हूं।'

# पाकिस्तान की हॉकी खिलाड़ियों को सलाह, भारतीय खिलाड़ियों के साथ टकराव से बचें

लाहौर। पाकिस्तान हॉकी महासंघ (PHF) ने अपनी राष्ट्रीय टीम के खिलाड़ियों को सलाह दी है कि वे मैदान पर भारतीय खिलाड़ियों के साथ किसी भी तरह के टकराव से बचें और मंगलवार को मलेशिया के जोहर बाहरू में सुल्तान जोहोर कप मैच के दौरान सिर्फ अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करें। पहलगाम में आतंकी हमले के मद्देनजर भारतीय क्रिकेट टीम ने हाल ही में संपन्न एशिया कप के मैचों के दौरान पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाया था, जिसमें फाइनल भी शामिल था। इससे विवाद पैदा हो गया था और पाकिस्तान ने एशियाई क्रिकेट परिषद और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) में विरोध दर्ज कराया था। पूरी संभावना है कि भारतीय जूनियर हॉकी टीम पाकिस्तान के खिलाफ मंगलवार को होने वाले मैच में अपनी क्रिकेट टीम की तरह ही रवैया अपनाएगी। क्लास्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि खिलाड़ियों को भारतीय टीम की हाथ न मिलाने की नीति के लिए मानसिक रूप से तैयार रहने को कहा गया है। उन्होंने कहा, 'खिलाड़ियों से कहा गया है कि अगर भारतीय खिलाड़ी मैच से पहले या बाद में हाथ नहीं मिलाते हैं तो उन्हें अनदेखा कर देना चाहिए और आगे बढ़ जाना चाहिए। उन्हें खेल के दौरान किसी भी तरह के भावनात्मक टकराव से बचने के लिए भी कहा गया है।' पाकिस्तान ने अगस्त में बिहार के राजगीर में आयोजित पुरुष एशिया कप के लिए अपनी टीम भारत नहीं भेजी थी। अधिकारी ने कहा कि उन्होंने खिलाड़ियों से कहा है कि वे सिर्फ अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करें।

# विराट के बाद बाबर? टेस्ट क्रिकेट से बाहर होने की कगार पर पाकिस्तानी स्टार, पूर्व कप्तान ने उठाए सवाल

**लाहौर (एजेंसी)।** पाकिस्तान क्रिकेट टीम के स्टार बल्लेबाज़ बाबर आज़म एक बार फिर आलोचनाओं के घेरे में हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट में 43 गेंदों पर सिर्फ 28 रन बनाने के बाद पूर्व कप्तान पर सवाल उठने लगे हैं। तीन साल से घरेलू मैदान पर अर्धशतक न बनाने वाले बाबर की फॉर्म को लेकर अब यह चर्चा तेज है कि क्या वह भी विराट कोहली की तरह टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कहने की राह पर हैं।

### सलमान बट का तंज- 'बाबर घरेलू क्रिकेट से ऊपर नहीं हैं'

पूर्व पाकिस्तानी कप्तान सलमान बट ने अपने यूट्यूब चैनल पर बाबर आज़म की आलोचना करते हुए कहा कि खराब फॉर्म के बावजूद उन्होंने घरेलू लाल गेंद क्रिकेट खेलने से परहेज़ किया, जो उनकी गिरती फॉर्म की बड़ी वजह है। बट ने कहा, 'बाबर प्रथम श्रेणी मैच भी नहीं खेलना चाहता। यह बेरुखी साफ दिखाई दी। जो खिलाड़ी खेले, उन्होंने रन बनाए तो बाबर क्यों नहीं खेला? पहले ओवर में ही वह बहुत कमजोर लग रहे थे। हां, वह बड़ा खिलाड़ी है, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आपको घरेलू क्रिकेट खेलना ही होगा। आप इससे ऊपर नहीं हैं।'

### 34 महीने से अर्धशतक का सूखा

बाबर आज़म का आखिरी टेस्ट शतक और अर्धशतक 2022 में आया था। तब से अब तक, उन्होंने 2024 में सिर्फ एक और 2025 में दो अर्धशतक लगाए हैं। लगातार नाकामी के चलते उनकी टीम में जगह पर भी सवाल उठ रहे हैं।

### कोहली से तुलना- क्या बाबर भी वही रास्ता अपनाएंगे?

सलमान बट की टिप्पणी के बाद कई फैंस और विश्लेषक बाबर की तुलना विराट कोहली से करने लगे हैं। कोहली ने ऑस्ट्रेलिया में लगातार असफलता के बाद जनवरी 2025 में टेस्ट क्रिकेट से अचानक संन्यास लेकर सबको चौंका दिया था। दिलचस्प बात यह है कि कोहली ने अपने रिटायरमेंट से ठीक पहले दिल्ली के लिए एक घरेलू मैच खेला था जो बाबर नहीं कर रहे।

### क्या बाबर का टेस्ट करियर भी ढलान पर है?

बाबर की फॉर्म और रवैये पर उठ रहे सवालों ने यह चर्चा तेज़ कर दी है कि क्या पाकिस्तान चयन समिति जल्द ही उन्हें टेस्ट टीम से बाहर कर सकती है। उनके प्रदर्शन में लगातार गिरावट और घरेलू क्रिकेट से दूरी यह संकेत देती है कि बाबर का टेस्ट करियर अब निर्णायक मोड़ पर है।

## मुंबई के कुर्ला पश्चिम इलाके में लगी भीषण आग, कई दुकानें जलकर हुईं खाक

मुंबई(एजेंसी)। मुंबई के कुर्ला पश्चिम इलाके में रविवार और सोमवार की दरमियानी रात भीषण आग लगने से हड़कंप मच गया। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है, लेकिन शॉर्ट सर्किट की आशंका जताई जा रही है। इससे ठीक एक दिन पहले यानी रविवार को भी मुंबई के खारघर में आग लगने की घटना सामने आ चुकी है। रविवार को नवी मुंबई के खारघर इलाके में एक रिहायशी इमारत में आग लग गई थी। रैपिड एक्शन फोर्स ने तीन महिलाओं समेत 7 लोगों को बचाया। 19 मंजिला इमारत, ट्राइसिटी सिम्फनी में रविवार दोपहर करीब 12:50 बजे आग लग गई। बचाव दल ने 17वीं और 18वीं मंजिल से लोगों को बाहर निकाला। अधिकारियों ने बताया कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी थी। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां उनका इलाज जारी है। मुंबई के कुर्ला पश्चिम इलाके में रविवार और सोमवार की दरमियानी रात भीषण आग ने देखते ही देखते कई दुकानों को अपनी चपेट में ले लिया, जिससे अफरातफरी का माहौल बन गया। सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, हालांकि लाखों रुपये का सामान जलकर खाक हो गया। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है और आसपास के इलाके में सुरक्षा के मद्देनजर बैरिकेडिंग की गई है। इस घटना का एक वीडियो सामने आया है जिसमें दिखाई दे रहा है कि दुकानों में भीषण आग लगी है और ऊंची-ऊंची लपटें उठ रही। आग लगते ही इलाके में हड़कंप मच गया और देखते ही देखते घटनास्थल पर लोगों की भीड़ लग गई।

## जयपुर-अजमेर हाईवे पर एंबुलेंस की ट्रक से टक्कर... दो लोगों की मौके पर मौत

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान की राजधानी जयपुर में जयपुर-अजमेर हाईवे पर तेज रफ्तार एंबुलेंस, सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। एंबुलेंस में सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हुई, जबकि 3 लोग घायल हैं। रोड पर पाम ऑयल गिरा हुआ था। इससे पहिया फिसलने के बाद एंबुलेंस अनियंत्रित हो गई थी। हादसा बगरू इलाके के छीतरोली स्टैंड के पास रात करीब ढाई बजे हुआ। पुलिस ने बताया कि छीतरोली स्टैंड पर पाम ऑयल का टैंकर खड़ा था। पीछे से आए डंपर ने एंबुलेंस को टक्कर मार दी। पाम ऑयल सड़क पर फैल गया। टक्कर में डंपर के आगे का हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। इसमें सवार सभी लोग सुरक्षित हैं। टक्कर के बाद टैंकर से पाम ऑयल का रिसाव होने लगा और वह हाईवे पर फैल गया। तभी किशनगढ़ की ओर से आ रही एम्बुलेंस पाम ऑयल पर आकर अनियंत्रित हो गई। हाईवे किनारे खड़े ट्रक में सामने से एंबुलेंस घुस गई। एंबुलेंस सतीश धामनी (31) चला रहा था। इसके अलावा एंबुलेंस में 4 लोग सवार थे। पुलिस ने बताया कि घायलों को बगरू सीएचसी ले गए थे। इसके बाद दो घायलों को अस्पताल भेजा गया। हादसे में किशनगढ़, अजमेर निवासी दिनेश कुमारी (55) और विक्की उर्फ वीरम सिंह (31) पुत्र गोविंद सिंह की मौत हो गई। एम्बुलेंस ड्राइवर सतीश धामनी, अमित वैष्णव (30), और बिट्ठदास (60) का एसएमएस हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है।

## नेहा सिंह राठौर को झटका, सुप्रीम कोर्ट ने कहा... मुकदमे का सामना करे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने पहलगाम आतंकी हमले के बारे में सोशल मीडिया पर पोस्ट को लेकर गायिका और कार्यकर्ता नेहा सिंह राठौर के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर विचार करने से इंकार कर उन्हें मुकदमे का सामना करने को कह दिया। शीर्ष अदालत ने दो टूक कहा कि वे मामले के गुण-दोष पर कोई राय व्यक्त नहीं कर रही है। जस्टिस जे के माहेश्वरी और जस्टिस विजय बिश्नोई की पीठ ने कहा कि इस समय वे विद्रोह के आरोप (भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने) के मुद्दे में हस्तक्षेप नहीं कर रही है। शीर्ष अदालत ने उन्हें आरोप तय करते समय ये मुद्दे उठाने की भी स्वतंत्रता दी। गायिका ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के 19 सितंबर के आदेश को चुनौती देकर शीर्ष अदालत का रुख किया था, जिसमें प्राथमिकी रद्द करने से इंकार किया था। प्राथमिकी में राठौर पर एक खास धार्मिक समुदाय को निशाना बनाने और देश की एकता को खतरे में डालने का आरोप लगा है। उन्होंने अप्रैल के आखिरी हफ्ते में थाने में अभय प्रताप सिंह नाम के एक व्यक्ति द्वारा अपने खिलाफ दर्ज कराई गई प्राथमिकी को चुनौती दी थी। सिंह ने राठौर पर धार्मिक आधार पर एक समुदाय को दूसरे के खिलाफ भड़काने की बार-बार कोशिश करने का आरोप लगाया था।

## जहरीले कफ सिरप मामले में श्रीसन फार्मा से जुड़े चेन्नई के 7 ठिकानों पर ईडी का छापा

चेन्नई (एजेंसी)। हाल ही में जहरीले कफ सिरप से करीब दो दर्जन बच्चों की जान चली गई। इन दवाओं को बनाने में नियमों का पालन नहीं हो रहा था। लेकिन कोई अफसर जांचने नहीं गया। बताया जा रहा है कि घोर लापरवाही के चलते सब कुछ कागजों पर ऑल इज वेल की कहानी चलती रही। कुछ इसी तरह की जानकारियां उस वक्त सामने आईं जब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत श्रीसन फार्मा और तमिलनाडु ड्रग नियंत्रण विभाग के शीर्ष अधिकारियों से जुड़े चेन्नई स्थित सात ठिकानों पर छापेमारी की। बता दें कि जो दवा जीवन बचाती है, उसने बच्चों को मौत दी। इस मामले ने देशभर में आक्रोश पैदा कर दिया है। वहीं, नियामक निगरानी और गुणवत्ता नियंत्रण में भी गंभीर खामियों को उजागर किया है। छापेमारी कोल्ड्रिफ कफ सिरप मामले के सिलसिले में की गई है, जिसके कारण मध्य प्रदेश में 20 से अधिक बच्चों की किडनी फेल होने से मौत हो गई थी। ईडी अधिकारियों ने बताया कि छापेमारी तमिलनाडु के वरिष्ठ ड्रग नियंत्रण अधिकारियों के आवासों और जहरीले सिरप की निर्माता कंपनी श्रीसन फार्मा से जुड़े परिसरों पर की गई। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने कंपनी और तमिलनाडु खाद्य एवं औषधि प्रशासन दोनों द्वारा कई उल्लंघन पाए। खराब बुनियादी ढांचे और बार-बार सुरक्षा उल्लंघनों के बावजूद, श्रीसन 2011 में लाइसेंस प्राप्त करने के बाद से बेरोकटोक काम करती रही। कोल्ड्रिफ सिरप में डाइएथिलीन ग्लाइकॉल नामक घातक मात्रा पाई गई है, जो आमतौर पर एंटीफ्रीज में इस्तेमाल होने वाला एक रसायन है।

# 'माँ, माटी, मानुष' का दावा झूठा! बांसुरी स्वराज बोलीं- ममता के कुशासन से बंगाल में माँ शर्मिंदा

**बेंगलुरु (एजेंसी)।** दुर्गापुर में द्वितीय वर्ष की मेडिकल छात्रा के साथ कथित सामूहिक बलात्कार मामले में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए, भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने सोमवार को कहा कि यह सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की रूढ़िवादी मानसिकता को दर्शाता है। बयान को असंवेदनशील बताते हुए, स्वराज ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि देवी दुर्गा की भूमि माने जाने वाले राज्य में महिलाएं असुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि माँ दुर्गा के बंगाल में महिलाएं असुरक्षित हैं। राज्य की महिला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बलात्कार पीड़िता को दोषी ठहराकर ऐसी असंवेदनशील टिप्पणी करती हैं। मेरा मानना है कि यह टीएमसी की रूढ़िवादी मानसिकता को दर्शाता है।

स्वराज ने बनर्जी से ओडिशा की रहने वाली पीड़िता को न्याय दिलाने और राज्य भर में महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल बनाने पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। उन्होंने आगे कहा, 'मैं ममता बनर्जी से कहना चाहूँगी कि वह न केवल राज्य की मुख्यमंत्री हैं, बल्कि गृह विभाग भी उनके पास है। इसका मतलब है कि आंतरिक सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी उनकी है। उन्हें ऐसा माहौल बनाना चाहिए जहाँ लड़कियाँ सुरक्षित महसूस करें और दिन हो या रात, आज़ादी से घूम सकें। मैं उनसे फिर से अनुरोध करना चाहूँगीः कृपया बलात्कार को सही न ठहराएँ। उस लड़की को न्याय दिलाने की दिशा में काम करें।'

स्वराज ने आगे कहा कि मैं ममता बनर्जी से पूछना चाहती हूँ, वे 'माँ, माटी, मानुष' के नारे लगाती हैं। लेकिन आपकी असंवेदनशीलता, कुशासन और प्रतिगामी मानसिकता के कारण आज बंगाल में 'माँ' शर्मिंदा है, 'माटी' लहूलुहान है और 'मानुष' बदहाल है। इस बीच, राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) की सदस्य अर्चना मजूमदार ने एनसीडब्ल्यू अध्यक्ष रेखा शर्मा के स्वतः संज्ञान लेने के निर्देश के बाद मामले की चल रही जाँच की समीक्षा के लिए दुर्गापुर का दौरा किया। उन्होंने पीड़िता के परिवार, छात्रों और स्थानीय अधिकारियों, जिनमें एसपी और ओसी भी शामिल हैं, से मुलाकात की।

उन्होंने एक समाचार एजेंसी को बताया, 'मेरी अध्यक्ष से बातचीत हुई। उन्होंने मुझे मामले का तुरंत स्वतः संज्ञान लेने, घटनास्थल पर पहुँचने और पीड़िता से मिलने के लिए कहा। मैंने अधिकारियों, छात्रों और पीड़िता के अभिभावकों से बात की। फिर मैंने पुलिस, एसपी और ओसी से बात की। हम अगले कार्यदिवस पर अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे।' उन्होंने आगे बताया कि पुलिस ने पाँच संदिग्धों की पहचान कर ली है, जिनमें से तीन को गिरफ्तार कर लिया गया है और उन्हें 10 दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस जल्द से जल्द आरोप पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया में है। मेडिकल नमूने राज्य फोरेंसिक प्रयोगशाला भेजे गए हैं, जिन्हें उन्होंने केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला (सीएफएसएल) भेजने की सिफ़ारिश की है।

## हत्या के मामले में जेल आते ही फूट-फूटकर रोई महामंडलेश्वर पूजा शकुन पांडेय

**अलीगढ़ (एजेंसी)।** बीते 26 सितंबर की रात को खेरेश्वर चौराहे पर हाथरस के सिकंदराराऊ क्षेत्र के गांव कचौरा निवासी टीवीएस शोरूम मालिक अभिषेक गुप्ता की बाइक सवार दो शूटरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसमें नामजद पूजा शकुन पांडेय को पुलिस ने राजस्थान के भरतपुर जिले से गिरफ्तार किया। दोपहर में उसे जेल में दाखिल कर दिया गया। अंदर वह परेशान नजर आई। अन्य महिलाओं ने उसे संभाला।

अभिषेक की हत्या के मामले में 50 हजार की इनामी महामंडलेश्वर पूजा शकुन पांडेय उर्फ अन्नपूर्णा भारती जेल में आते ही फूट-फूटकर रोई। अधिकारियों ने उसे जेल के नियम-कायदे बताए। उधर, पुलिस अब मामले में चार्जशीट व गैंगस्टर लगाने की तैयारी कर रही है। हालांकि उसने खाना आदि समय से खाया। करवटें बदलकर रात काटी। पूजा को संवेदनशील श्रेणी में रखा गया है। उससे मुलाकात के लिए 10 लोगों के नाम लिए हैं। उनसे सप्ताह में तीन दिन मुलाकात कराई जाएगी। इससे पहले जेल भेजे गए उसके पति अशोक कुमार पांडेय को भी संवेदनशील श्रेणी में ही रखा है। एएसपी मयंक पाठक के अनुसार मामले में जल्द ही चार्जशीट लगाई जाएगी। गैंगस्टर की कार्रवाई भी होगी। हत्या के बाद फरार हुई पूजा ने परिजनों से संपर्क नहीं किया। वह जहां भी गई, वहां उसे शरण नहीं मिली। लेकिन, कुछ लोगों ने उसका भगाने में सहयोग भी किया है। ऐसे लोग पुलिस के रडार पर आ गए हैं। वहीं दूसरी तरफ अभिषेक के भाई आशीष ने कहा कि पुलिस आरोपियों के खिलाफ एनएसए की कार्रवाई करे। साथ ही उनके घर की कुर्की हो। उन्होंने कहा कि जल्दबाजी में पुलिस ने पूजा को जेल भेज दिया। जबकि सही ढंग से उसे रिमांड पर लेकर पूछताछ होनी चाहिए थे। ताकि पूरे षड्यंत्र का खुलासा हो सके। परिजनों ने रविवार शाम को रोरावर थाने में इंस्पेक्टर से मुलाकात की।

## करोड़ों खर्च के बाद भी साफ नहीं हो सकी गोमत नदी!

**- 20 लाख लोगों को नदी से मिलता है 320 एमएलडी कच्चा पानी**

**लखनऊ (एजेंसी)।** लखनऊ में बहने वाली गोमती नदी शहर की जीवनरेखा है, लेकिन प्रदूषण के कारण इसकी स्थिति चिंताजनक हो गई है। करीब 20 लाख लोगों को 320 एमएलडी कच्चा पानी नदी से मिलता है। गोमती बैराज के पास पानी का स्तर बनाए रखने के लिए पानी का बहाव रोका जाता है। नदी में 39 नाले गिरते हैं, जिनमें से 13 नाले बिना ट्रीटमेंट या आंशिक ट्रीटमेंट के सीवेज सीधे नदी में डालते हैं, जिससे पानी काला और जहरीला हो गया है। 2010 से 2025 तक गोमती नदी को स्वच्छ बनाने के लिए करीब 2,500 करोड़ रुपये खर्च किए गए। 2011 में भरवारा और दौलतगंज में बड़े एसटीपी बनाए गए, लेकिन नालों पर पंप काम नहीं कर रहे हैं और सीवेज पंपिंग स्टेशन से सही तरीके से सीवेज एसटीपी तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसके कारण सीवेज अभी भी सीधे नदी में गिरता है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के प्रमुख प्रो. वेंकटेश दत्ता और गोमती टास्क फोर्स के मेजर केएस नागी ने नदी में गिरने वाले नालों का सर्वे किया। हैदर कैनाल, कुकरैल नाला और घसियारी मंडी नाले में कूड़ा-कचरा सीवेज सीधे नदी में पहुंच रहा है। नगर निगम भी नदी किनारे कूड़ा फेंकता रहा है, जिससे प्रदूषण और बढ़ा है। गोमती नदी की स्थिति सुधारने के लिए विभागों को अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए प्रभावी कार्यवाही करनी होगी। नालों और सीवेज प्रणाली की सही देखरेख, कूड़ा निस्तारण और जागरूकता अभियान के साथ-साथ पानी की गुणवत्ता पर कड़ी निगरानी जरूरी है, तभी गोमती को फिर से स्वच्छ और जीवनदायिनी बनाया जा सकेगा।

## असम में सरकारी नौकरी का रिकॉर्ड! 1 लाख का आंकड़ा पार, 2 लाख की ओर सरमा सरकार

**दिसपुर(एजेंसी)।** मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व में असम सरकार ने एक लाख से ज़्यादा उम्मीदवारों को लाभकारी रोज़गार प्रदान करके एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है, और अब दो लाख नियुक्तियों के विशाल लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ रही है। असम प्रदेश भाजपा ने एक बयान में कहा कि राज्य के महत्वाकांक्षी युवाओं में नई आशा का संचार करते हुए, सरकार अक्टूबर महीने में 35,000 उम्मीदवारों को रोज़गार देने के लिए तैयार है। असम पुलिस में 5,614 कांस्टेबल पदों के लिए बहुप्रतीक्षित परिणामों की घोषणा ने न केवल अनगिनत सपनों को साकार किया है, बल्कि पारदर्शिता, दक्षता और योग्यता के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित किया है।

बयान में कहा गया है कि स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत 3,698 तकनीकी और गैर-तकनीकी पदों के लिए परिणामों की घोषणा भी उतनी ही उल्लेखनीय है। जैसा कि मुख्यमंत्री ने अपने फेसबुक लाइव संबोधन में घोषणा की थी, एडीआर परीक्षा के अंतर्गत चतुर्थ श्रेणी पदों के परिणाम 15 अक्टूबर को घोषित किए जाएँगे, उसके बाद 17 अक्टूबर तक स्नातकोत्तर शिक्षक के परिणाम घोषित किए जाएँगे। असम राज्य भाजपा प्रवक्ता ज़फरीन मेहजबीन ने एक लाख सरकारी नौकरियाँ प्रदान करने के अपने वादे को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की गहरी सराहना और हार्दिक बधाई व्यक्त की - एक ऐसा वादा जिसे विपक्ष ने कभी अप्राप्य बताकर खारिज कर दिया था।

बयान में कहा गया है, 'आज यह उपलब्धि मुख्यमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व और दृढ़ कार्यान्वयन का अकाट्य प्रमाण है। नवंबर तक, 38,000 अतिरिक्त नियुक्तियाँ वितरित की जानी हैं, जो रोज़गार सृजन में निरंतर गति को दर्शाती हैं। साथ ही, मुख्यमंत्री के आत्मनिर्भर असम अभियान (CMAAA) के तहत, एक लाख और युवाओं - पुरुषों और महिलाओं दोनों - को उद्यमशीलता के उपक्रम शुरू करने के लिए 5 लाख रुपये मिलेंगे, जिससे पूरे राज्य में आत्मनिर्भरता की लहर दौड़ेगी। आवेदन प्रक्रिया पहले से ही चल रही है, और जिन लाभार्थियों ने पहली किस्त का विवेकपूर्ण उपयोग किया है, उन्हें सहायता की दूसरी किस्त मिलने की उम्मीद है।'

ज़फ़रीन मेहज़बीन ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में असम की भाजपा-नेतृत्व वाली सरकार ने सरकारी भर्ती को उद्यम-आधारित विकास के साथ सामंजस्य स्थापित करके रोज़गार नीति के पारंपरिक दायरे को पार कर लिया है। असम राज्य भाजपा ने बयान में कहा, 'योग्यता आधारित नियुक्तियों और उद्यमशीलता सशक्तिकरण पर यह दोहरा जोर समग्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की दिशा में एक आदर्श बदलाव का प्रतीक है।'

## पीआर 2477 ने गोल्डन पिलर्स को सम्मानित कर नए युग की शुरूआत की

एजेंसी

**इंदौर :** भारत की अग्रणी पीआर एजेंसी पीआर 24७7 ने आज अपने 'गोल्डन पिलर्स' यानी 10 वर्षों से अधिक समय से संगठन के साथ जुड़े समर्पित कर्मचारियों को विशेष सम्मान प्रदान कर एक ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनाया। यह समारोह 'पीआर 2477 2.0' के रूप में एक नए युग की शुरूआत का प्रतीक साबित हुआ। इस अवसर पर कंपनी ने पैन-इंडिया स्तर पर अपनी सेवाओं का विस्तार करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य घोषित किया है, जो रीजनल मीडिया नेटवर्क की ताकत को राष्ट्रीय पटल पर ले जाने की दिशा में एक ठोस कदम है। इस समारोह में गोल्डन पिलर्स उज्जैन सिंह चौहान, विकास राजोरा, परिणीता नागरकर खेले, संसृति मिश्रा, नेहा गौर, दीपक चड्ढा, मीना बिसेन और विनीत भट्ट को न केवल उनके दशकों लंबे योगदान के लिए सम्मानित किया गया,

बल्कि उन्हें नई जिम्मेदारियाँ भी सौंपी गईं। इस मौके पर फाउंडर डॉ. अतुल मलिकराम ने कहा, ये गोल्डन पिलर्स कंपनी के स्तंभ हैं, जिनकी निष्ठा और विशेषज्ञता ने पीआर 2477 को भारत की सबसे विश्वसनीय रीजनल पीआर एजेंसी के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने कहा, ये हमारे गोल्डन पिलर्स न केवल कर्मचारी हैं, बल्कि परिवार के वे सदस्य हैं जिन्होंने पिछले एक दशक से अधिक समय में हर उतार-चढ़ाव में साथ निभाया। उनका समर्पण ही हमें पीआर 24७7 2.0 की ओर ले जा रहा है, जहां हम डिजिटल और इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग को मजबूत कर पैन-इंडिया विस्तार करेंगे। यह सम्मान उनकी निष्ठा का प्रतीक है, जो हमें नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहयोगी रहेगा। कंपनी ने कोविड जैसी महामारी में स्टार्टअप्स को मुफ्त पीआर सपोर्ट देकर मानवता का परिचय दिया, जबकि मेटल, माइनिंग, और कंज्यूमर इंडस्ट्रीज के क्राइसिस को संभालकर अपनी विश्वसनीयता साबित की। इंदौर स्थित पीआर 2477 हमेशा से भारत के टियर-2 और टियर-3 शहरों की अनसुनी आवाजों को मुख्यधारा तक पहुंचाने का माध्यम रही है। यह एजेंसी 68 से अधिक शहरों में अपनी मजबूत उपस्थिति रखती है। 500+ रीजनल मीडिया कनेक्शन्स, 24७7 मीडिया मॉनिटरिंग और 75+ सदस्यीय टीम के साथ 200+ क्लाइंट्स के लिए क्राइसिस मैनेजमेंट, स्ट्रेटेजिक कम्युनिकेशन, डिजिटल मीडिया और ब्रांड बिल्डिंग का मजबूत सहारा बनी है।

## 10 दिन बाद सुबह पदयात्रा पर निकले संत प्रेमानंद महाराज... भक्तों की आंखों से आंसू छलक पड़े

**-राधे-राधे जयकारों से गूंज उठी वृंदावन की गली-गली**

**मथुरा (एजेंसी)।** वृंदावन में मशहूर संत प्रेमानंद महाराज 10 दिन बाद पदयात्रा पर निकले। महाराज की झलक पाकर भक्तों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े और हजारों की भीड़ जोर-जोर से राधे-राधे का जयकारा लगाने लगी। बात दें कि प्रेमानंद महाराज 2 अक्टूबर से पदयात्रा नहीं कर रहे थे। केली कुंज आश्रम ने इसके पीछे उनके स्वास्थ्य का हवाला दिया था। हालांकि, इस दौरान वे आश्रम में ही एकांतिक वार्ता (भक्तों से बातचीत) करते रहे।

दरअसल मथुरा-वृंदावन से संत प्रेमानंद जी महाराज के भक्तों के लिए रविवार की सुबह खुशखबरी लेकर आई। काफी दिन बाद प्रेमानंद महाराज ने अपनी पदयात्रा फिर शुरू की। सुबह करीब 3 बजे श्री राधे हित केलिकुंज आश्रम से बाहर निकलते ही उन्होंने परिक्रमा मार्ग की ओर प्रस्थान किया। इस दौरान उनके दर्शन के लिए भारी संख्या में भक्त उमड़ पड़े। परिक्रमा मार्ग राधे-राधे के जयकारों से गूंजने लगा। भक्तों का उत्साह देखकर प्रेमानंद महाराज कई स्थानों पर रुककर उनकी तरफ मुस्कुराते हुए दिखाई दिए। प्रेमानंद महाराज के स्वास्थ्य में सुधार को देखकर भक्तों ने भी राहत की सांस ली। उनकी एक झलक पाने को हजारों भक्त पहले से ही खड़े थे। महाराज को देखते ही भक्तों के चेहरे खिल उठे। भक्तों ने कहा, जब से हमने सुना था कि महाराज जी की तबीयत खराब है, हम बहुत चिंतित थे। लेकिन अब उन्हें स्वस्थ देखकर मन को सुकून मिला। वे हम सभी को आशीर्वाद देते हुए आगे बढ़ गए।

प्रेमानंद महाराज वृंदावन में श्रीकृष्ण शरणम् सोसाइटी से रमणरेती स्थित आश्रम हित राधा केली कुंज के लिए निकलते हैं। 2 किमी पैदल चलकर जाते हैं। उनके दर्शन के लिए रात को हजारों की संख्या में भक्त पहुंचते हैं।

# बिहार में मुस्लिम चुनाव में कर सकते हैं खेल, सभी राजनीतिक दलों की है नजर

**-11 सीटों पर 40 फीसदी मुस्लिम, 2020 में दिखाया था ट्रेलर, ओवैसी भी पीछे नहीं**

**पटना (एजेंसी)।** बिहार में विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी सरगर्मी बढ़ गई है। जाति और धर्म के आधार पर सीटों का विश्लेषण कर उसी के अनुरूप प्रत्याशियों का चयन किया जा रहा रहा है। एनडीए और महागठबंधन में सभी तरह के समीकरणों का ख्याल रखकर सीट बंटवारे पर मंथन चल रहा है। बिहार में लालू यादव ने मुस्लिम-यादव समीकरण का ईजाद कर आरजेडी की बादशाहत कायम की थी। बाद के सालों में उनके इस समीकरण की काट निकाली गई और आरजेडी सत?ता के अंदर-बाहर आती और जाती रही, लेकिन ज्यादातर समय एनडीए के हाथ में ही सत्ता की बागडोर रही। हालांकि, आरजेडी के लिए मुस्लिम-यादव फॉर्मूला आज भी उपयोगी और कारगर है, लेकिन 2020 के विधानसभा चुनाव में एक नए खिलाड़ी ने आरजेडी के इस फॉर्मूले में सेंध लगा दी और पांच सीटें जीत लीं। उनका नाम है असदुद्दीन ओवैसी। उनकी पार्टी एआईएमआईएम साल 2015 के चुनाव में बिहार की एंट्री की थी और अब खासकर सीमांचल क्षेत्र में अहम फैक?टर बन चुकी है। ओवैसी की पार्टी ने इसबार 243 सीटों में से 100 पर उम?मीदवार उतारने का मन बनाया है। राजनीतिक एक्सपर्ट्स का मानना है कि एआईएमआईएम सबसे ज्यादा आरजेडी को नुकसान पहुंचाएगी।

सीमांचल को मुस्लिम आबादी वाला क्षेत्र माना जाता है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से चार जिले कटिहार, किशनगंज, अररिया और पूर्णिया आते हैं। यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल आबादी के चलते लंबे समय से राजनीतिक दलों के लिए आकर्षण का केंद्र है। किशनगंज में ओवैसी ने इस फैक?टर को ध्यान में रखते हुए कहा था कि वे बिहार में कई साथियों से मिलने और नई मित्रता करने के लिए उत्सुक हैं। राज्य की जनता को एक नया विकल्प चाहिए और हम वही बनने की कोशिश कर रहे हैं।

बता दें एआईएमआईएम ने साल 2015 में पहली बार बिहार विधानसभा चुनाव लड़ा था। पार्टी ने सीमांचल की छह सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली थी। किशनगंज के कोचाधामन विधानसभा सीट से पार्टी के उम्मीदवार और पार्टी के मौजूदा प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान को करीब 37 हजार वोट मिले थे। यह कुल मतों का करीब 26 फीसदी था। साल 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में ओवैसी की पार्टी ने अपना अच्छा खासा प्रभाव छोड़ा था। बिहार में मुसलमानों की आबादी 17.7 फीसदी से ज्यादा है। राज्य की 47 विधानसभा सीटें ऐसी हैं, जहां मुस्लिम मतदाता निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। इनमें 11 सीटों पर मुस्लिम आबादी 40 फीसदी से ज्यादा, सात सीटों पर 30 फीसदी से ज्यादा और 29 सीटों पर 20 से 30 फीसदी के बीच है। इसमें से ज्यादातर सीटें सीमांचल में ही हैं। एआईएमआईएम के प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान का कहना है कि हम बिहार चुनाव में विकल्प पेश करने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी योजना 100 सीटों पर उम्मीदवार उतारने की है। हमने राजद प्रमुख लालू यादव और महागठबंधन के नेता तेजस्वी यादव को पत्र लिखकर महागठबंधन में एआईएमआईएम के लिए कुछ सीट की मांग की थी, लेकिन उन्होंने रुचि नहीं दिखाई। चुनाव में जनता इसका जवाब देगी।

बता दें साल 2020 के विधानसभा चुनाव में ओवैसी की पार्टी ने 20 सीटों पर उम्मीदवार उतारकर राजनीतिक ताकत का प्रदर्शन किया था। इस चुनाव में

एआईएमआईएम ने सीमांचल की पांच सीटों अमौर, बहादुरगंज, बायसी, कोचाधामन और जोकीहाट पर जीत हासिल की थी। विजयी उम्मीदवारों में अमौर से अख्तरुल ईमान, बहादुरगंज से मोहम्मद अंजार नइमी, बायसी से सैयद रुकनुद्दीन, कोचाधामन से इजहार असफी और जोकीहाट से शाहनवाज आलम शामिल थे। हालांकि, 2022 में पार्टी को बड़ा झटका तब लगा जब अख्तरुल ईमान को छोड़कर बाकी चारों विधायक राजद में शामिल हो गए। साल 2020 के चुनाव में पार्टी ने 16 मुस्लिम और चार गैर-मुस्लिम प्रत्याशियों को टिकट दिया था। इनमें से पांच मुस्लिम उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की थी। पार्टी के गैर-मुस्लिम उम्मीदवारों को सफलता नहीं मिली थी।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशन्स एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, निगर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातु, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह. 9334331934, 7903538992, 9570107019, RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902